गीताञ्जली धारा...22

सफलता - गीताञ्जली

(जैन एकता के प्रतीक विभिन्न धाराओं का संगम)

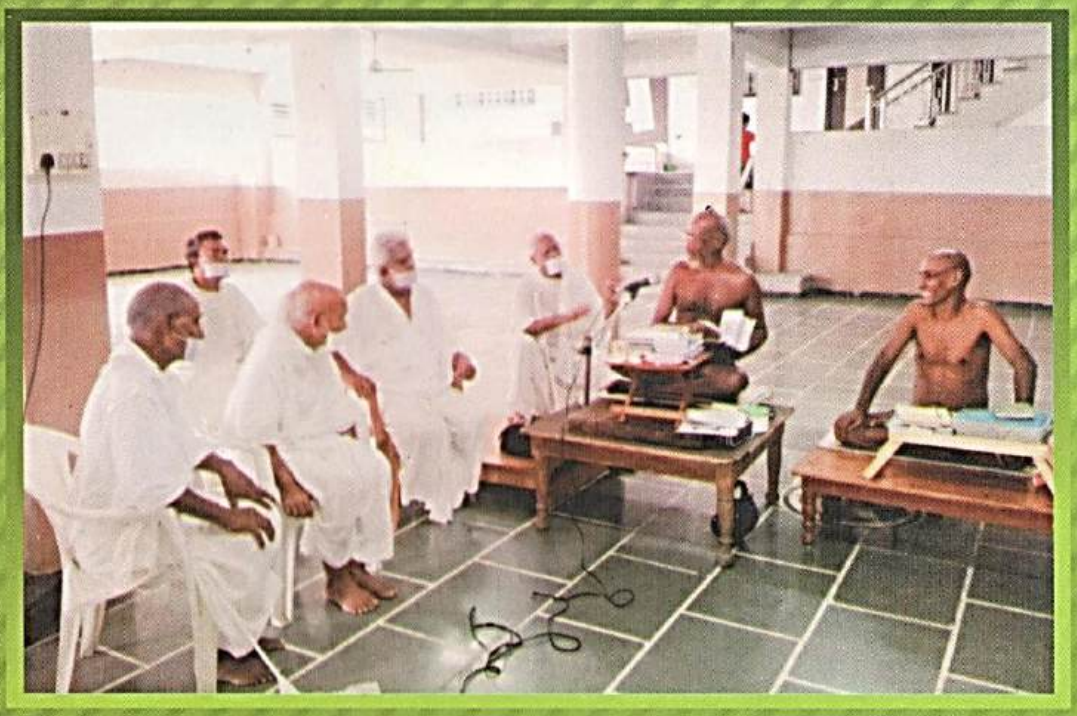

आचार्य कनकनन्दी ससंघ के साथ जैन एकता एवं विश्वशान्ति सम्बन्धी चर्चा करते हुऐ मुनि रवीन्द्र कुमार ससंघ (शिष्य आचार्य महाप्रज्ञ) मुनि जिनेन्द्र (शिष्य राष्ट्रसंत गणेश मुनि) हिरण मगरी से.-11, उदयपुर-2013

अभिप्रेरक - कविवर आचार्य
श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव

ग्रन्थ विमोचन

आचार्य कनक नन्दी द्वारा रचित ग्रन्थों के विमोचन का एक दृश्य (हिरण मगरी से.11, उदयपुर - 2013)

विदेशी विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देते हुए....

अमेरिका आदि देशों के आगंतुक शोद्यार्थी विद्यार्थियों को जैन धर्म के विभिन्न सिद्धान्तों का प्रशिक्षण देते हुए प्रो. डॉ. पारसमल अग्रवाल, प्रो. डॉ. नारायण लाल कच्छारा (आ. कनक नन्दी के शिष्य)

(गीताञ्जली धारा=22)

सफलता-गीताञ्जली

अभिप्रेरक - कविवर आचार्यश्री कनकनन्दीजी गुरुदेव

- पुण्य स्मरण -

हिरणमगरी, सेक्टर-11, उदयपुर में ग्रीष्मावकाश में पौने दो महीना प्रवास के अन्तर्गत श्रुत पञ्चमी, स्वाध्याय व श्वेताम्बर जैन साधु संघों के मिलन आदि के उपलक्ष्य में...

- द्रव्यदाता -

हिरणमगरी, सेक्टर-11, उदयपुर के ज्ञानदानी तथा मुनि सेवा समिति तथा अन्य ज्ञानदानी...श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैरिटेबल ट्रस्ट, हिरणमगरी, सेक्टर-11, उदयपुर

ग्रंथाङ्क - 220 संस्करण - 2013

प्रतियाँ - 1000 मूल्य - 75/- रु.

-: प्राप्ति स्थान :-

धर्म-दर्शन सेवा संस्थान, द्वारा-श्री छोटूलाल जी चित्तौड़ा,
चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास,
उदयपुर (राज.)-313001, मो. 9783216418

-: सम्पर्क सूत्र :-

डॉ. नारायणलाल कछारा, सचिव-धर्म-दर्शन सेवा संस्थान,
55, रवीन्द्र नगर, उदयपुर (राज.)-313001
फोन नं. 0294-2491422, मो. 9214460622
E-mail:nlkachhara@yahoo.com

सफल होना चाहता हूँ

(सफलता के सार्वभौम आयाम)

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : आत्मशक्ति..., तेरे प्यार का आसरा...)

सफल होना भी मैं सदा चाहता हूँ, असफलता से भी शिक्षा लेता हूँ।
विजयी होना भी सदा चाहता हूँ, दूसरों की पराजय बिना चाहता हूँ।।

महान् उद्देश्य से काम करता हूँ, असफल होने पर भी सफल मानता हूँ।
सफल-असफलता से शिक्षा लेता हूँ, अहं-दीन भाव से रिक्त रहता हूँ।।

क्षुद्र उद्देश्य ही मेरी असफलता है, छोटा-खोटा भाव मेरी असफलता है।
अन्य को कष्ट दे जो मिलती सफलता, वह सबसे निकृष्ट सफलता है।।

सुखी होना भी मैं सदा चाहता हूँ, दूसरों को दुःख भी न देना चाहता हूँ।
धार्मिक होना भी मैं सदा चाहता हूँ, अधर्मीजनों को भी न दुःख देता हूँ।।

श्रेष्ठ-ज्येष्ठ आदर्श भी होना चाहता हूँ, दीन-हीन पापी से न घृणा करता हूँ।
ज्ञानी-ध्यानी-आध्यात्मिक होना चाहता हूँ, दुष्ट दुर्जनों से भी न द्वेष करता हूँ।।

मेरी सफलता है सत्य साम्य सुख, महान् उद्देश्य तथा शुचिता प्रमुख।
स्व-पर-विश्वकल्याण भावना सहित, धैर्य क्षमा सहिष्णु आत्मविश्वास।।

स्व-पर हितकारी विवेक सहित, हितकारी शिक्षा ग्रहण सहित।
अनुभव ज्ञान ग्रहण से युक्त, तदनुकूल आचरण समता युक्त।।

द्रव्य क्षेत्र काल योग्यता सहित, कर्त्तव्य करूँ मैं निस्पृहता युक्त।
आडम्बर प्रपंच प्रसिद्धि रहित, आत्मविकास हेतु प्रयत्न सहित।।

अपेक्षा-उपेक्षा-प्रतीक्षा रहित, सतत विकास करूँ अनन्त पर्यन्त।
क्षुद्र उपलब्धियों से न बनूँ मोहित, 'कनकनन्दी' चाहता समग्र विकास।।

परसाद, दिनांक 09.03.2013, मध्याह्न 3.00

मेरी सुनियोजित लापरवाही प्रवृत्ति

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : यमुना किनारे..., सावन का महीना...)

सुनियोजित लापरवाही से (मैं) विचार करूँ, तदनुकूल आचार उच्चार भी करूँ।
लेखन प्रवचन भी तथा ही करूँ, सत्य समता व शान्ति से सतत करूँ।।1।।

नाना जीव नाना कर्म तथा ही भाव, सबको संतोष करना नहीं सम्भव।
राग-द्वेष से विकास नहीं सम्भव, इसलिए यह यथार्थ सही है भाव।।2।।

यथा ही कमल पंक में उत्पन्न होता, विकास करे तथापि निर्लिप्त होता।
तथा ही समाज में निवास करूँ, निर्लिप्त भाव से मैं विकास करूँ।।3।।

अनेक जाति धर्म राष्ट्र विविध, भाषा संस्कृति व संकीर्ण भाव।
सब में समानता न होना सम्भव, साम्यभाव से ही पार होना सम्भव।।4।।

पंथ मत परम्परा भी होते विभिन्न, विचार व पूजा पाठ होते विभिन्न।
विभिन्न (रंग) आकार के पुष्प गन्ध के सम, ग्रहण करूँ सुगुण गन्ध होकर साम्य।।5।।

किसी से न करूँ कुकर्म नवकोटी से, सही न मानूँ कुकर्मों को नवकोटी से।
यथा ही कनक मिट्टी से निर्लिप्त होता, तथा ही 'कनक' अन्य से निस्पृह होता।।6।।

इससे मुझे मिलती समता शान्ति, नवकोटी से कुकर्म की निवृत्ति होती।
ज्ञान ध्यान साधना को गति मिलती, 'कनक' की आध्यात्मिक प्रगति होती।।7।।

अन्य जन जब स्व-स्व स्वार्थ में रत, आध्यात्मिक विकास से होते विरक्त।
स्व-आध्यात्मिक साधना मैं क्यों न करूँ, सुनियोजित लापरवाही क्यों न करूँ?।।8।।

विजयनगर, दिनांक 28.09.2012, रात्रि 2.57

साम्य एवं स्वावलम्बन हेतु मेरी साधना

(आध्यात्म अनुभवात्मक कविता)

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : छोटी-छोटी गैया..., तुम दिल की धड़कन में..., आत्मशक्ति से...)

मेरे द्वारा मुझमें मुझे ही पाऊँ, अनन्तज्ञान सुख मुझमें पाऊँ।
परभाव समस्त को मैं दूर करूँ, इसी हेतु समस्त प्रयत्न करूँ।।1।।

यथा ही बीज स्वयं अंकुर होता, मृदा जल आदि का निमित्त होता।
तथा ही मैं स्वयं में/(से, द्वारा) विकास करूँ, बाह्य निमित्तों को ग्रहण करूँ।।2।।

तथापि निमित्तों का मैं दास न बनूँ, राग-द्वेष-मोह निमित्तों से न करूँ।
यथाहि अग्नि निमित्ते खाना बनता, अग्नि रूप खाना नहीं बनता।।3।।

तथाहि योग्य-अयोग्य निमित्त से, विकास करूँ मैं आत्म क्षेत्र में।
समता वीतरागता इसे कहते, इसी से ही साधु जन मोक्ष को पाते।।4।।

अन्य के ज्ञान वैराग्य कम के कारण, राग-द्वेष-मोह के ज्यादा के कारण।
फैशन-व्यसनों व पाप के कारण, उनसे न घृणा करूँ रहूँ उदासीन।।5।।

समता में रहूँ तथा शिक्षा भी लूँ, स्व-उपलब्धि का विकास करूँ।
अन्य यदि अनात्म/(विभाव) भाव बढ़ाते, मैं क्यों न आत्मिक
/(स्वभाव) भाव बढ़ाऊँ।।6।।

अनात्म भाव क्षणिक दुःखकारक, उसे बढ़ाने में लगे हैं अन्यान्य लोग।
आत्मभाव ही शाश्वतिक सुखकारक, अतः उसे बढ़ाना मेरा कर्त्तव्य
/(परम धर्म)।।7।।

ख्याति पूजा लाभ से दूर मैं रहूँ, राग-द्वेष-मोह से विरक्त रहूँ।
गुण व शिक्षा ग्रहण सबसे करूँ, निस्पृह व समता से साधना करूँ।।8।।

अन्य यदि मुझे प्रभावित करते, राग-द्वेष रूप से परिणमाते।
तब तो मैं उनका दास हो गया, साधु न होकर मैं यंत्र हो गया।।9।।

गति-स्थिति में धर्माधर्म समान, अन्य का सहयोग मैं लहूँ सामान्य।
तथाहि स्वावलम्बी सदा मैं रहूँ, 'कनक' साम्य भावना सदा मैं लहूँ/(करूँ)।।10।।

विजयनगर, दिनांक 29.10.2012, मध्याह्न प्रायः 3.00

"न चाहूँ मद उत्पादक पुण्य"

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : छोटी-छोटी गैया..., आधुनिक पढ़ी-लिखी रानी है...)

वह पुण्य भी मुझे नहीं चाहिए, जिससे मद उत्पन्न होता।
सत्ता सम्पत्ति को पा करके, जिसका सदा दुरुपयोग होता।। (1)

रावण कंस हिटलर सम, भाव व्यवहार खोटा/(क्रूर) होता।
संकीर्ण स्वार्थ के कारण, दूसरों का अपकार होता।। (2)

जब पापानुबन्धी पुण्य से, सत्ता सम्पत्ति बुद्धि मिलती।
मद उत्पन्न उससे (भी) होता, कुकृत्य योग्य भाव होता।। (3)

कामना युक्त ख्याति पूजा सहित, जो धार्मिक कार्य करते हैं।
पापानुबन्धी पुण्य तब होता, जिसका फल यह सब होता।। (4)

पापोदय से (भी) जो कार्य होता, इस पुण्य से उससे (भी) खोटा होता।
सत्तादि के बल पर वह, अन्याय अत्याचार खूब करता।। (5)

रावण कंस हिटलर सम, न्याय नीति सदाचार नहीं मानता।
न्याय नीति से युक्त मानव को, बहुविध यंत्रणा वह देता।। (6)

फैशन-व्यसन व आडम्बर, अन्याय अत्याचार दुराचार।
हिंसा बेईमानी व बलात्कार, शोषण मिलावट व्यभिचार।। (7)

ईर्ष्या-द्वेष वैरत्व क्रूरता, काम-भोग विषय लालसा।
भ्रष्टाचार आक्रमण व युद्ध, यह है पापानुबन्धी पुण्य।। (8)

पाप से भी पुण्य हेय, जिससे यह कुकृत्य होते हैं।
वह पाप भी इससे है श्रेष्ठ, जिससे होते हैं भाव श्रेष्ठ।। (9)

वह पुण्य ही/(भी) मुझे चाहिये, जिससे तन-मन-आत्मा स्वस्थ हो।
स्व-पर विश्व हित हेतु, भाव व्यवहार मुझसे हो।। (10)

पुण्य फल का दुरुपयोग न करूँ, ख्याति पूजा लाभ का भाव न धरूँ।
सदुपयोग करूँ व मोक्ष वरूँ, अन्य भाव न यह भाव धरूँ।। (11)

श्रेष्ठ भाव से श्रेष्ठ काम होते, ज्ञान वैराग्य उत्पन्न होते।
जिससे मोक्ष सुख/(फल) भी मिलता, 'कनकनन्दी' यह ही चाहता।। (12)

विजयनगर, दिनांक 02.09.2012, रात्रि 2.33 व प्रातःकाल

आध्यात्मिक-दार्शनिक शिक्षाप्रद कविता

''अन्य की संकीर्ण-स्वार्थपरता से मुझे प्राप्त शिक्षाएँ''

(अन्य के अस्त-व्यस्त-संत्रस्तता से मुझे प्राप्त शिक्षाएँ)

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : छोटी-छोटी गैया..., तुम दिल की...)

स्व-स्व स्वार्थ में अन्य है संत्रस्त, संत्रस्त में ही होते हैं वे व्यस्त।
व्यस्त में भी वे न जानते सत्य, तथापि मानते स्वयं को ही श्रेष्ठ।।

सत्य व सुख को वे नहीं जानते, मन्यमाना अहं भाव भी रखते।
स्वार्थ में ही अस्त-व्यस्त वे रहते, यद्वा-तद्वा सुख-शान्ति को चाहते।।

अतएव मुझे करणीय सदा, शिक्षा से ज्ञान वरणीय सदा।
आत्मकल्याण ही करणीय सदा, सत्य-साम्य-सुख वरणीय सदा।।

यदि अन्य जन स्व-स्वार्थ में रत, मुझे भी स्व-स्वार्थ साधना सतत।
क्षुद्र स्वार्थ में यदि अन्य है संत्रस्त, मैं क्यों न रहूँ निज साधना में रत।।

साधना में मेरा समय बीतता, साधना में व्यस्त-मस्त मैं रहता।
सत्य साम्य सुख मुझे (तो) मिलता, संक्लेश दुःख से दूर मैं रहता।

उत्तम स्वात्म चिन्ता ही होती, मोह चिन्ता भी मध्यमा होती।
काम चिन्ता तो अधमा होती, परचिन्ता अधमाधमा होती।।

आत्महित है आद्य करणीय, संभव हो परहित करणीय।
आत्महित परहित के मध्ये, आत्महित है श्रेष्ठ करणीय।।

तीर्थंकर मुनि ऋषि आध्यात्मिक, सत्य व शान्ति के (जो) होते साधक।
उन्हीं का ही यह मार्ग है परम, मेरे लिए भी है मार्ग/(धर्म) परम।।

अतः उन्होंने धन-जन त्यागा, मान-प्रतिष्ठा व राग-द्वेष त्यागा।
एकान्त मौन व समता में रहे, आत्मप्राप्ति हेतु साधना में रहे।।

जिससे उन्हीं को मोक्ष प्राप्त हुआ, अनन्त सुख उन्होंने प्राप्त किया।
मुझे भी सतत यही करणीय, 'कनकनन्दी' का परम ये ध्येय।।

विजयनगर, दिनांक 15.10.2012, मध्याह्न 12.49 तथा 2.33

''अजीबो-गरीब मेरी प्रवृत्ति''

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : इक परदेशी..., है अपना दिल..., तुम दिल की...)

भिन्न-भिन्न कर्म भिन्न-भिन्न भाव, भिन्न-भिन्न लक्ष्य होता जीवों में।
तदनुकूल रूचि तथाहि प्रकृति, प्रकृति अनुसार होती प्रवृत्ति।।ध्रु.।।

किसी की प्रवृत्ति सत्ता-सम्पत्ति में होती, मेरी तो होती सत्य समता में।
किसी की प्रवृत्ति जन-मान में होती, मेरी तो होती मौन-एकान्त में।।
किसी की प्रवृत्ति ईर्ष्या-तृष्णा में होती, मेरी तो होती ज्ञान-वैराग्य में।
किसी की प्रवृत्ति राग-द्वेष में होती, मेरी तो होती वीतरागता में।। (1)

किसी की प्रवृत्ति बाह्य आडम्बर (में) होती, मेरी तो होती ध्यान-अध्ययन में।
किसी की प्रवृत्ति पूजा-पाठ में होती, मेरी तो होती आत्म चिन्तन में।।
किसी की प्रवृत्ति राग-रंग में होती, मेरी तो होती तत्त्व चिन्तन में।
किसी की प्रवृत्ति कूट-कपट की होती, मेरी तो होती सीधा-सरल में।। (2)

किसी की प्रवृत्ति परावलम्बन/(पर-अपेक्षा) होती, मेरी तो होती आत्मावलम्बन की।
किसी की प्रवृत्ति पर-प्रतीक्षा की होती, मेरी तो होती स्वतः प्रवृत्ति की।।

कोई अकल बिना भी नकल करता है, मैं तो गुण-ग्रहण सदा ही करता।
दोषी से भी घृणा नहीं करता हूँ, उसी से भी शिक्षा सदा ही लेता।। (3)

वाचन से अधिक मैं चिन्तन करता हूँ, चिन्तन से करता हूँ आचरण।
उसी से अनुभव मैं प्राप्त करके ही, ग्राह्य-अग्राह्य का करता (हूँ) विश्लेषण।।
इसलिये मेरे काम अलग होते हैं, अन्य को लगता है अजीबो-गरीब।
कनक (नन्दी) तो इसी में व्यस्त-मस्त है, अन्य कोई मेरे से न होता करीब।।(4)

बावलवाड़ा, दिनांक 02.12.2012, मध्याह्न 2.38

"मेरे योग्य त्यजनीय करणीय एवं वरणीय"

(मेरी प्रतिज्ञा साधना एवं उपलब्धि)

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : 1. यमुना किनारे..., 2. अच्छा सिला दिया...)
जिससे परम सत्य न मिले है, वह परम प्राप्य मेरा नहीं है।
जिससे चरम/(आत्मिक/शाश्वत्/अमर) सुख न मिलता,
वह मेरा अन्तिम लक्ष्य नहीं है।।

जिससे आत्मा की शुचिता न होती, वह धार्मिक क्रिया नहीं चाहिए।
जिस साधना से समता नहीं बढ़ती, वह साधना मुझे नहीं चाहिए।।

अपेक्षा उपेक्षा प्रतीक्षा युक्त, राग द्वेष ईर्ष्या घृणा युक्त।
दबाव प्रलोभनमय युक्त, दीन हीन अहं भाव युक्त।।

ख्याति पूजा लाभ मोह सहित, याचना द्वन्द्व व संक्लेश युक्त।
संकल्प विकल्प व भ्रम सहित, कार्य न होगा मुझसे ज्ञात।।

भेदभाव मैं करूँगा नहीं, संकीर्ण हठग्राही बनूँगा नहीं।
निन्दा चुगली करूँगा नहीं, खोटे/(छोटे) भाव भरूँगा नहीं।।

आकर्षित-विकर्षित बनूँगा नहीं, दूसरों की बातों में पड़ूँगा/(फसूँगा) नहीं।
अन्य की कुचिन्ता करूँगा नहीं, खोटी प्रतिज्ञा करूँगा नहीं।।

वाद-विवाद में पड़ूँगा नहीं, कुतर्क-वितर्क करूँगा नहीं।
वैर-विरोध भी करूँगा नहीं, सत्य-साम्य-शान्ति छोड़ूँगा नहीं।।

आलस्य प्रमादी बनूँगा नहीं, ध्यान अध्ययन छोड़ूँगा नहीं।
आडम्बर प्रपंच रचूँगा नहीं, अनुभव विपरीत चलूँगा नहीं।।

द्रव्य क्षेत्र काल सुभाव युक्त, निश्चय व्यवहार नय सहित।
उत्सर्ग-अपवाद क्रिया सहित, आचरण करूँगा समता युक्त।।

बाह्य क्रिया करूँगा शक्ति युक्त, अंतरंग साधना समता युक्त।
तन मन आत्मा स्वास्थ्य योग्य, आहार विहार निवास युक्त।।

धन जन मान का नहीं लोभ, आत्म विशुद्धि का हो लाभ।
निस्पृह संतोष हो ज्ञानानन्द, 'कनक' का लक्ष्य निजानन्द।।

बावलवाड़ा, दिनांक 4.12.2012, रात्रि 10:25

''दूसरों के लिए अगम्य मेरा अनुभव क्यों?''

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : छोटी-छोटी गैया..., हे गुरुवर..., सावन का महीना..., इतनी शक्ति...)

मेरे भाव-व्यवहार को अच्छा मानते, पठन-पाठन को अच्छा/(श्रेष्ठ) मानते।
सत्य-समता शान्ति को ज्येष्ठ मानते, अनुभव को मेरा नहीं मानते।।

दीर्घ अनुभव किया मैंने हरक्षेत्र में, निष्पक्ष सत्यग्राही दृष्टिकोण से।
स्व-पर का मैं परीक्षण भी किया, कुछ दिग्दर्शन यहाँ भी किया।। (1)

मेरा अनुभव सूक्ष्म व्यापक होता, कार्य-कारण से भी सहित होता।
स्व-पर उपकार से युक्त भी होता, उदार सहिष्णु आध्यात्म होता।।

अन्य के इससे भिन्न भी होता, संकीर्ण स्वार्थ से युक्त भी होता।
अनुभव शून्य उथला भी होता, ईर्ष्या-द्वेष लाभ अनात्म होता।। (2)

काम चलाऊँ ही भाषा जानते, रूढ़ि परम्परा से सहित होते।
कार्य-कारण सम्बन्ध नहीं जानते, सापेक्ष सिद्धान्त को नहीं जानते।।

अन्वय-व्यतिरिक्त नहीं जानते, तर्कातर्क का भेद नहीं जानते।
द्रव्य भाव-भेद नहीं जानते, सनम्र-सत्यग्राही नहीं बनते।। (3)

तर्क-व्याकरण का ज्ञान न होता, गणित-विज्ञान का भान न होता।
कर्म सिद्धान्त को नहीं जानते, अन्तर्सम्बन्ध को नहीं जानते।।

महान् लक्ष्य से रहित होते, पूर्वाग्रहों से सहित होते।
कुण्ठा अकर्मण्यता से युक्त भी होते, प्रमाद आलस्य से संयुक्त होते।। (4)

उत्साह रहित भाग्यवादी भी होते, नियतिवादी कालवादी भी होते।
सब-चलता का भाव रखते, मनमानी ढंग से काम करते।।

सरल-सहज भाव से रहित होते, अहंकार दिखावा से सहित होते।
अन्धानुकरण व नकलची होते, रटन्त जानकारी को ज्ञान मानते।। (5)

जिज्ञासा कृतज्ञता का भाव न रखते, गहन सूक्ष्म चिन्तन नहीं करते।
बुद्धिलब्धि भावलब्धि कम रखते, आत्मिक विकास कम करते।।

मेरा अनुभव अतः नहीं जानते, नहीं मानते लाभ नहीं लेते।
अतएव मैं साम्य मौन रखता, 'कनकनन्दी' अनुभव पढ़ाता।। (6)

विजयनगर, दिनांक 10.09.2012, प्रातःकाल

''श्रमणाचार्यश्री कनकनन्दी जी भगवंत''

''अनमोल रतन-धन-खान''

-जसकार : 'अजय' संघस्थश्री

पायोजी मैंने 'कनक' रतन धन पायो
पायोजी मैंने गुरुवर रतन धन पायो, पायोजी मैंने भगवन् रतन धन पायो।टेक।।

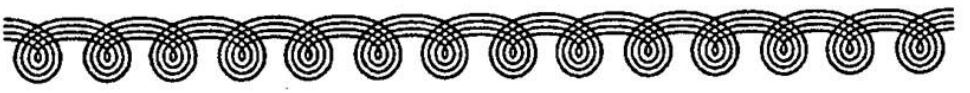

खर्च न फूटे, चोर न लूटे, दिन-दिन बढ़त सवायो
पायोजी मैंने 'कनक' रतन धन पायो, पायोजी मैंने...सुख साक्षात् ही पायो...।।1।।

सत् की नाव, खेवटिया सद्गुरु, भवसागर तर आयो
पायोजी मैंने ऐसो खेवटिया पायो, पायोजी मैंने...श्री गुरुवर धन पायो...।।2।।

तप की दृढ़ता, त्याग की मूरत, समता रूप है भायो
पायोजी मैंने निस्पृह रूप भी पायो, पायोजी मैंने...'जगद्गुरु' ऐसो पायो...।।3।।

स्वाध्याय है जिनके रग-रग2, स्याद्वाद ढंग पायो
पायोजी मैंने सूरीश्वर जी को पायो, पायोजी मैंने साक्षात् भगवन् पायो...।।4।।

सारे जगत में डंका बाजे, सत्य-धर्म खूब फैलायो
सहज प्रोत्साहित करते भलमन, मैं तो सत्य सुखामृत पायो...।।5।।

अजय धूल के फूल श्री कनकनन्दी, मेरी तो हर श्वाँस श्री कनकनन्दी
हरख-हरख जस गायो, गायोजी मैंने हरख..., पायोजी मैंने आध्यात्मिक रस पायो...।।6।।

महान् आध्यात्मिक/वैज्ञानिक गुरुश्रेष्ठ

आचार्यश्री कनकनन्दी जी की प्रगतिशील आरती

-सृजन : मुनि सुविज्ञसागर

(चाल : मन डोले मेरा तन डोले...)

धर्म दर्शन के वैज्ञानिक की...ले मंगल दीप प्रजाल हो ऽऽ
मैं आज उतारूँ आरतियाँ...(ध्रुवपद)...

कनकनन्दी जी नाम है जिनका...महान् उदारभावी ऽऽ
जिनके सन्मुख विश्व हुआ है...नतमस्तक शिरनाई ऽऽ
गुरुजी नतमस्तक शिरनाई ऽऽ

ऐसे गुरुवर को...ऐसे ऋषिवर को...नित प्रति वन्दन शत बार हो
मैं आज उतारूँ आरतियाँ...धर्म...(1)

देश-विदेश में जिनके प्रतिनिधि...धर्म-विज्ञान प्रसारे ऽऽ
जिनकी प्रज्ञा-समता-ममता...हर जन मंगल गाये ऽऽ
गुरुजी हर जन हर्षित भावे ऽऽ

ऐसे मुनिवर की ऐसे यतिवर की...मैं हर पल करूँ आराधना
मैं आज उतारूँ आरतियाँ...धर्म...(2)...

अध्यात्म की ज्योति जलाकर...निस्पृह भाव प्रकाशे ऽऽ
जिनकी सरल मूर्ति लखकर...हर जीव शान्ति पाये ऽऽ
गुरुजी भव्य जीव शान्ति पाये ऽऽ

ऐसे मनीषी की...ऐसे हितैषी की...मैं हर क्षण करूँ अर्चना हो
मैं आज उतारूँ आरतियाँ...धर्म...(3)

जिनके ज्ञान-विज्ञान-अनुभव से...लाभान्वित विज्ञानी ऽऽ
सुविज्ञ भी हर पल लाभान्वित...मन में हर्ष अपारा ऽऽ
गुरुजी जन में हर्ष अपारा ऽऽ

ऐसे सद्ज्ञानी...ऐसे विज्ञानी...गुरुवर की आरती आज हो
मैं आज उतारूँ आरतियाँ...धर्म...(4)

''स्वात्म चिन्तक गुरुवर''

-आर्यिका सुविधेयमती

(राग : ऐ मेरी आँखों के पहले सपने..., आँसू भरी है...)

भावों में जिनके समता बसी है, होठों पे जिनके निश्छल हँसी है।
दुर्ध्यान इक पल भी करते नहीं, संसार भोगों में रमते नहीं।।
होऽऽऽ हो...आऽऽऽ आऽऽऽ आ...(स्थायी)

हर जगह हर घड़ी, स्वात्म चिन्तन करें .
मोह ममता नहीं, सत्य मन में धरें ऽऽऽ भावों में जिनके...(1)

कल्पनातीत है, जिनकी प्रज्ञा प्रखर
फिर भी भावों में ना, मद आता नजर SSS भावों में जिनके...(2)

विश्व उपलब्धि में, जिनका जीवन मगन
भावभीना कनक-नन्दी जी को नमन SSS भावों में जिनके समता बसती है...(3)

विजयनगर, दिनांक 31.07.2012, प्रातःकाल 9.00

''मेरे गुरुवर जग से निराले''

-आर्यिका सुविधेयमती

(राग : जो प्यार करता है..., करता हूँ वन्दना..., छूकर मेरे मन को...)

सम्यक् चिन्तन में...जो मन को लगाते हैं,
गुणानुमोदन से...जो वचन सजाते हैं,
कायिक संयम से...आचरण सिखाते हैं,
ऐसे गुरुवर को हम...नित वन्दन करते हैं।।ध्रु.।।

अनुभव जिनके...जग से न्यारे,
आध्यात्मिकता को...उर में धारे,
सत्य पुजारी...गुरुवर प्यारे,
दया, क्षमा, शान्ति के पथ पर...अविरल चलते हैं, ऐसे गुरुवर को...।। (1)

जो कहते वो...करके दिखाये,
खोटे काज न...ज़िनको भाये,
भावविशुद्धि से...सबको लुभाये,
ख्याति-पूजा-लाभ को मन से...दूर जो रखते हैं, ऐसे गुरुवर को...।। (2)

कनक गुरु की...शरण जो आये,
सहज परम सुख...आनन्द पाये,

गुरुभक्ति भव...पार लगाये,
जिनके गुणों की प्राप्ति हेतु...भाव जगते हैं, ऐसे गुरुवर को...।। (3)

विजयनगर, दिनांक 30.07.2012, रात्रि 12.50

''मेरी (आचार्य कनकनन्दी की) स्वास्थ्य की समस्याएँ एवं समाधान''

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

मेरे स्वास्थ्य के बारे में मैं...कर रहा हूँ वर्णन।
जिससे मैं सतर्क रहूँ...स्वास्थ्य रक्षा के कारण।।ध्रु.।।

शारीरिक स्वास्थ्य से मैं रखूँ...मानसिक स्वास्थ्य।
दोनों स्वास्थ्य के बल पर साधूँ...आध्यात्मिक स्वास्थ्य।।
शारीरिक प्रकृति मेरी है...स्वाभाविक पित्त प्रकृति।
स्वाध्याय हेतु रात्रि जागरण से...बढ़ता बहु पित्त।। (1)

मेरे लक्ष्य अनुभव कार्य...यथा अन्य से भिन्न।
तथा मेरा आहार-विहार...निवास अन्य से भिन्न।।
इसलिये मुझे अन्य लोग भी...समझ न पाते शीघ्र।
इससे कुछ समस्या होती...समाधान न होता शीघ्र।। (2)

गरमी गन्दगी बदबू से बढ़ता...और भी अधिक पित्त।
रूखा तीखा गरम भोजन...खट्टा से बढ़े पित्त।।
इसी से शरीर गरम रहे...पसीना आवे विशेष।
चक्कर आवे उल्टी होवे...पीलिया हैजा प्रकोप।। (3)

धूली धुआँ गैस की बदबू...गैस से बना भोजन।
अधकचा अधपका भोजन...अक्रम दिया भोजन।।

मिर्ची बेसन उड़द मक्का...तेल मैदा भोजन।
मेरे लिए है अयोग्य जानो...जो पित्तकर भोजन।। (4)

सर्द-गर्म भोजन व वातावरण से...होती है सर्दी-खाँसी।
समताप भोजन व वातावरण से...ठीक होती सर्दी-खाँसी।।
स्वच्छ प्राकृतिक वातावरण व...समशीतोष्ण परिस्थिति।
स्निग्ध मधुर सुपरिपक्व भोजन से...बढ़े न पित्त प्रकृति।। (5)

दूध घी मुनक्का बादाम नारियल पानी...मीठे फल व ककड़ी।
हलुआ खीर पूड़ी पराठा व...केले परवल की सब्जी।।
सुबह शाम परिभ्रमण...प्राणायाम व योगासन।
शान्त स्वच्छ एकान्त स्थान में...निवास व यह काम।। (6)

थंडा तेल की मालिश थंडा...पानी से हो स्पंज।
योग्य है गरम किया हुआ थंडा...पानी दूध व भोजन।।
शोर-शराबा लड़ाई-झगड़ा...अयोग्य कार्य व भाव।
मेरे लिए है सर्वथा अयोग्य...ईर्ष्या-द्वेष-क्लेश भाव।। (7)

शरीर माद्यं खलु धर्म साधन...तन-मन-आत्मा के स्वास्थ्य।
उत्तम शरीर संहनन मन से...सधता समग्र स्वास्थ्य।।
शरीर मन से परे है...आध्यात्मिक मेरा स्वास्थ्य।
उस स्वास्थ्य हेतु 'कनकनन्दी'...रखता तन-मन स्वस्थ।। (8)

विजयनगर, दिनांक 19.11.2012, प्रातः 8.18

मेरी आध्यात्मिक यात्रा की दैनिन्दनी (डायरी)

(राग : आत्मशक्ति से..., शत-शत वन्दन..., सुनो-सुनो हे दुनियाँ..., चौपाई-जय हनुमान...)

मेरी आध्यात्मिक यात्रा का कर रहा हूँ मैं वर्णन।
ज्ञान वैराग्य चिन्तन हेतु तथा ही अनुप्रेक्षण।। (1)

शिक्षा-दीक्षा अध्यापन शिविर साहित्य लेखन।
संगोष्ठी प्रभावना देश-विदेशों का काम।। (2)

मार्ग प्रदर्शक प्रथमगुरु आचार्य विमलसागर।
प्रोत्साहक अनुमोदक आचार्य भरतसागर।। (3)

शिक्षा-दीक्षा गुरु मम आचार्य कुन्थुसागर।
आगम अध्यापिका विजयमती गुरुवर।। (4)

उन्नीस सौ छहत्तर (1976) में ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार।
बाल विद्यार्थी अवस्था से ही यह था मेरा विचार।। (5)

गणिनी विजयमती से अनुयोग चारों किया ज्ञान।
शिखचन्द परमानन्द दिवाकर श्रेयांस से लिया ज्ञान।। (6)

अतिशय क्षेत्र पपौराजी में क्षुल्लक दीक्षा हुई ग्रहण।
उन्नीस सौ अठहत्तर (1978) में गुरु कुन्थुसागर किया प्रदान।। (7)

मेरा अध्ययन भी चलता रहा तथा करता हूँ अध्यापन।
कुण्डलपुर में ब्रह्मचारिणियों (आ. विद्यासागर जी की)
को दिया विद्या दान।। (8)

शोधपूर्ण प्रवचन भी तब से ही कर रहा हूँ।
करणानुयोग-द्रव्यानुयोग सह विज्ञान/(अनुसंधान) जोड़ रहा हूँ।। (9)

जबलपुर में कांजीपंथी विद्वानों को किया मैं ज्ञान दान।
संघस्थ ब्रह्मचारियों को भी कराया अध्यापन।। (10)

श्रवणबेलगोल हेतु हुआ, दोनों संघ का विहार।
गुरुवर विमलसागर व गुरुदेव कुन्थुसागर।। (11)

उन्नीस सौ इक्कासी (1981) में प्रायतः दो सौ साधु-साध्वी।
आचार्य देशभूषण सहित, आचार्य भी विद्यानन्द।। (12)

अनेक विद्वान् सहित लाखों भी श्रद्धालु जन।
एकत्र हुए अभिषेक हेतु देश-विदेशों के जन।। (13)

साधु-संतों का सामूहिक अध्ययन होता था दो बार।
अध्ययन मेरा विशेष हुआ, प्रश्नों का मिला उत्तर।। (14)

दरबारीलाल कोठिया व आचार्यश्री विद्यानन्द।
प्रभाकर जी से भी अध्ययन किया मिला विशेष आनन्द।। (15)

श्रमण दीक्षा मेरी वहाँ ही हुई द्वारा श्री कुन्थुसागर।
शताधिक साधु-साध्वी समक्ष श्रद्धालु बहु हजार।। (16)

संघस्थ साधु-साध्वियों को कराया अध्यापन।
उन्नीस सौ बयासी (1982) में हुआ उपाध्याय पदासीन।। (17)

धवला का जब अध्ययन व अध्यापन भी किया।
सिद्धान्त चक्रवर्ती पद में मुझे आसीन गुरु ने किया।। (18)

आचार्य देशभूषण ने भी समर्थन वहाँ है किया।
उन्नीस सौ पचासी (1985) में शमनेवाड़ी में हुआ।। (19)

एकान्तवाद का निरसन मैंने नागपुर में भी किया।
एलाचार्य पदवी गुरु ने आरा (बिहार) में (1988) दिया।। (20)

वहाँ से संघ हमारा (35 साधु) सोनागिरी में आया।
गुरु विमलसागर संघ (25 साधु) का वात्सल्य मिलन हुआ।। (21)

सूरी विमल सिंधु की आज्ञा से दोनों संघों को पढ़ाया।
समयसार व द्रव्यसंग्रह दिन में दो बार पढ़ाया।। (22)

विद्यासागर सूरी की तथा सन्मति सागर मुनिवर की।
ब्रह्मचारिणियाँ भी आकर पढ़ी और मुनि विरागसागर भी।। (23)

आर्यिका ज्ञानमती के निवेदन व बड़ौत वालों के कारण।
डेढ़ माह के बाद विहार हुआ हस्तिनापुर समागम।। (24)

हस्तिनापुर में लगा शिविर विद्वान् हेतु विशाल।
समयसार मैंने वहाँ पढ़ाया, विद्वान् (100) सहित मुनिजन।। (25)

पूरे भारत से आये विद्वान् प्रायः है शत जन।
अर्ध शत साधु-साध्वी त्रय संघस्थ ब्रह्मचारी जन।। (26)

विश्व धर्म प्रभाकर पदवी मुझे दिल्ली में हुआ प्रदान।
ज्ञान विज्ञान दिवाकर पदवी मुझे रोहतक में प्रदान।। (27)

उन्नीस सौ छयानवें (1996) को आचार्य पद हुआ प्राप्त।
उसी समय ही आचार्यरत्न सूरी अभिनन्दन से प्राप्त।। (28)

उदयपुर में हुआ सम्पादन यह कार्य सानन्द सहित।
प्रायः अर्धशत साधु-साध्वी तीन श्रमण संघ सहित।। (29)

तीनों संघ को अध्यापन कराया प्रवचनसार ग्रंथ महान्।
सहित श्रावक-श्राविका अनेक भी विद्वान् जन।। (30)

ईडर में डेढ़ महीना तक पढ़ाया विशुद्धमती संघ को।
और भी पढ़ाता हूँ प्रोफेसर्स वैज्ञानिक शिष्यों को।। (31)

सागवाड़ा में हुआ वैज्ञानिक संगोष्ठी का शुभारम्भ।
तब से अनेक महान् कार्यों का हुआ भी है शुभारम्भ।। (32)

मेरे शिष्यों द्वारा यह सब कार्य हो रहा है सर्वत्र।
देश के विश्वविद्यालयों से लेकर विश्व धर्म सभा तक।। (33)

साहित्य लेखन में मेरा प्रेरणास्त्रोत हैं अनेक।
सूरी विमलसागर कुन्थुसागर भरतसागर अनेक।। (34)
सूरी सन्मतिसागर व पद्मनन्दी विद्यानन्दी शिष्यवर।
सुविज्ञसागर तथा अनेक साधु-साध्वी व दानी वीर।। (35)

बत्तीस शिविर हजारों के कक्षा में पढ़ाया शिष्य लाख।
साधु उपाध्याय आचार्य साध्वी पढ़ाया तीन शत।। (36)

आत्मसाधना ही परम लक्ष्य अन्य है आनुषंगिक।
स्व-पर विश्वकल्याण हेतु करे प्रयत्न ''कनक''।। (37)

परसाद, दिनांक 17.03.2013, रात्रि 12.20

मेरी साहित्य साधनादि में सहयोगी

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : आत्मशक्ति से..., सुनो-सुनो हे...)

मेरी साहित्य-साधना चल रही है निरन्तर।
इसके लिए सहायक है अनेक संत व भक्तवर।। (1)

हजारों शिष्य-शिष्या मेरे दिगम्बर व श्वेताम्बर।
देश-विदेशों के जैन तथा अजैन नारी-नर।। (2)

पद्मनन्दी देवनन्दी विद्यानन्दी शिष्यवर।
ग्यारह प्रदेश के मेरे भक्त व शिष्य-शिष्या प्रवर।। (3)

राजश्री क्षमाश्री गुप्तिनन्दी व आज्ञासागर शिष्यवर।
सच्चिदानन्दी तीर्थनन्दी (सुविज्ञ) आध्यात्मनन्दी शिष्यवर।। (4)

इन सब काम में विशेष सहयोगी सुशील प्रभात वीणा।
कच्छारा सेठी दम्पत्ति गुणपाल पंकज सोहनराज।। (5)

सुवत्सल सुनिधि सुनीति सुवीक्ष लक्ष्मी गुरुचरण।
सोहनलाल अजय दीपेश मणिभद्र मयंक राजन।। (6)

छोटूलाल जयन्त किशोर आशादेवी सह खुशपाल।
रमेश प्रद्युम्न नरेन्द्र यू.एस.ए. महावीर सुरेखा शिष्य प्रवर।। (7)

तथाहि आहार सेवा व्यवस्था करने वाले लाखों जन।
देश-विदेश व मेवाड़-वागड़ के भक्त व शिष्य जन।। (8)

इनके सहयोग सदाशय से हो रहा है ज्ञान प्रचार।
ज्ञानदानी मुद्रक (जन भी) सहयोगी,
'कनकनन्दी' तो अकिञ्चित्कर।। (9)

परसाद, दिनांक 18.03.2013, मध्याह्न 3.00

अनन्त बार कृतकार्य मेरे लिए अकरणीय एक बार भी अकृत कार्य करणीय

(पंच परिवर्तन का चिन्तन तथा प्राप्त वैराग्य)

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : छोटी-छोटी गैया..., यमुना किनारे..., आत्मशक्ति से...)

द्रव्य क्षेत्र काल भव भाव में, अनन्त परिवर्तन किया हैं मैंने।
जन्म मरण भी अनन्त किया, तो भी स्वयं को कभी न पाया।।

विश्व के हर जड़ वस्तु को खाया, तथा पचाया तथा ही त्यागा।
ऐसा अनन्त बार भी किया हैं मैंने, तथापि सन्तोष/(स्व-सुख) पाया न मैंने।।

हर क्षेत्र में जन्म लिया है मैंने, तथाहि मरण भी किया है मैंने।
कोई क्षेत्र न विश्व का छोड़ा, तथापि स्वक्षेत्र को कभी न पाया।।

भूत के अनन्त समय हुए हैं, हर समय में जन्म-मरा है।
स्व-समय को कभी न पाया है, पर समय में रमण किया है।।

निगोद से देव तक बना हूँ, चतुर्गति में जन्म लिया हूँ।
चौरासी लाख योनि गहा हूँ, भवातीतगति नहीं पाया हूँ।।
भाव भी विभिन्न किया है मैंने, असंख्य लोक प्रमाण भेद में।
क्रोध मान माया लोभ मोह में, स्वभाव भाव न किया है मैंने।।

ऐसे परिवर्तन किया हूँ अनन्त, पंच परिवर्तन अनन्तानन्त।
परिवर्तन न किया मैं स्वयं को, शुद्ध भावमय स्वयं के भाव को।।

हर जीव को मारा व खाया, ऐसा ही मेरा अन्य से हुआ।
अन्य से सम्बन्ध हुए अनन्त, माता-पिता भाई पुत्री व पुत्र।।

पति-पत्नी तथा शत्रु व मित्र, समधी जमाता सास ससुर।
दास व प्रभु शोषक-शोषित, शिकार-शिकारी आदि विलोम।।

तथापि स्वयं को जाना न माना, स्व-उपकार हेतु कुछ न किना।
तन-मन-धन- विषय भोग में, अनन्त भव गमाया मैंने।।

यह सब उच्छिष्ट वमन मलवत्, यह सब मेरा नहीं है किंचित्।
स्वगुण धर्म ही मेरा वैभव, सच्चिदानन्दमय मेरा स्वभाव।।

उसी हेतु ही ज्ञान अध्ययन, तप त्याग व मौन साधन।
व्रत नियम मनन चिन्तन, कनकनन्दी का सम्पूर्ण ध्यान।।

परसाद, दिनांक 16.03.2013, रात्रि 9.23

हल्दीघाटी के म्यूजियम का अवलोकन करते हुए
आचार्य कनकनन्दी ससंघ तथा संस्थापक मोहनलाल श्रीमाली आदि

विषयानुक्रमणिका

अ.क्र	विषय	पृ.क्र.
1.	मेरी सुनियोजित लापरवाही प्रवृत्ति	3
2.	साम्य एवं स्वावलम्बन हेतु मेरी साधना	4
3.	न चाहूँ मद उत्पादक पुण्य	5
4.	अन्य की संकीर्ण-स्वार्थपरता से मुझे प्राप्त शिक्षाएँ	6
5.	अजीबो-गरीब मेरी प्रवृत्ति	7
6.	मेरे योग्य त्यजनीय-करणीय एवं वरणीय	8
7.	दूसरों के लिए अगम्य मेरा अनुभव क्यों?	9
8.	श्रमणाचार्य श्री कनकनन्दी जी भगवन्त-अनमोल रतन-धन-धान	10
9.	महान् आध्यात्मिक/वैज्ञानिक गुरुश्रेष्ठ आचार्य श्री कनकनन्दी जी की प्रगतिशील आरती	11
10.	स्वात्म चिन्तक गुरुवर	12
11.	मेरे गुरुवर जग से निराले	13
12.	मेरी (आचार्य कनकनन्दी की) स्वास्थ्य की समस्याएँ एवं समाधान	14
13.	मेरी आध्यात्मिक यात्रा की दैनिन्दनी (डायरी)	15
14.	मेरी साहित्य साधनादि में सहयोगी	19
15.	अनन्त बार कृतकार्य मेरे लिए अकरणीय, एक बार भी अकृत कार्य करणीय	20

विषयानुक्रमणिका

अ.क्र	विषय	पृ.क्र.
	सफलता गीताञ्जली	
1.	क्रम विकास से शुद्धात्मा बनो	29
2.	मंगलकारी-अमंगलकारी की आराधना	29
3.	बाल प्रेयर (ओन इनरसोल की प्रेयर)	30
4.	CHILDREN'S-SPIRITUAL-PRAYER	31
5.	बाळ-आध्यात्मिक-प्रार्थना (मराठी)	32
6.	बाळकोनी-आध्यात्मिक-प्रार्थना (गुजराती)	32
7.	सुरनी आध्यात्मिक-प्रार्थना (बागड़ी)	33
8.	सत्य सनातन की प्रार्थना (सत्य का विश्वरूप)	33
9.	साम्यावस्था प्राप्ति हेतु प्रार्थना-प्रयास	35
10.	आध्यात्म नव-प्रभात में जागो	35
11.	जिनेन्द्र कीर्तन	36
12.	परमात्म वन्दना (स्व-आत्म ध्यान)	37
13.	सरस्वती/जिनवाणी वन्दना	38
14.	गुरुदेव से/(की) प्रार्थना	39
15.	वन्दे तद्गुणलब्धये	40
16.	विविध सफलता के विभिन्न उपाय	41
17.	जीवन प्रबन्धन एवं आत्मविकास के सार्वभौम सूत्र	42
18.	हर जीव सुख के लिए प्रयत्नशील	43
19.	सामान्य ज्ञान एवं नैतिक व्यवहार से विकास	45
20.	विकास में बाधक अपूर्ण जानकारियाँ	46
21.	अनुभव ही सर्वोच्च शिक्षा व दीक्षा	47
22.	शिक्षा का विकृत-संस्कृत रूप	48
23.	चतुर्विध पुरुषार्थ	50

24.	तन-मन-आत्मा के स्वास्थ्य के उपाय	51
25.	सम्पूर्ण विकास के बाधक कारण (प्रबोधन गीत)	52
26.	विनय से गुण शोभते	54
27.	पुष्प की आत्मकथा	55
28.	देव की आत्मकथा	56
29.	सेवा का उद्देश्य एवं फल	57
30.	श्रमिक की आत्मकथा	59
31.	सफलता (विकास) के बाधक कारक	61
32.	केवल भौतिक विकास बनता है विनाश का कारण	62
33.	संकीर्णता अनेक दुर्गुण-दुष्प्रवृत्तिको जन्म देती	63
34.	अन्धी आधुनिकता का कुफल	64
35.	नकलची (अन्धभक्त) की आत्मकथा	65
36.	केवल भौतिक विकास अन्ततः विनाश के कारण	66
37.	अण्डे तथा मद्य से भी अधिक हानिकारक तम्बाखू	67
38.	दूसरे क्या बोलेंगे-क्या सोचेंगे की समीक्षा	69
39.	चीर हरण (मानवीय कुकृत्य)	71
40.	विकास में बाधक एकांगी भाव	72
41.	राग की विनाशलीला	73
42.	नारकी की आत्मकथा तथा आत्मव्यथा	75
43.	रुपया का महिमा	76
44.	संकीर्ण स्वार्थी क्रूरतम प्राणी : मानव	77
45.	एकता से विकास : एकताहीन से विनाश	79
46.	सर्व अनुशासन के मूल आत्मानुशासन	80
47.	काई भी कार्य अचानक (अकारण) नहीं होता	81
48.	असफल होने के कारण	82
49.	लक्ष्य प्राप्ति के उपाय	83
50.	पाश्चात्य से प्रायोगिक शिक्षा लेकर भारत बने विश्वगुरु	84

51.	श्रेष्ठता से मिलता है सम्मान	86
52.	स्वयं के द्वारा स्वयं को महान् बनाओ	86
53.	असाधारण पुरुषों की क्यों होती है अलौकिक वृत्ति?	87
54.	संगीत से होते हैं-तन-मन स्वस्थ्य	89
55.	सुखी होने के धार्मिक एवं वैज्ञानिक कारण	90
56.	भ्रमण एक लाभ अनेक	91
57.	मानवीय कलंक को मिटाने वाले महामानव अब्राहम लिंकन	92
58.	भौतिकमय यांत्रिक मानव की दुर्दशा	93
59.	शिक्षा तेरी धारा है अजस्र	94
60.	विभिन्न विषय ज्ञान से विविध लाभ	95
61.	ज्ञानदान एवं ज्ञानार्जन की सही पद्धति	96
62.	विवाद-विसंवाद से सत्य व शान्ति अप्राप्त	97
63.	धैर्य से मिलती है महानता एवं सफलता	98
64.	पशुओं की भी सेवा से मिलता है स्वास्थ्य	99
65.	परोपजीवी से समस्या तथा परस्परोपग्रह से समाधान	100
66.	संगति का फल	101
67.	श्रावक एवं श्रमण हेतु त्यजनीय अनावश्यक पाप	102
68.	शान्ति प्राप्ति के पूर्ण रहस्य	105
69.	परिग्रह में अनेक पाप गर्भित	106
70.	धन विहीन सुख एवं आनन्द	107
71.	यदि विश्व में युद्ध न होता	109
72.	परवश से पाप, स्ववश से मोक्ष	110
73.	अनेकान्तात्मक कार्य कारण सिद्धान्त	111
74.	मानव-दानव-महामानव-भगवान्	113
75.	बुद्धि<संवेदना<आध्यात्म	114
76.	नीति-सुनीति-कुनीति	115
77.	प्रिय-अप्रिय	117

78. विभिन्न स्वतन्त्रता एवं परम स्वतन्त्रता 118
79. मानव के विश्वरूप 119
80. प्रतिष्ठा से महान् चारित्र 120
81. अकारण से आनन्द, सकारण से दुःख 121
82. जीनियस (प्रतिभावान) बनने के कारक 122
83. सम्पूर्णता की प्राप्ति 123
84. मेरी प्रतिज्ञा 124
85. मेरी अन्यः चेतना के संदेश एवं आदेश 125
86. सामान्य ज्ञान एवं सदाचार 127
87. शान्ति प्राप्ति के उपाय : पवित्र भाव व्यवहार 128
88. महानतम रहस्य 129
89. सभी-सभी को उपकारी नहीं मानते 130
90. सच्ची एवं झूठी प्रशंसा का स्वरूप एवं फल 131
91. मानवीय कलंक को मिटाने वाले महामानव अब्राहम लिंकन 132
92. सज्जन एवं दुर्जन संगति के फल 133
93. अहंवाद से विवाद/(बहस) संवेदना से संवाद 134
94. अभी के वृक्ष भी है कल्पवृक्ष सम 135
95. संगीत चिकित्सा 137
96. अन्य की क्षुद्रता दुर्दशा से दया आती तथा शिक्षा मिलती 139
97. कब ये भारत महान् होगा 140
98. व्यापार के स्रोत है-भय-आशा-लालच 141
99. कृत्रिम आधुनिक जीवन 142
100. पास-फैल की सही पद्धति 143
101. शब्द ज्ञान<पद ज्ञान<वाक्य ज्ञान<
भाषा ज्ञान<विषय ज्ञान<भाव ज्ञान<अनुभव 144
102. सफलता या असफलता 145
103. गुरु की आत्मकथा 146

104. शिष्य की आत्मकथा 148
105. विद्यार्थी की आत्मकथा 150
106. भारत के 47 प्रतिशत स्नातक भी नौकरी योग्य नहीं 151
107. स्वाध्याय से अभ्युदय एवं मोक्ष की प्राप्ति 153
108. मेरी ज्ञानार्जन की पद्धति 155
109. आधुनिक शोधानुसार खुशी के 7 उपाय 157
110. वात्सल्य मिलन का सुफल 158
111. चरण स्पर्श : पादोदक का वैज्ञानिक कारण 159
112. मोही धन के लिए करता सब अनर्थ 160
113. विवश एवं स्व-वश काम 161
114. वर्चस्व हेतु होती है प्रतिस्पर्द्धा-लड़ाई 163
115. अन्य की तुलना व प्रतिस्पर्द्धा से रहित हूँ 164
116. सद्गृहस्थ (श्रावक) के 35 गुण 164
117. संकल्प से शक्ति केन्द्रीकरण तो विकल्प से शक्ति क्षरण 165
118. ईर्ष्या एवं कृतघ्नता त्याग से होता गुण ग्रहण 166
119. मानव की आत्मकथा 168
120. राष्ट्रभक्ति-स्वतन्त्रता तथा त्याग के प्रतीक : भामाशाह 169
121. श्रेणिक से मुझे प्राप्त शिक्षाएँ 170
122. अभावित भाऊँ भावित न भाऊँ 171
123. कर्म सापेक्ष एवं निरपेक्ष से स्व-चिन्तन 172
124. अनुपम एवं अतुलनीय है मेरा स्वरूप 173
125. स्वात्म वैभव स्मरण 174
126. अनुभवजन्य आत्मरस पान 175
127. नमो आत्मानन्द 176
128. प्रभु से मेरी प्रार्थना 177
129. दूसरों के कारण मैं पापी क्यों बनूँ? 178
130. धूप स्नान से लाभ 179

131. आत्म तत्व के दीवाने-आचार्य कनकनन्दी 180
132. आत्म गुरु की कश्ती में-बैठे कनकगुरु मस्ती में 181
133. आचार्यश्री कनकनन्दी जी का आध्यात्मिक व्यक्तित्व 182
134. महान् बालकगण 184
135. हिटलर की आत्मकथा-व्यथा-शिक्षा 185
136. अधर्म-धर्म के नाम पर अधर्म ही करता 187
137. मोक्ष मार्ग के बाधादि 188
138. स्वाधीनता से स्वरूपोपलब्धि 188
139. मानव के अंगों का सदुपयोग एवं दुरुपयोग 189
140. कब ये मानव महान् होगा? 191
141. भारत सरकार भी भारत के नाम के बारे में नहीं जानती 192
142. आध्यात्मिक एवं सेवा का संगम सम्बन्धी संगोष्ठी 193
143. आचार्यश्री के वैज्ञानिक शिष्यों द्वारा
विदेश से आये शोध छात्रों को मोटिवेशन 195
144. भौतिक विज्ञानियों के चेतन विज्ञान की ओर बढ़ते कदम 196
145. जैन एकता व चेतना विज्ञान का मंगलाचरण 198

"क्रम विकास से शुद्धात्मा बनो"

(राग : ज्योत से ज्योत..., छोटी-छोटी गैया...)

क्रम विकास मार्ग में आगे ही बढ़ो, बीज से वृक्ष व फूलों व फलो।
अक्षर शब्द ग्रंथ भाव को पढ़ो, भौतिक से नैतिक आध्यात्म चलो।।ध्रु.।।

प्रतीक से प्रतीति निश्चय करो, शरीर से मन व आत्मा में चलो।
चित्र से नक्शा व यथार्थ जानो, बुद्धि से परे भावना आध्यात्म जानो।।
जीवन भर अक्षर शब्द न पढ़ो/(रटो), बीज प्राप्त करके ही न सन्तोषी बनो।
प्रतीति बिना प्रतीक में न अटक, भौतिक शरीरादि में ही न भटक।। (1)

कस्तुरी मृग सम बाह्य में न भटक, मृगमरीचिका के पीछे न भटक।
तन-मन-इन्द्रियों में ही न अटक, सत्ता-सम्पत्ति कीर्ति में न अटक।।
राग-द्वेष मोह नहीं तेरा स्वभाव, शरीर-मन-इन्द्रिय तेरा विभाव।
जन्म-मरण रोगादि से परे स्वरूप, सच्चिदानन्दमय शुद्ध स्वभाव।। (2)

अन्य के पीछे स्वयं को भूला, संसार की भीड़ में भटका हुआ (है)।
संकीर्ण मत-पंथ में रत हुआ (है), फैशन-व्यसनों में मस्त हुआ (है)।।
ईर्ष्या-तृष्णा-मद को घटाता चलो, सत्य-साम्य-शान्ति को बढ़ाता चलो।
पाप त्यागो पुण्य करो शुद्ध को वरो, 'कनक' क्रमविकास से शुद्धात्मा बनो।।(3)

छाणी, दिनांक 10.01.2013, प्रातः 8.40

मंगलकारी अमंगलहारी की आराधना

(व्यक्तित्व विकास के परम उपाय)

(राग : जय हनुमान..., मंगल भवन..., इतनी शक्ति...)

मंगल करन अमंगलहारी, सेवहुँ उत्तम भाव दुःखहारी।
सत्य समता शुचि क्षमा मार्दव, धैर्य संयम भाव मम उपकारी।।

तत्त्व सेवन से आत्मविश्वास जगे, अन्धविश्वास व अज्ञान भागे।
क्रोध मान माया लोभ संहारे, हिंसा झूठ चोरी कुशील भी हारे।।

फैशन-व्यसन संक्लेश नशाये, कलह विवाद अशान्ति नशाये।
अपना पराया भेदभाव विनशे, दीन हीन अहं संकीर्ण नशे।।

तुम्हारी कृपा से पाप भी नशे, सातिशय पुण्य उपार्जन होते।
रोग शोक दुःख दारिद्र नशे, आपत्ति-विपत्ति संकट नशे।।

पराया लोक भी अपना होते, निन्दक शत्रु भी मित्र हो जाते।
प्रेम संगठन सौहार्द्र बढ़े, समन्वय सहयोग विकास बढ़े।।

उत्साह शान्ति ध्यान विकसे, स्थिरता एकाग्रता ज्ञान प्रकाशे।
कर्म की निर्जरा होती विशेष, परिणाम शुद्धि होती अशेष।।

आत्मिक शक्ति का विकास होता, कर्मों का नाश अशेष होता।
सच्चिदानन्द रूप प्रगट होता, 'कनक' निज शुद्ध रूप को पाता।।

परसाद, दिनांक 14.2.2013, रात्रि 9:30,
माघ शुक्ला पंचमी (वसन्त पंचमी)

बाल-प्रेयर

बाल आध्यात्मिक गान

वन्दना/आरती/स्तुति/प्रार्थना/गजल/चिल्ड्रन साँग/ओन इनरसोल की प्रेयर

अपने अन्तरात्मा की प्रार्थना एवं गुरु वन्दना

तुम ही मदर, तुम ही फादर, तुम ही सिस्टर, तुम ही ब्रदर,
तुम ही मास्टर, तुम ही हेल्पर, तुम ही नीयर, तुम ही फारदर
तुम ही एइम, तुम ही गेइन, तुम ही वर्शिप, तुम ही प्रेयर
तुम ही वे हो, तुम ही मोटर, तुम ही आल्सो, मेरे इनर
तुम ही बिलीफ, तुम ही नॉलेज, तुम ही कन्डक्ट, तुम ही कन्सेप्ट

तुम ही फेम, तुम ही नेम, तुम ही सब्जेक्ट, तुम ही ऑब्जेक्ट

तुम ही सीनियर, तुम ही सुपर, तुम ही प्युर, तुम ही फ्युचर

तुम ही बिफोर, तुम ही आफ्टर, तुम ही मेरे, मोक्ष मन्दिर/(नेचर)

तुम ही मेरे, मोक्ष दातार/(डोनर)

(विविध चाल व बहुरागीय/बहुद्देशीय गीत/365 दिवसीय काव्य)

1. दिल है छोटा सा...
2. सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालों...
3. भगवान् तो सदा शान्त हे बन्दे!
4. सुनो वो है मेरी बेटी...
5. तुम पास आये...
6. फूल तुम्हें भेजा है खत में...
7. हमको हमी से चुरालो...
8. वन्दे मातरम्...
9. दूर रहकर न करो बात...
10. छूकर मेरे मन को...
11. सांयोनारा...2...
12. जाने कहाँ गये वो दिन...

CHILDREN'S-SPIRITUAL-PRAYER

You are Mother...You are Father.

You are Sister...You are Brother.

You are Master...You are Helper.

You are Near...You are Farther.

You are Aim...You are Gain.

You are Worship...You are Prayer.

You are My Way...You are Moter.

You are Also...My Inner.

You are Belief...You are Knowledge.

You are Conduct...You are Concept.

You are Fame...You are Name.

You are Subject...You are Object.

You are Senior...You are Super.

You are Pure...You are Future.
You are Before...You are After.
You are My...Freedom Temple.
/(Freedom Doner)/(Freedom Nature).

''बाळ-आध्यात्मिक-प्रार्थना''

(मराठी भाषेत)

तुम्हीं माझी आई...तुम्हीं माझे वडिल, तुम्हीं माझी ताई...तुम्हीं माझे भाऊ
तुम्हीं माझे गुरुजी...तुम्हीं माझे सहायक,
तुम्हीं माझ्या जवळ...अन् माझ्यापासून दूर
तुम्हीं माझे ध्येय...तुम्हीं माझे प्राप्य, तुम्हीं माझी पूजा...तुम्हीं माझी प्रार्थना
तुम्हीं माझा मार्ग...तुम्हीं माझी गाड़ी/(वाहन),
तुम्हीं माझे सम्पूर्ण...तुम्हीं माझ्या अन्तरी
तुम्हीं माझा विश्वास...तुम्हीं माझे ज्ञान, तुम्हीं माझे चारित्र...तुम्हीं माझे आशय
तुम्हीं माझी प्रसिद्धि...तुम्हीं माझे नांव, तुम्हीं माझे विषय...तुम्हीं माझे पदार्थ
तुम्हीं माझे वरिष्ठ...तुम्हीं माझे श्रेष्ठ, तुम्हीं माझे भविष्य...तुम्हीं माझे शुद्ध
तुम्हीं माझे पहिले...तुम्हीं माझे नन्तर, तुम्हीं च माझे...
मोक्षदेऊळ/(मोक्षदाता)/(मोक्षस्वभावी)

''बाळकोनी-आध्यात्मिक-प्रार्थना''

(गुजराती भाषा मां)

तमे ज माता...तमे ज पिता, तमे ज बहेन...तमे ज भ्राता/भाई
तमे ज शिक्षक...तमे ज सहायक, तमे ज पासे...तमे ज दूर

तमे ज लक्ष्य...तमे ज प्राप्य, तमे ज पूजा...तमे ज प्रार्थना
तमे ज रस्तो...तमे ज वाहन, तमे ज सम्पूर्ण...मारा अंदर
तमे ज विश्वास...तमे ज ज्ञान, तमे ज चारित्र...तमे ज आशय
तमे ज प्रसिद्ध...तमे ज नाम, तमे ज विषय...तमे ज पदार्थ/(वस्तु)
तमे ज मोटा...तमे ज सारा, तमे ज शुद्ध...तमे ज भविष्य
तमे ज पूर्व...तमे ज पछी, तमे ज मारा...मोक्ष देरासर

''सुरनी आध्यात्मिक प्रार्थना''

बागड़ी

तमी स बा हो...तमी स बापा, तमी स बुन...तमी स भाई
तमी स माडसाप...तमी स सहायक, तमी स पाय...तमी स वीगरा
तमी स लक्ष्य...तमी स प्राप्य, तमी स पूजा...तमी स प्रार्थना
तमी स रस्तो...तमी स गाड़ी, तमी स मारा...कारजा मयी
तमी स भरोसो...तमी स ज्ञान, तमी स चारित्र...तमी स आशय
तमी स ख्याति...तमी स नाम, तमी स विषय...तमी स पदार्थ
तमी स वडा...तमी स असल, तमी स शुद्ध...तमी स भविष्य
तमी स अगाडी...तमी स पसाडी, तमी स मारा...मोक्ष ना मन्दिर

सत्य सनातन की प्रार्थना

सत्य का विश्वरूप

(विविध राग-भाव युक्त गीत)

हे सत्य सनातन विश्व स्वरूप, लोकालोक में व्याप्त स्वरूप।
जीव-अजीव में सहित रूप, लोक-लोकोत्तर तेरा स्वरूप।।

द्रव्य रूप में तू विश्व स्वरूप, जीव रूप में तू चेतन रूप।
अजीव में तू अजीव रूप, लोकालोक व्यापी आकाश रूप।।

तू ही तत्त्व व पदार्थ रूप, द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव सहित।
तू ही अनेकान्त/(सापेक्ष) स्याद्वाद रूप, निश्चय-व्यवहार तेरा स्वरूप।।

मन-वचन व काय स्वरूप, कृत कारित अनुमोदन रूप।
धर्म-दर्शन-विज्ञान स्वरूप, न्याय-राजनीति तेरा स्वरूप।।

इतिहास-पुराण में तेरा स्वरूप, नीति-सदाचार में तेरा स्वरूप।
व्यापार-कला में तेरा स्वरूप, आदान-प्रदान में व्याप्त रूप।।

सर्व ही प्रतिष्ठित तेरे रूप में, तेरे बिना सर्व मिथ्या स्वरूप।
तेरे बिना सर्व शून्य स्वरूप, अवास्तविक है अभाव रूप।।

तू ही श्रेष्ठ सत्य परमेश्वर, ब्रह्मा विष्णु व महेश्वर।
गुण-पर्यायवत् तेरा स्वरूप, उत्पाद व्यय ध्रौव्य स्वरूप।।

तू ही मोक्षमार्ग व मोक्षस्वरूप, रत्नत्रय मय तेरा स्वरूप।
दशधर्म व पञ्चव्रत स्वरूप, आदि मध्य व अन्त स्वरूप।।

तू ही मेरा है निज स्वरूप, तेरी प्राप्ति ही मेरा स्वरूप।
इसी हेतु 'कनक' करे प्रयास, सत्य अतिरिक्त न करे विश्वास।।

विजयनगर, दिनांक 16.09.2012, प्रातःकाल

विविध राग :

1. सायोनारा-सायोनारा...
2. प्रथम तुला वन्दितो...(मराठी)
3. हमको मन की शक्ति देना...
4. मन है छोटा-सा...
5. शोधिशी मानवा...(मराठी)
6. करता हूँ वन्दना...
7. अच्छा सिला दिया तूने...
8. कनकनन्दी-कनकनन्दी भजो सुबह-शाम
9. रख लाज मेरी श्रीपति...
10. भये प्रगट कृपाला-दीनदयाला...
11. जय हनुमान ज्ञान...
12. यमुना किनारे...छोटी-छोटी गैया...
13. भातकुली च्या खेळ्या मधली (मराठी)
14. आओ झूले मेरे चेतन...
15. बिन गुरुज्ञान नहीं है...(मन तड़पत)

'साम्यावस्था प्राप्ति हेतु प्रार्थना-प्रयास'

(राग : तुम दिल की धड़कन..., सावन का महीना..., नरेन्द्र छन्द)

गल जाये सब सुख-दुःख मेरे, जो पूर्व कर्म से प्राप्त हुए हैं।
आत्मिक सुख मैं अनुभव करूँ, जो साम्यमय आत्म रूप है।।ध्रु.।।

जन्म-मरण तथा बाल किशोर, यौवन-प्रौढ़ तथा ही वृद्ध।
लाभ-हानि व निन्दा प्रशंसा, नहीं है मेरी आत्मिक दशा।।

यह सब कर्म उदय के फल है, यह नहीं मेरा निज स्वरूप।
कर्मफल में आसक्त होने से, बंधन-बद्ध होते कर्म-जाल से।। (1)

जिससे आत्मिक विकास न होता, न मिलता है आत्मिक सुख।
भौतिकता में ही विकास चाहते, जो होता है जड़ स्वरूप।।

यथा ही राम तथा भरत भी, दोनों अवस्था में रहे निस्पृह।
राज्य प्राप्ति व राज्य त्याग में, तथा मैं रहूँ हर स्थिति में।। (2)

मैं चाहूँ मेरी परमावस्था, तथा ही आत्मिक अनन्त ज्ञान।
इस जन्म में ही यथा योग्य मैं, प्राप्त करूँ हूँ परम स्थान।।

शरीर निमित्त आवश्यकता को, स्वीकार करूँ मैं हो अनासक्त।
परम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु ही, ''कनक'' सतत करें/(करूँ) प्रयास।। (3)

विजयनगर, दिनांक 15.09.2012, मध्याह्न 3.05

''आध्यात्म नव-प्रभात में जागो''

(राग : नरेन्द्र छन्द, ओ बसन्ती पवन पागल..., शत-शत वन्दन...)

नव प्रभात आया जागो हे! जागो नव प्रभात आया।
जागा ज्ञान दिनमणि/(दिनकर) अज्ञान अन्धकार भगा रे भगा।
कुभाव हिंस्र पशु को दूर ही करो, प्रभु स्मरण से स्वयं को वरो।
सत्य-तथ्य का ज्ञान तू करो, अन्याय अत्याचार को दूर तू करो।।

तन-मन को तू पावन/(पवित्र/शुचिता) करो, आत्म पावन हेतु साधना करो।
कर्मशत्रु से संग्राम करो, अनादि बन्ध को दूर तू करो।।

मोक्ष दिवस में प्रवेश करो, 'कनक' अक्षय दिन में निवास करो।
दिन का नव-प्रभात प्रतीक मात्र, इसीसे न जीव बने पवित्र।।

विजयनगर, दिनांक 07.09.2012, प्रातःकाल

जिनेन्द्र-कीर्तन

(तर्ज/(चाल) : संस्कृतनिष्ठ-ओडिशी-नृत्याभिनय सहित)

कर्म मारयते...2 धर्म धारयते...2 भव्य बोधयते...2

जिनाय तुभ्यं नमः ऽऽऽ...3

घाति नाशयते...2 गुण धारयते...2 विश्व मोदयते...2

वीराय तुभ्यं नमः ऽऽऽ...3

अनन्त ज्ञानाय...2 अनन्त वीर्याय...2 अनन्त सुखाय...2

शिवाय तुभ्यं नमः ऽऽऽ...3

सत्य स्वरूपाय...2 अरिहन्त/(अर्हन्) रूपाय...2 शुद्धात्म रूपाय...2

बुद्धाय तुभ्यं नमः ऽऽऽ...3

अहिंसा रूपाय...2 दिगम्बराय...2 दिव्य गीराय...2

त्राताय तुभ्यं नमः ऽऽऽ...3

शान्ति रूपाय...2 निर्विकाराय...2 क्षेमंकराय...2

प्राज्ञाय तुभ्यं नमः ऽऽऽ...3

'कनक' सेविताय नमः ऽऽऽ...3

विजयनगर, दिनांक 16.10.2012, मध्याह्न 12.54

''परमात्म वन्दना''

(स्व-आत्म ध्यान)

(राग : तुम्हीं मेरे मन्दिर..., तुम दिल की...)

चिदानन्दाय वस्तुरूपाय सत्यरूपाय नमो नमः।
शान्तरूपाय निर्विकल्पाय दिव्यरूपाय नमो नमः।।

अजराय च अमराय शाश्वताय नमो नमः।
ज्ञानरूपाय सुखरूपाय अमृताय नमो नमः।। (1)

स्वयम्भूवाय अनन्ताय अमूर्ताय नमो नमः।
आत्मस्थिताय सर्वगताय नित्यरूपाय नमो नमः।।

निर्मलाय निर्विकराय निष्कर्माय नमो नमः।
ज्योतिरूपाय ज्ञानानन्दाय वीर्यरूपाय नमो नमः।। (2)

विदेहाय अकषाय चिन्मयाय नमो नमः।
सूक्ष्मरूपाय विश्वरूपाय निष्कम्पाय नमो नमः।।

परमरूपाय परमसत्याय परमसुखाय नमो नमः।
परमज्ञानाय परमवीर्याय परात्पराय नमो नमः।। (3)

परमव्याप्ताय आत्मरूपाय ब्रह्मरूपाय नमो नमः।
द्रव्यरूपाय ध्रौव्ययपाय तत्त्वरूपाय नमो नमः।।

वीतरागाय साम्यरूपाय मोक्षरूपाय नमो नमः।
कनक (नन्दी) ध्याये तवगुणप्राप्याय निजरूपाय नमो नमः।। (4)

विजयनगर, दिनांक 12.10.2012, मध्याह्न 1.39

''सरस्वती/जिनवाणी वन्दना''

(आगम एवं अध्यात्मनिष्ठ कविता)

(वैश्विक सत्य-शान्ति की प्रवक्ता सरस्वती माता की वन्दना)

(राग : बंगला-उड़िया, बहुरागीय वन्दना)

जननी! जननी! जननी! वन्दे शारदे जननी! (हे जिनवाणी)
तीर्थंकर सुता पवित्र गात्रा, ज्ञान पयोधरा पावन माता।
गणधर ऋषि मुनि सेविता माता, देव-विद्याधर पूजिता माता।।

राजा-महाराजा चक्री वन्दिता, विद्वान् कवि नरगण पूजिता।
पशु-पक्षी सुदृष्टि वन्दिता, स्वर्ग-मोक्षदायिनी भारती माता।।

ज्ञान-विज्ञान से अलंकृत गात्रा, शिक्षा संस्कृति से शोभित माता।
भाषा गणित कला मण्डिता, आध्यात्मिक ज्ञान से पावन माता।।

अनेकान्तमय आपका आत्मा, स्याद्वाद वाणी से आप शोभिता।
प्रमाण नय निक्षेप शोभिता, वस्तु स्वरूप की आप प्रणेता।।

द्रव्य गुण पर्याय की आप ज्ञाता, उत्पाद व्यय ध्रौव्य सहिता।
मोक्षपथ की आप (हो) सुज्ञाता, मार्गणा गुणस्थान सहिता।।

आत्मविश्वास ज्ञान चरित्रदात्री, भव्य कमल की आप सावित्री/
(भव्य कमल की विकासिनी दात्री)।
विश्वहितंकरी हे! जगज्जननी, कनकनन्दी की ज्ञान दायिनी।।

विश्व प्रबोधिनी सरस्वती माता, वैश्विक शान्ति की आप प्रवक्ता।
विश्व समस्या की समाधान कर्त्ता, शत-शत वन्दन हे! जगन्माता।।

विजयंनगर, दिनांक 22.10.2012, मध्याह्न 12.32

नृत्याभिनय सह

''गुरुदेव से/(की) प्रार्थना''

(राग : ओडिशी, बंगला, सायोनारा..., इतनी शक्ति...)

गुरुदेव दया करो भक्तजने/(शिष्यजने/दीनजने), ज्ञान दान करो तेरे शिष्य जने।
आप शिष्य-बन्धु दया के सागर, ब्रह्मा विष्णु रूद्र शिवशंकर।।ध्रु.।।

शिष्य निर्माता आप ब्रह्मदेव, पालनकर्त्ता आप विष्णुदेव।
अज्ञान नाशक आप रूद्रदेव, शिष्य मंगलकारी शिवशंकर।। (1)

अज्ञान रूपी 'गु' अन्धकार, उसके नाशक 'रु' ज्योतिधर।
अज्ञान तमहर ज्योतिधर, गुरुदेव मुझे दो ज्ञानवर।। (2)

ज्ञानामृत दान से मृत्युहर, सत्य शिव सुन्दर मुझे कर।
माता-पिता बन्धु मम हितंकर, तरण-तारण तुम हे/(ओ) गुरुवर।। (3)

सद्ज्ञान दाता संस्कार ज्ञाता, सदाचार दाता संस्कृति दाता।
हिताहित विवेक के आपदाता, अनुशासन से मम रक्षाकर्त्ता।। (4)

सत्य-तथ्य के आप महाज्ञाता, बन्ध-मोक्ष के आप हो सही ज्ञाता।
व्यवहार निश्चयज्ञ महाप्राज्ञ, वाग्मी धर्म-धुरन्धर समयज्ञ।। (5)

मैं वन्दन पूजन तव करूँ, विनय सेवा व भक्ति करूँ।
नवकोटि से कोटी नमन करूँ, 'कनक' निष्काम प्रणाम करूँ।। (6)

विजयनगर, दिनांक 05.09.2012, रात्रि 11.22

''वन्दे तद्गुण-लब्धये''

आध्यात्म गुण-गुणी के स्मरण-भजन-अनुकरण ही पूजा, प्रार्थना, वन्दना, आराधना, आरती आदि

पूजा-प्रार्थना आदि के रहस्य, स्वरूप एवं फल

(राग : शत-शत वन्दन..., यमुना किनारे श्याम...)

पूजा प्रार्थना का स्वरूप जानो...'वन्दे तद्गुणलब्धये' रहस्य मानो।
भाव की विशुद्धि पूजादि मानो...जड़ात्मक क्रिया नहीं है जानो।।ध्रु.।।

पूजा-प्रार्थना-आराधना/(वन्दना)/(प्रशंसा) भक्ति...याग यज्ञ विधान संस्तुति।
पर्यायवाची शब्द पूजा के जानो...मन-वचन-काय से पूजा है मानो।।

स्तुति है पुण्य गुणोत्कीर्तिः...स्तोता है भव्यः प्रसन्नधीः।
निष्टितार्थो है भवां स्तुत्यः...फल है नैश्रेयस सुखम्।। (1)

गुण-गुणी के भाव/(मन) में स्मरण...वचन में हो तथाहि उच्चारण
/(कीर्तन)/(भजन)।
काय में हो तथाहि वन्दन...जीवन में हो गुणानुकरण।।

पूजक का भाव प्रसन्न होता...गुणानुस्मरण से प्रमुदित होता।
मोह-राग-द्वेष क्षीण करता...पूज्य पुरुष के गुणों को ग्रहता।। (2)

तब ही पूजक यथार्थ होता...शुभभाव से पाप को नाशता।
सातिशय पुण्य अर्जन करता...इह परलोक सुख को पाता।।

इससे रहित जो पूजादि होती...यथार्थ पूजा वह नहीं होती।
भाव शून्य क्रिया/(पूजा) फल न देती...जड़ क्रिया से भक्ति
/(पूजा) न होती।। (3)

ख्याति-पूजा-लाभ निमित्त...राग-द्वेष-मोह-काम से युक्त।
रूढ़ि-परम्परा व अज्ञान युक्त...पूजा-प्रार्थना होती है अनर्थ।।

भावसहित वचन-तन से...द्रव्य-क्षेत्र व साधन क्रियाएँ।
स्तुति/(पूजा) से मिलता है यथार्थ फल...कृतकारिता अनुमत से फल।। (4)

पवित्र भावना महान् कर्म...दानदया-सेवा यथार्थ धर्म।
गुण-गुणी सम्मान यथार्थ पूजा...'कनकनन्दी' रचे ऐसी ही पूजा।। (5)

विजयनगर, दिनांक 01.11.2012, प्रातः 4.00 से 5.32

(पूजा संबंधी विस्तृत परिज्ञान के लिए आचार्य कनकनन्दी कृत (1) जिनार्चना (2) पूजा से मोक्ष-पुण्य-पाप आदि का अध्ययन करें।)

''विविध सफलता के विभिन्न उपाय''

(राग : जिन्दगी इक सफर है..., है अपना दिल तो आवारा...)

सफलता के स्वरूप को जानो...इसके समस्त हेतु पहचानो।
बाधक कारणों को कर परिहार...प्रयत्नपूर्वक सफलता वर।। (1)

कार्य कारण के सम्बन्ध से युक्त...परिणाम है परिणाम से उपज।
सु-द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव सहित...एकाग्रता से हो पुरुषार्थ सतत।। (2)

सफलता है कृतकृत्य होना...इच्छित कार्य का सम्पादन करना।
तन-मन-इन्द्रियों को स्वस्थ रखना...सन्तोषमय जीवन जीना।। (3)

सफलता केवल नहीं होती (है)...परीक्षा उत्तीर्ण डिग्री पाना।
सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि पाना...भोग करके बच्चा जन्माना।। (4)

परम सफलता कृतकृत्य होना...आत्मा को परमात्मा बनाना।
इससे (ही) मिले अनन्त सुख...अव्याबाध व निराकुल सुख।। (5)

इस लक्ष्य को केन्द्र में करके...उदार सहिष्णु भावना धरके।
संकीर्ण स्वार्थ को त्याग करके...प्रबल पुरुषार्थ समग्र करके।। (6)

क्रम व्यवस्थित उपायों के द्वारा...त्रुटियों से शिक्षा ग्रहण के द्वारा।
सुधार संवर्द्धन उपायों के द्वारा...अनुभव से योग्यता विकास द्वारा।। (7)

सदुपयोग हो समय-साधनों का...बुद्धि शक्ति व उपलब्धियों का।
कर्त्तव्यनिष्ठा व स्वावलम्बन से...उपेक्षा-अपेक्षा-प्रतीक्षा हीन से।। (8)

हानि-लाभ से न हो कभी अधीर...महान् लक्ष्य में हो भावना स्थिर।
अवश्य मिले हैं सुफल अपार...'कनक' का अनुभव है प्रचुर।। (9)

विजयनगर, दिनांक 30.07.2012, प्रातःकाल 8.50

"जीवन प्रबंधन एवं आत्म विकास के सार्वभौम सूत्र"

(स्व-शिक्षा-स्वावलम्बन-स्वानुशासन पुरुषार्थ : विकास)

(राग : सायोनारा..., है अपना दिल..., बहुरागीय)

विकास के पथ पर आगे बढ़िये, सत्य अहिंसा के साथ बढ़िये।
आत्मविश्वास को नहीं छोड़िये, सुगुण (को) बढ़ाते आगे बढ़िये।
प्रशंसनीय कार्य सदा कीजिये, प्रशंसा के पात्र सदा बनिये।
निन्दनीय कार्य मत कीजिये, प्रशंसा की तृष्णा त्याग कीजिये।। (1)

प्रतीक्षा अपेक्षा मत कीजिये, किसी की भी उपेक्षा मत कीजिये।
न्याय नीति सहित आगे बढ़िये, अहंकार दीनता को त्याग कीजिये।
स्व-विशेषताओं का ज्ञान कीजिये, संवर्द्धन उसका सदा कीजिये।
उनका सदा गौरव कीजिये, विधेयात्मक भाव सदा रखिये।। (2)

सत्य निष्ठा-अहिंसा विनम्र भाव, निस्वार्थ सेवा व करूणा भाव।
सरल सहज धैर्य स्वभाव, उदार सहिष्णुं निर्मल भाव।
निष्पक्ष निर्भय अचौर्य भाव, ईर्ष्या घृणा से रहित भाव।
तृष्णा मोह से भी रहित भाव, फैशन-व्यसन से रिक्त स्वभाव।। (3)

छिद्रानुवेषण से रहित भाव, निन्दा प्रपंच से रहित भाव।
सुगुण ग्रहण व दुर्गुण त्याग, क्षमादि होते विशेष भाव।

प्रमाद आलस्य भ्रम त्यजिये, सत्पुरुषार्थ सदा कीजिये।
अन्धानुकरण मत कीजिये, स्वगुणों को कभी मत त्यजिये।। (4)

आत्म विश्लेषण सदा कीजिये, क्रम विकास का ज्ञान कीजिये।
अन्य के दोषों (गुणों) से शिक्षा लीजिये, स्वयं दुर्गणी मत बनिये।
कोई न समझे यदि तुम को, गलत भी समझे यदि तुमको।
अंधेरा से अप्रभावी दीपक सम, प्रकाशित होकर हरिये तम।। (5)

उपलब्धियों को करते चलो, उसकी शक्ति से आगे ही चलो।
आसक्त दुरुपयोगी कभी न बनो, अहंकारी संकीर्ण कभी न बनो।।
तन-मन आत्मा को स्वस्थ रखिये, हित-मित प्रिय सदा (वाक्य) कहिये।
प्रभावशाली सदा स्वयं बनिये, प्रभावित करने का दंभ (मोह) त्यजिये।। (6)

स्व-शक्ति का ज्ञान (मान) कीजिये, उसका विकास व ध्यान कीजिये।
इसी से योग्यता का विकास होगा, जिससे विकास कार्य सहज होगा।
अनन्त संभावना का तुम हो पिण्ड, तुम में निहित शक्ति प्रचण्ड।
संभावनाओं को प्राप्त कीजिये, निहित शक्ति को व्यक्त कीजिये।। (7)

मानव से महामानव बनिये, महामानव से भगवान् बनिये।
इसी हेतु 'कनक' सदा प्रयास, विश्व मानव करे मेरा आशीष।। (8)

विजयनगर, दिनांक 02.10.2012, रात्रि 12.08

(हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू (दैनिक भास्कर) से प्रेरित यह कविता)

''हर जीव सुख के लिए प्रयत्नशील''

(पाप-पुण्य-मोक्ष भी सुख के लिए)

(राग : यमुना किनारे श्याम...)

सुख प्राप्ति हेतु होते सब प्रयास...सांसारिक कार्य व मोक्ष प्रयास।
अशुभ-शुभ या शुद्ध प्रयत्न...सुख प्राप्ति हेतु ही होते प्रयत्न।।

पाँचों इन्द्रियों के भोगोपभोग...सत्ता-सम्पत्ति-प्रसिद्धि के भोग।
फैशन-व्यसन व अष्ट भी मद...अशुभ-पाप के होते प्रभेद।।

हिंसानन्द मृषानन्द व चौर्यानन्द...परिग्रहानन्द सब पाप-आनन्द।
इसमें यथार्थ सुख नहीं ही होता...मोहवश जीव इसे सुख मानता।।

वस्तुतः ये दुःखरूप दुःखजनक...यथा है धूमपान दुःखजनक।
एड्स कारक यथा वेश्यागमन...पापात्मक सुख भी दुःखनिदान।।

तथापि मोही इसे अधिक चाहे...अधिक भोग करे चाह बढ़ाये।
इसी हेतु पुनः बहु पाप भी करे...तथापि स्वयं को सुखी-समृद्ध माने।।

परोपकार दान-दया-प्रवृत्ति...देवपूजा गुरुपास्ति व वैयावृत्ति।
उदार भावना तथा विश्वमैत्री...हित-मित-प्रिय बोल अचौर्यवृत्ति।।

अध्ययन मनन व मौन प्रवृत्ति...गुणानुराग व गुणी की स्तुति।
दुःखी जीवों की सेवा गुणानुमोदन...श्रावक व मुनि के व्रत नियम।।

यह सब शुभभाव पुण्यजनक...इससे मिलते हैं प्रशस्त सुख।
मिलते क्रमशः उभय लोक के सुख...मानव देव व मोक्ष के सुख।।

यह सुख जीव कम ही चाहे...कम ही करे तथा कम बढ़ाये।
भाग्यशाली सम्यग्दृष्टि तथा श्रावक...मुमुक्षु साधु ही करे ये काम।।

राग-द्वेष रहित समता भाव...संकल्प-विकल्प से रहित भाव।
आत्मलीनता-रूपी समाधिभाव...जिससे प्राप्त होता शुद्ध स्वभाव।।

इससे ही मिलता है आत्मस्वभाव...आत्मस्वभाव ही मोक्षस्वभाव।
यह ही है परम सुख-स्वभाव...अक्षय अनन्त जीव स्वभाव।।

अध्यात्म साधक इस सुख को पाते...इन्द्र चक्री भी इसे न भोग पाते।
अत्यन्त महान् साधु इसे भोगते...केवली शुद्ध सिद्ध इसे भोगते।।

इसका विकृत रूप अशुभ भाव...इससे उत्पन्न होते विकृत सुख।
प्रशस्त रूप होता शुभ का भाव...इससे उत्पन्न होता प्रशस्त सुख।।

दोनों से परे होता शुद्ध स्वभाव...शुद्ध स्वभाव ही सुख स्वभाव।
इसी हेतु चक्री भी साधु बनते...इसी हेतु 'कनक' के प्रयत्न होते।।

विजयनगर, दिनांक 27.10.2012, रात्रि 11.50 तथा प्रातः 6.15

''सामान्य ज्ञान एवं नैतिक-व्यवहार से विकास''

(छोटे-छोटे कथन एवं छोटे-छोटे काम)

(राग : दुनियाँ में रहना है तो...)

नहीं करो भाई नहीं करो...खोटे काम भी नहीं करो।
नहीं कहो भाई नहीं कहो...खोटी बातें नहीं कहो।।ध्रु.।।

अनर्थ काम भी नहीं करो...योग्य काम को सही करो/(सदा करो)।
हित-मित-प्रिय वचन बोलो...देख-भाल-कर चाल चलो।।

अयोग्य/(अन्यथा) चिन्ता मत करो...योग्य चिन्तन सदा करो।
सनम्र सत्यग्राही (सदा) बनो...सरल-सहज व्यवहार करो।। (1)

निन्दा चुगली ईर्ष्या छोड़ो...दम्भ प्रपंच काम छोड़ो।
उदार सहिष्णु भाव धरो...परोपकार के काम करो।।

पर की चिन्ता मत करो...परोपकार का भाव धरो।
परोपदेशी मत बनो...आत्म-सम्बोधन आद्य करो।। (2)

मर्यादापूर्ण काम करो...शान्त शालीन भाव धरो।
दोष होने पर क्षमा माँगों...दोषी से क्षमा भाव धरो।।

कृतज्ञ बनो उपकारी का...प्रत्युपकार भी करो उसका।
कृतघ्न कभी मत बनो...धन्यवाद करो उपकारी को।। (3)

परिशोधन तो किया करो...प्रतिशोध का न भाव धरो।
परोपकार यदि नहीं सम्भव...धरो नहीं अपकार भाव।।

छोटे भी दुर्गुण त्याग करो...छोटे भी सुगुण ग्रहण करो।
सभी से शिक्षा ग्रहण करो...अनुभव का पाठ पढ़ो।। (4)

सात्विक सादा भोजन करो...फैशन-व्यसन मद छोड़ो।
दिखावा आडम्बर नहीं करो...अपव्यय कभी न कुछ करो।।

महान् उदार लक्ष्य धरो...संकीर्ण स्वार्थ का भाव छोड़ो।
विकास भी होगा भरपूर...'कनकनन्दी' के यह विचार।। (5)

विजयनगर, दिनांक 06.09.2012, मध्याह्न 3.05

''विकास में बाधक अपूर्ण जानकारियाँ''

(प्रायः सामान्यजन में होती है सत्य-तथ्य रहित जानकारियाँ)

(राग : यमुना किनारे श्याम..., छोटी-छोटी गैया...)

प्रायः सामान्यजन कम जानते...सत्य-तथ्य बिना जानकारी रखते।
अमूर्तिक आकाश को नीला जानते...साक्षरी को वर्णमाला युक्त जानते।
रटन्त जानकारी को ज्ञान मानते...कूपमण्डूकसम भाव रखते।।

जन्मान्ध के सम सूर्य ज्ञान रखते...मृगमरीचिका को जल मानते।
दिग्वलय तक आकाश जानते...वर्षास्रोत आकाश सम मानते।
दूरस्थ वस्तु यथा छोटी दिखती...तथा जानकारी खोटी (छोटी) ही होती।।

भूख मिटाने हेतु खाना भी खाते...प्यास बुझाने हेतु पानी भी पीते।
कार्य-कारण सम्बन्ध नहीं जानते...भौतिक कर्मसिद्धान्त नहीं जानते।
तथापि स्वयं को महाज्ञानी मानते...स्वयं की कमियों को भी नहीं जानते।।

अन्य की महानता को नहीं जानते...उल्लू सम सूर्य को न देख पाते।
धर्म का मर्म नहीं जानते...क्रियाकाण्ड को ही धर्म मानते।
रटन्त शिक्षा को ज्ञान मानते...फैशन को आधुनिकता मानते।।

समता न्याय को नहीं जानते...वोटो को ही राजनीति जानते।

सत्ता-आधारित कानून होता...सत्य न्याय का ज्ञान न होता।
रूढ़ि परम्परा को ही जानते...देखा-सुना ही थोड़ा जानते।।

अन्धानुकरण ज्यादा करते...अनुभव ज्ञान नहीं जानते।
ज्ञान-विज्ञान नहीं जानते...दर्शक तर्क से रहित होते।
कार्य-कारण भी नहीं जानते...क्रिया-प्रतिक्रिया कहाँ जानते।।

सब चलता है यह मानते...हमें क्या लेना है यह कहते।
प्रमाद आलस्य से जीवन जीते...अयोग्य काम खूब करते।
ध्यानपूर्वक नहीं सुनते...गम्भीरता से न ज्ञान करते।।

अव्यवस्थित थोड़ा जानते...सूक्ष्म व्यापक नहीं जानते।
इससे वे संकीर्ण घमण्डी होते...ज्ञानी को अज्ञानी सम मानते।
उनके ज्ञान से वंचित होते...स्व-कमियों का फल भोगते।।

इसी से विकास न हो पाता...उन्नतमय न जीवन होता।
महानता न होती सम्भव...भावी सम्भावना न होती सम्भव।
अतः संकीर्णता त्यागो सज्जन!...विकसित करो अपना ज्ञान।।

जिससे तुम्हारा होगा विकास...'कनक' का तुम्हें अतः आशीष।
ज्ञान विकास के उपाय करो...जिज्ञासु व गुणग्राही भी बनो।
सनम्र सत्यग्राहीं भी बनो...ध्यान-अध्ययन सतत करो।।

विजयनगर, दिनांक 24.10.2012, रात्रि 11.44

''अनुभव ही सर्वोच्च शिक्षा व दीक्षा''

(राग : नाव तुझे घेता देवा..., उड़ चला पंछी..., नरेन्द्र छन्द)

अनुभव लेता हूँ मैं हर विषयों से, अच्छे या बुरे या पुण्य पाप से।
जीव या अजीव या सुख-दुःख से, सज्जन या दुर्जन या सत्यासत्य से।।

अनुभव से शिक्षा लेता हूँ विशेष, अनुभव से काम करता हूँ विशेष।
अनुभव से ध्यान-अध्ययन करता, लेखन प्रवचन समता में रहता।। (1)

समस्या का समाधान लेन या देन, प्रश्नों के उत्तर भविष्य का ज्ञान।
धार्मिक प्रभावना शिविर संगोष्ठी, आहार-विहार-निवास पद्धति।।

इससे मुझे बहु लाभ ही होता, अनेक समस्या से मैं बच जाता।
वाद-विवाद व तनाव से बचता, लड़ाई-झगड़ा व दुःखों से बचता।। (2)

दौड़-धूप व रोग से बचता, अयोग्य विचार व काम से बचता।
मानवीय दुर्गुण कामों से बचता, संकीर्ण पंथ मत रूढ़ि से बचता।।

अन्यों को भी अनुभव सिखाना चाहता हूँ, स्व-पर-विश्व भी कल्याण चाहता हूँ।
अनेक सत्यग्राही शिक्षा भी लेते हैं, स्व-पर हित हेतु काम भी करते हैं।। (3)

अनेक अज्ञजन शिक्षा न लेते हैं, स्व-पर-हित से वंचित होते हैं।
उनसे भी मैं अनुभव ही लेता, अनुभव से मैं समता में रहता।।

अनुभव ही सही शिक्षा व दीक्षा, अनुभव ही सही मार्ग प्रदाता।
अनुभव बिना न मिलता मोक्ष, 'कनकनन्दी' सदा मोक्ष पथिक।। (4)

विजयनगर, दिनांक 19.10.2012, मध्याह्न 3.03

शिक्षा का विकृत-संस्कृत रूप

(विकृत शिक्षा का कुफल तथा सुशिक्षा का सुफल)

(राग : उड़ चला पंछी..., सावन का महीना..., यशोदा का नंदलाला..., मेरे गुरुदेव आये आज...)

पढ़ाई करना ही शिक्षा नहीं है, स्कूल की पढ़ाई ही शिक्षा नहीं है।
रटन्त विद्या भी शिक्षा नहीं है, याद रखना भी शिक्षा नहीं है।।1।।

अच्छा नम्बर लाना ही शिक्षा नहीं है, प्रमाण-पत्र पाना ही शिक्षा नहीं है।
भाषण देना ही शिक्षा नहीं है, नौकरी पाना ही शिक्षा नहीं है।।2।।

पुस्तक लिखना ही शिक्षा नहीं है, कविता लिखना ही शिक्षा नहीं है।
कविता गाना ही शिक्षा नहीं है, नृत्याभिनय करना शिक्षा नहीं है।।3।।

लौकिक-धार्मिक शिक्षा यह नहीं है, शिक्षा का यह साधना होना सही है।
साधन यदि साध्य को न करे साधना, साधन न होकर होती है विराधना।।4।।

बाड़ ही यदि खेती को खा जायेगी, बाड़ की उपयोगिता नष्ट होयेगी।
प्रकाश यदि अन्धेरा को न मिटा सका, वह न प्रकाश इसी में नहीं है शंका।।5।।

पढ़ाई से अनुभव यदि न हुआ/(बढ़ा), पढ़ाई करने वाला कभी न हुआ।
जिज्ञासु सत्यग्राही गुणग्राहक, अनुभवी प्रज्ञाशील हितचिन्तक।।6।।

अहित परिहारी गुण में रत, हिताहित विवेकी चारित्रवन्त।
सरल सहज व सादा जीवन, क्षमावन्त धैर्यशील उच्च चिन्तन।।7।।

दयावन्त दानशील परोपकारी, वह ही शिक्षित/(है) केवल नहीं साक्षरी।
ऐसा ही तीर्थंकर बुद्ध ने कहा, विवेकानन्द कृष्णमूर्ति ने भी कहा।।8।।

महात्मा गाँधी विनोबा भावे ने कहा, लाफेन बर्ग कनकनन्दी ने कहा।
अभी भी शिक्षा विपरीत हो गई, तोता रटन्त नकलची हो गई।।9।।

फैशन-व्यसन की जन्मदात्री हो गई, उद्दण्ड उल्श्रंखलता की दादी हो गई।
नौकर बनने की इच्छा पैदा करती, मानसिक दासता को जन्म भी देती।।10।।

आलस्य भ्रष्टाचार को पैदा करती, सदाचार संस्कार का लोप करती।
कामुकता तृष्णा को जन्म भी देती, अश्लीलता शोषण को पैदा करती।।11।।

सुख स्वास्थ्य नींद का नाश करती, सामाजिक समस्याओं की वृद्धि करती।
इन समस्याओं को दूर करने हेतु, ''सा विद्या या विमुक्तये'' यथार्थ हेतु।।12।।

''ज्ञानभार क्रियाहीन'' त्यागने योग्य, ''णाणं पयासणं'' ग्रहण योग्य।
इसी हेतु मानव करे प्रयास, जिससे होयेगा सही विकास।।13।।

'कनक' इसी हेतु सदा प्रयास, विश्वमानव करे मेरा आशीष।
ज्ञान ज्योति से भारत बने उद्योगत, स्व-उद्योत से करे विश्व उद्यत।।14।।

विजयनगर, दिनांक 18.10.2012, मध्याह्न 2.01

(यह कविता डायन लाफेनबर्ग के बेस्ट स्पीच (दैनिक भास्कर) से प्रेरित है।)

चतुर्विध पुरुषार्थ

(आत्म कल्याण युक्त कर्त्तव्य ही पुरुषार्थ)

(राग : शत-शत वन्दन...., नरेन्द्र छन्द)

धर्म अर्थ काम मोक्षमय...होते हैं चार पुरुषार्थ।
धर्म पुरुषार्थ है बीजमय...फल है मोक्ष पुरुषार्थ।।

अर्थ-काममय भजनीय है...दोनों हैं गृहस्थों के योग्य।
दोनों पुरुषार्थ श्रेय नहीं...जिनका लक्ष्य ही मोक्ष पुरुषार्थ।। (1)

सद् गृहस्थाश्रमी जो होते...सेवते धर्मयुक्त अर्थ-काम।
मोक्ष पुरुषार्थ को लक्ष्य कर...करते सांसारिक सब काम।।

धर्म मोक्ष पुरुषार्थ बिन...जो सेवन हैं काम अर्थ।
वे इह-परलोक दोनों में ही...करते हैं काम अनर्थ।। (2)

शारीरिक श्रम करना ही...नहीं है सही पुरुषार्थ।
तथा ही धनमान शिक्षा...यदि है नहीं मोक्ष का लक्ष्य।।

शारीरिक श्रम करना ही...होता है व्यायाम विशेष।
तथा ही अर्थ काम सेवन...संसार-वर्द्धक ही संक्लेश।। (3)

धार्मिक रीति-रिवाज पालन...नहीं है सही मोक्ष पुरुषार्थ।
यदि नहीं है भावना में...शान्ति समता-पावन-काम।।

अर्थ काम का सेवन तो...मानव करते विवशवश।
जैसे बाढ़ में कहते हैं...घास-फूस काष्ठ विवशवश।। (4)

चारित्र मोहनीय कर्मोदय व...मैथुन संज्ञा विवशवश।
वेदनीय कर्म के उदय वश...तीव्र वेद उदय से हो विवश।।

अब्रह्म सेवन करता है मानव...इन्द्रिय लालसा से विवश।
इन्द्रिय उत्तेजना से हो (कर) विवश...ज्ञानानन्द से हो वंचित।। (5)

तथाहि है परिग्रह अर्जन...करता भी मानव तृष्णा/(लोभ) से।
परिग्रह संज्ञा से हो विवश...आवश्यक या अनावश्यक।।

दर्शन-चारित्र मोहनीय जब...होते हैं क्षीण से क्षीणतर।
काम-अर्थ दोनों क्षीण भी होते...यथा प्रकाश से होता है तम।। (6)

चारों पुरुषार्थ हैं आर्य संस्कृति...जो है आत्मा की शुद्ध प्रवृत्ति।
जिससे बने आत्मा-परमात्मा..."कनकनन्दी" की है स्व-संस्कृति।। (7)

विजयनगर, दिनांक 10.08.2012, प्रातः 9.47

"तन-मन-आत्मा के स्वास्थ्य के उपाय"

(राग : किसी की आँखों का काजल...)

तन-मन आत्मा से...जो स्वस्थ होता है।
उसे ही यथार्थ से...सुख भी मिलता है।
स्वस्थ्य होने के जो...उपायों को जानता है।
उसके अनुसार चलता...वह पूर्ण स्वास्थ्य पाता।।ध्रु.।।

मन स्वस्थ्य से...तन भी स्वस्थ्य।
तनाव रहित से...मन भी स्वस्थ्य।
क्रोध-मान-माया-लोभ...ईर्ष्या-घृणा-तृष्णा भाव।
इनसे रहित जो होता है...वह तनावहीन होता।। (1) उसके अनुसार...।

तनाव रहित हो...सात्विक भोजन करता।
फैशन-व्यसनों से...दूर जो रहता।
प्राणायाम योगासन...व्यायाम करता।
प्रदूषणों से रहित...निवास भी करता।। (2) उसके अनुसार...।

न्याय-नीति पूर्ण...व्यापार जो करता।
हिंसा-झूठ-चोरी...अब्रह्म त्यजता।

शोषण मिलावट...भ्रष्टाचार छोड़ता।

जो स्व-पर हित हेतु...काम भी करता है।। (3) उसके अनुसार...।

ध्यान-अध्ययन दया दम...सत्य समता में रहता।

क्षमा सहिष्णुता धैर्यशील...सरल-सहज भाव रखता।

आत्मिक स्वास्थ्य को है पाता...जिससे सही सुख को है पाता।

सर्व जीव पाये ऐसा स्वास्थ्य...'कनक' चाहे पूर्ण स्वास्थ्य।। (4) उसके अनुसार...।

विजयनगर, दिनांक 02.08.2012,

(रक्षाबंधन पर्व) प्रातःकाल

प्रबोधन गीत

सम्पूर्ण विकास के बाधक कारण

(विफलताओं के विविध कारण)

(राग : कसमे वादे...(तू ही तेरा परम सत्य है...))

विकास न होने का कारण...मैं अन्वेषण कर रहा हूँ।

देखा सुना पढ़ा अनुभवा...मैं यहाँ लिख रहा हूँ।।...(ध्रुवपद)

जो सच्चा अच्छा व पक्का...नहीं होने पर भी

स्वयं को मानता श्रेष्ठ(है)...उसका विकास न होता (है)/(रूक जाता है)

जो अपूर्ण ज्ञान है रखता...उसका विकास न होता (है)

अल्पज्ञ होने के कारण...उसे घमण्ड आ जाता (है)...(1)

अव्यवस्थित ज्ञान होने से...अनुभव रहित होने से

सही कार्य नहीं होता है...काम बिगड़ भी जाता है

आत्मविश्वास रहित जो...दीनता अहंभाव युक्त

जो किंकर्त्तव्यविमूढ़...होता विकास से रहित...(2)

जो अनुशासन रहित होता...समयानुबद्ध से रिक्त
जो परावलम्बन युक्त...वह विकास से है रिक्त
अपेक्षा उपेक्षा सहित...वह श्रेष्ठ विकास से रिक्त...(3)

सुद्रव्य क्षेत्र काल भाव...इनसे जो होता वञ्चित
उनका भी विकास न होता...उपयोग न उपलब्धि का
जो प्रमाद आलस्य युक्त...जो एकाग्रमन से रिक्त
जो दिखावा नकल युक्त...वह होगा विफलता युक्त...(4)

जो कार्य-कारणों को न जानता...उपादान-निमित्तों को न मानता
भाग्य-पुरुषार्थ युक्त न होता...वह विकास रहित होता
जो सदाचार रिक्त होता...जो आदर्श नहीं पालता
जो फैशन-व्यसन सेवता...उसका विकास दूर रहता...(5)

जो अन्याय अत्याचार युक्त...हिंसा झूठ कुशील सहित
भ्रष्टाचार मिलावट करता...दुःख संकट से युक्त होता
जो कलह-झगड़ा करता...मिथ्या अपलाप निन्दा करता
ईर्ष्या-द्वेष/(घृणा) तृष्णा सेवता...उसका विकास कभी न होता...(6)

जो गुणी-गुरु जन न सेवता...दया दान सेवा न करता
जो विपरीत ही सोचता...अवश्य विनाश उसका होता
जो आगे-पीछे न सोचता...विवेक रहित जो होता
जो मन्यमाना काम करता...विकास उसे मान्य न करता...(7)

इन कमियों से दूर जो होता...सच्चा अच्छा व पक्का होता
क्रमबद्ध पुरुषार्थ है करता...अनुभवी-विवेकी होता
सुख सम्पन्न विकास करता...दुःख दैन्य से रहित होता
अनुभव व आगम कहता...'कनकनन्दी' को यह भाता...(8)

विजयनगर, दिनांक 07.08.2012, मध्याह्न 1.12

विवध राग :

1. सुवर्ण पात्री मंगल आरती (मराठी)...
2. करता हूँ वन्दना...
3. दुनियाँ में रहना है तो...

उत्तममार्दवधर्म विशेष

विनय से गुण-शोभते

(राग : छोटी-छोटी गैया...)

विनम्र भाव ही विनय होता...अष्टमद से रहित होता।

विनय होता मोक्ष का द्वार...विनय रहित गुण बेकार।।ध्रु.।।

विनय से शोभते गुण अशेष...विनय से मिलता ज्ञान विशेष।

विनय से मन प्रसन्न होता...विनय से वैरभाव न होता।। (1)

मद रहित से सम्यक्त्व होता...जिससे ज्ञान सुज्ञान होता।

सुज्ञान से सच्चा चारित्र होता...तीनों से मोक्ष-मार्ग बनता।। (2)

गुण-गुणी में ही विनय होता...दुर्गुणी प्रति न विनय होता।

विनयवन्त होता सज्जन...अविनयी जन होता दुर्जन।। (3)

अनम्र रावण का हुआ विनाश...दुर्योधन का भी तथाहि नाश।

विनयी विभीषण राजा भी बने...पञ्च पाण्डव तथाहि बने।। (4)

मद से पाप अनेक होते...विनम्रता से पाप नशते।

सुगुण जन विनम्र होते...'कनकनन्दी' को सुगुण भाते।। (5)

विजयनगर, दिनांक 20.09.2012, रात्रि 3.24

'पुष्प की आत्म-कथा'

(राग : तुम दिल की..., फूल तुम्हें भेजा है..., पूछ मेरा क्या नाम रे...)

पुष्प मेरा नाम है, पुष्पित होना काम है।
कोमल सुन्दर सुवासिता में, विशेष मेरा नाम है।।

फल बीज का मैं जनक हूँ, भक्ति पूजा का मैं प्रतीक हूँ।
मकरन्द का मैं हूँ स्रोत, चित्र वास्तु में हूँ सज्जित।। (1)

स्वागत सत्कार में आगे रहता, शृंगार सज्जा में भी रहता।
बसन्त ऋतु का मैं हूँ राजा, सिर पे चढ़ाते मुझे भी राजा।।

अनेक रोगों को मैं दूर करता, सुगन्धी से मन प्रसन्न होता।
मानसिक रोगों को मैं दूर करता, पुष्प आयुर्वेद में वर्णित होता।। (2)

मेरा वर्णन भी सर्वत्र होता, साहित्य कला कथा में होता।
स्वर्ग से लेकर धरती तक, मेरा प्रयोग विविध होता।।

स्वर्ग में दिव्य पुष्प रूप में, कल्पवृक्षों से मैं मिलता।
पृथ्वी पर वनस्पति में, औदारिक रूप मेरा भी होता।। (3)

सुगन्धी तथा सुन्दरता से, आकर्षित होते मधुप आदि।
मुझसे मधुपान करके, प्रसन्न होकर नृत्य करते।।

उड़-उड़कर अन्य पुष्प से, मकरन्द का पान करते।
परागण का (वे) काम करते, जिससे फल बीज बनते।। (4)

इससे पशु-पक्षी जीवित होते, मानव-कीट-पतंग-पलते।
कर्मभूमि के प्रारम्भ काल से, यह सब काम मुझसे होते।।

मुझसे शिक्षा ले विश्व मानव, जिससे बनोगे महामानव।
'कनक' लिखी अतः कविता, मेरी आत्मकथा की अमर-गाथा।। (5)

विजयनगर, दिनांक 14.09.2012, प्रातःकाल

'देव की आत्मकथा'

(राग : जीना यहाँ-मरना यहाँ..., छोटू मेरा नाम है...)

अमर मेरा नाम है, स्वर्ग मेरा धाम है।
पुण्यकर्म से देवगति में, हुआ मेरा जन्म है।ध्रु.।

उपपाद में (मेरा) होता जन्म, अन्तर्मुहूर्त्त में बनूँ जवान।
दिव्य वस्त्र अलंकार सहित, क्रीडारत रहूँ दीर्घ जीवन।।

दीर्घकाल में भोजन करूँ मैं, मेरे कण्ठ से झरे सुधारस।
श्वास भी लेता हूँ दीर्घकाल में, पुण्य-फल का लेता हूँ रस।। (1)

वैक्रियिक (है) मेरा दिव्य शरीर, अष्ट ऋद्धि से युक्त शरीर।
मल-मूत्र से शून्य शरीर, धातु-उपधातु रिक्त शरीर।।

विक्रिया से रूप धारण करूँ, अनेक-विध रूप को धरूँ।
छोटा बड़ा भी धारण करूँ, दृश्य-अदृश्य शरीर धरूँ।। (2)

तीन ज्ञान को धारण करूँ, रत्नमहलों में निवास करूँ।
देवांगनाओं के साथ मैं रहूँ, पंचकल्याण की पूजा भी करूँ।।

पुण्य-फल का भोग मैं भोगूँ, रोग व आतंक कभी न भोगूँ।
अकालमरण रहित जीऊँ, कृषि व्यापारादि कभी न करूँ।। (3)

यह सब पूर्व जन्म सुफल, दान-दया-सेवा पुण्य का फल।
हिंसा-झूठ-चोरी रहित फल, सरल-सहज-मार्दव फल।।

तथापि यहाँ से न मिले मोक्ष, संयम बिना न मिले मोक्ष।
मानव में (ही) पूर्ण संयम होता, आत्म-साधना से मोक्ष मिलता।। (4)

अतएव मैं मानव बनना चाहूँ, संयमी बन के मोक्ष मैं चाहूँ।
संयम का यहाँ सुख कहाँ है, तृष्णा ईर्ष्या जन्य दुःख यहाँ है।।

अतएव (हे) मानव! शिक्षा तू लो, तृष्णा ईर्ष्या से मुक्त तू हो।
अतएव 'कनक' (श्री) रची कविता, शिक्षा लेने हेतु जीवन गाथा।। (5)

विजयनगर, दिनांक 13.09.2012, रात्रि 11.57

'सेवा का उद्देश्य एवं फल'

(सेवा, पूजा, आराधना, संगति, नौकरी-चाकरी का उद्देश्य एवं फल)

(राग : शायद मेरी शादी..., तुम दिल की...)

मानव उसकी सेवा करता, पूर्ति हो जिससे इच्छा की।
गुण के हेतु गुणी की पूजा/(सेवा), दुर्गुण हेतु दुर्गुणी की।।

ताप की सेवा शीत दूर हेतु, ताप दूर हेतु शीत की।
पानी की सेवा प्यास दूर हेतु, क्षुधा-शान्त हेतु अन्न की।। (1)

धन प्राप्ति हेतु धनी की सेवा, ज्ञान प्राप्ति हेतु ज्ञानी की।
शान्ति प्राप्ति हेतु शान्त की सेवा, अशान्त हेतु अशान्त की।।

मोही की सेवा से मोह प्राप्त होता, निर्मोही होता निर्मोही से।
दुर्गन्ध सेवा से दुर्गन्ध मिलती, सुगन्ध हेतु सुगन्ध की।। (2)

भोग के हेतु भोगी की सेवा, वैराग्य हेतु वैरागी की।
प्रकाश हेतु दीप की सेवा, अन्धेरा हेतु तम की।।

आवश्यकता की पूर्ति हेतु ही, सेवा की होती प्रवृत्ति।
वीतरागी को न धन चाहिए, गंजा को नहीं कंगा की।। (3)

इच्छा प्रेरित प्रवृत्ति होती, प्रवृत्ति सूचक इच्छा की।
न वचन होता अन्तर्जल्प बिन, आत्म बिन न चेतना की।।

आत्मा की सेवा से आत्मा की प्राप्ति, जड़ की सेवा से जड़ की।
'कनकनन्दी' चाहे आत्मोपलब्धि, तदनुकूल करे प्रवृत्ति।। (4)

विजयनगर, दिनांक 17.09.2012, रात्रि 2.34

''दुःख निवृत्ति व आवश्यकता से आविष्कार''

(शोध-बोध-खोज-निर्माण-निर्वाण की अन्तर्सम्बन्ध शृंखला)

(राग : कुहू-कुहू बोले..., ओ बसन्ती पवन पागल...)

दुःख निवृत्ति व आवश्यकता से, आविष्कृत होते ज्ञान-विज्ञान।
लौकिक से आध्यात्मिक तक, यंत्र से लेकर परिनिर्माण।।

भोगप्रधान भोगभूमि में, कल्पवृक्ष से वस्तु मिलती थी।
क्षुधा शान्त व जीविका निर्वाह, उन वस्तुओं से होती थी।। (1)

भोगभूमि/(उस काल) में न होता था रोग, नहीं होता था प्राकृतिक प्रकोप।
कलह-विद्वेष युद्ध-महायुद्ध, नहीं होते थे कृष्यादि शिल्प।।

नहीं होते थे सामाजिक संस्थान, शिक्षा के या राजनैतिक।
गुरु शिष्य व न्यायालय सैनिक, न शोध-बोध हुआ आध्यात्मिक।। (2)

भोगभूमि के अन्त में हुए नाश, जब हुए कल्पवृक्ष विशेष।
क्षुधादि से संत्रस्त हुए वे लोग, कृष्यादि का शोध हुआ अशेष।।

इससे बने सामाजिक संस्थान, शिक्षा संस्कृत व ज्ञान-विज्ञान।
लौकिक से अलौकिक शोध हुए, भौतिक से आध्यात्मिक बोध हुए।। (3)

राजा-महाराजा व सेठ-साहूकार, चक्रवर्ती व विद्वान् विद्याधर।
जब न पाये शान्ति अपार, शान्ति प्राप्ति हेतु हुए आतुर।।

इसी हेतु विशेष हुए शोध, तर्क न्याय दर्शन विविध।
आत्म-परमात्म का हुआ बोध, परमात्मा प्राप्ति हेतु हुए सन्नद्ध।। (4)

इसी हेतु राजादि हुए तत्पर, गृह (मोह) त्याग कर बने मुनिवर।
ध्यान-अध्ययन से आत्मा को शोधा, समता-साधना से आत्म प्रबोधा।।

जिससे बने वे केवली सिद्ध, अनन्त ज्ञान, वीर्य, सुख सम्वृद्ध।
यह ही परम विकास स्थान, 'कनकनन्दी' का परम स्थान।। (5)

विजयनगर, दिनांक 09.09.2012, प्रातःकाल
(वैज्ञानिक चैनल के लिंक प्रोग्राम से प्रेरित कविता)

श्रमिक की आत्मकथा

(लौकिक से आध्यात्मिक तक की)

(चार आश्रम, चार पुरुषार्थ, श्रमण आदि का वर्णन)

(राग : पूछ मेरा क्या नाम रे..., भक्ति बेकरार है..., जीना यहाँ...)

श्रमिक मेरा नाम है, श्रम करना काम है।
कर्मभूमि के आदि काल में, हुआ मेरा जन्म है।।ध्रुवपद।।

भोगभूमि में श्रम के बिना, होता जीवन यापन है2।
कल्पवृक्षों के माध्यम द्वारा, होता जीवन यापन है2।।

श्रम के बिना न हुआ तब, विशेष कुछ विकास है।
शिक्षा संस्कृति ज्ञान-विज्ञान, आध्यात्मिक विकास है।।1।।

कर्मभूमि के आदिकाल में, मनु तीर्थेशों के द्वारां2।
लौकिक आत्मिक विकास हेतु, श्रम की स्थापना द्वारा2।।

असि मसि कृषि वाणिज्य शिल्प, श्रम सेवा के शिक्षण।
आदिनाथ द्वारा हुआ पहले, जीविका निर्वाह स्थापन।।2।।

आत्मिक विकास तथा निर्माण, मोक्ष पथ की श्रम-साधना2।
चतुर्विध आराधना द्वारा, नवकोटी से आत्म साधना2।।

लौकिक श्रमिक रूप में भी, मेरा भी विविध रूप है।
कृषक कुम्भार लोहार सोनार, बढ़ई शिल्पी रूप है।।3।।

विचार आवश्यकता को मैं ही, करता हूँ साकार है2।
मेरे बिना विचार आदि, नहीं ले पाते आकार है2।।

मेरे द्वारा ही उत्पन्न होते, अन्न फल दूध कपास हैं।
मेरे द्वारा ही प्राप्त होती, विभिन्न खनिज वस्तु है।।4।।

मेरे से ही निर्माण होते, मन्दिर गृह वस्त्र भूषण2।
सड़क तालाब केनाल बान्ध, यन्त्र उपकरण यान वाहन2।।

तथापि मुझे हेय मानते, सत्ता सम्पत्ति वाले हैं।
मेरे से ही जीने वाले, कृतघ्न बाबूगिरी वाले (परोपजीवी) हैं।।5।।

आत्मिक विकास हेतु जो श्रम, करते वे महाजन2।
तीर्थंकर बुद्ध ऋषि मुनि, आदि वे होते प्रबुद्ध जन2।।

इसलिए तो जैन साधु को, कहते हैं श्रमण संत।
जैन संस्कृति श्रमण संस्कृति, यह है प्राचीन मत।।6।।

चार पुरुषार्थ चार आश्रम, मेरे से ही प्रारम्भ हुए2।
धर्म अर्थ व काम मोक्ष, चार पुरुषार्थ प्रसिद्ध हुए2।।

ब्रह्मचर्य व गृहस्थाश्रम, यतिव्रत व वानप्रस्थ।
चारों ही आश्रम के मध्य में, श्रम करना यही/(सही) सिद्ध।।7।।

शरीर श्रम से तन स्वस्थ्य, होता मन भी मानसिक श्रम2।
आत्मिक श्रम से आत्म स्वस्थ्य, होता श्रम का फल महान्2।।

मेरा व्यापक स्वरूप लेखन, श्री 'कनक' किया वर्णन।
स्व-पर-विश्वकल्याण के हेतु, मानव करो हे! श्रम।।8।।

विजयनगर, दिनांक 13.09.2012, रात्रि 12.43

''सफलता (विकास) के बाधक कारक''

(राग : नरेन्द्र छन्द, छोटी-छोटी गैया...)

रट-रटैया पढ़ाई चलती रहती, घीस-पिटैया रूढ़ि चलती रहती।
जैसे-तैसे जीवन ढोते रहते, धक्का देकर गाड़ी को चलाते रहते।।ध्रु.।।

सब चलता है भाव को धारण करते, भगवान् भरोसे सब काम चलते।
भाग्य के भरोसे नियति को पालते, जो होगा सो होगा मानते रहते।। (1)

कालवाद का सहारा लेते रहते, पाप काम को शीघ्र करते रहते।
धर्मकाम को कल पर टालते रहते, स्वयं को अजर-अमर मानते रहते।। (2)

प्रशंसा सदा सर्वदा चाहते रहते, निन्दनीय काम सदा करते रहते।
प्रदर्शन तो सदा करते रहते, आदर्श से विमुख होते रहते।। (3)

स्वयं के लिए अच्छा चाहते रहते, अन्य के लिए ओछा चाहते रहते।। (4)

परावलम्बन को स्वाभिमान मानते, फैशन-व्यसन को आधुनिक मानते।
उद्दण्ड उत्श्रृंखलता को स्वाधीनता मानते, मद अविनय को बड़प्पन मानते।।(5)

तुच्छ जानकारी को महाज्ञान मानते, मनमाना करने को श्रेष्ठ-ज्येष्ठ मानते।
संकीर्ण रूढ़ि-मत को धर्म मानते, अनुदार-कट्टर से उसे पालते।। (6)

आलस्य प्रमाद से अस्त-व्यस्त रहते, अव्यवस्थित रूप हर काम करते।
सूक्ष्म-व्यापक-अनुभव से दूर रहते, छोटा-खोटा ज्ञान से अहं करते।। (7)

ऐसे व्यक्ति विकास से दूर रहते, सुख-शान्ति स्वास्थ्य से हीन रहते।
इह-परलोक में भी दुःखी रहते, इसे दूर करने हेतु 'कनकनन्दी' कहते।। (8)

विजयनगर, दिनांक 12.08.2012, प्रातः 9.28

केवल भौतिक विकास बनता है-विनाश का कारण

(नैतिकता-आध्यात्मिकता बिना भौतिकता दुःखदायी)

भौतिक विकास जो नैतिकता बिना है, अन्त में विनाश होता निश्चय है।
नैतिक विकास से सहित विकास है, अन्त में सुखप्रद होता निश्चय है।।

आत्मिक विकास से सहित विकास है, अन्त में मोक्षप्रद होता निश्चय है।
आत्मिक विकास से समग्र विकास है, नैतिक विकास छाया के समान है।।

समग्र वृक्ष में फूल भी फल हैं, विकास होता जब सींचते मूल है।
मूल को काटने से यथा फल मिलता, भौतिक विकास भी नीति बिन होता।।

बीज के बिना यथा वृक्ष नहीं बनता, आत्मिक सुख बिन सब ही व्यर्थ होता।
इसी के हेतु राज्य त्यागे हैं तीर्थंकर, बुद्ध व ऋषि मुनि आचार्य गुणधर।।

जो भोगे राज्य भोग मृत्यु के अनन्तर, नरक निगोद में सहते दुःख घोर।
बहुआरम्भ परिग्रह नरक हेतु कहा, लोभ को पाप का बाप भी अतः कहा।।

भौतिक विकास से लंका का नाश हुआ, माया सभ्यता व ओंकारबाट
/(कम्बोडिया) हुआ।
ग्रीस सभ्यता व कंस का नाश हुआ, विनाश कौरव हिटलर भी हुआ।।

जितने राजा-महाराजा या तानाशाही, आक्रान्ता लुटेरा भ्रष्टाचारी वा कोई।
मंत्री-मुख्यमंत्री-प्रधानमंत्री कोई, सबकी दुर्दशा नीतिहीन से हुई।।

भौतिक विकास तो मोटापा सम होता, डायबिटीज के सम नाना विनाश लाता।।
डायबिटीज यथा अनेक रोग लाता, भौतिक विकास भी बहु विनाश लाता।।

अनीति अत्याचार शोषण भ्रष्टाचार, फैशन-व्यसन व आलस्य अहंकार।
प्रकृति हनन व विभिन्न प्रदूषण, जिससे होते हैं विनाश भयंकर।।

ग्लोबल वार्मिंग अधिक-हीन वृष्टि, बाढ़-अकाल सुनामी जिसका फल।।
ग्लेशियर गलन, प्रजाति विलोपन, विभिन्न रोगों का होता है आक्रमण।।

धनी व गरीब व शोषक-शोषित, जिससे बनता है कृत्रिम अकाल।
जिससे उत्पन्न होता है संघर्ष, युद्ध-महायुद्ध तथा महाप्रलय।।

धर्म में जो लिखा विश्व में जो हुआ, विज्ञान भी उसे सच मान रहा।
अनुभव द्वारा मैंने जो पाया, उसे ही मैंने लेखन किया।।

मानव यदि तू विकास चाहो है, अध्यात्म नैतिक सहित चलो है।
'कनकनन्दी' का आह्वान सुन है! भौतिक तृष्णा को शमन/(संयम) करो है।।

सेमारी, दिनांक 10.11.2011, रात्रि 11.34

संकीर्णता अनेक दुर्गुण-दुष्प्रवृत्ति को जन्म देती है

(राग : यमुना किनारे श्याम...)

संकीर्ण स्वार्थ का बीज बोया न करो, दुःख रूपी फलो को भोगा न करें।
राग-द्वेष-लोभ रूपी पानी न डालो, अपना-पराया रूपी खाद न डालो।

मोह रूपी सूर्य रश्मि दिया न करो, तृष्णा रूपी बाड से रक्षा न करो।
इसी से ज्ञान का विकास नहीं होता, उदार दृष्टिकोण भी नहीं बनता।

चारित्रिक विकास भी नहीं होता, महान् अनुभव भी नहीं होता।
कूपमण्डूकता क़ा भी दुर्गुण आता, महान् लक्ष्य भी दूर हो जाता।

शंकाशील भयालु कृपण होता, स्वार्थ हेतु दूसरों को कष्ट भी देता।
मेल-मिलाप व सहयोग से भी, सदा-सर्वदा ही दूर भी रहता।

सुख-शान्ति व प्रेम संगठन (से) का, कभी भी न आनन्द ले पाता।
हितकारी विवेक जन्म न लेता, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का भान न होता।

न्याय-अन्याय का बोध न होता, सत्य-असत्य परिज्ञान न होता।
आत्मकल्याण का भाव जन्म न लेता, अंधविश्वास का भाव प्रबल होता।

फैशन-व्यसन-पाप जीव करता, शोषण अत्याचार में लिप्त हो जाता।
भ्रष्टाचार व मिलावट करता, आतंकवाद-युद्ध हत्या करता।

संकीर्ण स्वार्थ से सदा अनर्थ होता, मिठा (जहर) विष सम रूचिकर भी होता।
सेवा दान त्याग से वंचित होता, परोपकार को अहितकर मानता।

उदार त्यागी को नीच मानता, स्वार्थ सिद्धि को ही सर्वोपरि मानता।
संकीर्ण स्वार्थ अतः सदा त्यजनीय, 'कनकनन्दी' के यह अनुभव गम्य।

विजयनगर, दिनांक 28.08.2012, प्रातः

''अन्धी आधुनिकता का कुफल''

आधुनिक जीवन शैली से शरीर प्रदूषण रोग-पाप

(फैशन-व्यसन, फास्ट-फूड, प्रसाधन वस्तु, आलस्य से हिंसा एवं रोग)

(राग : यमुना किनारे श्याम...)

आधुनिक दिखावे/(दिखाने) का ढोंग भी छोड़ो, फैशन-व्यसनों का ढंग भी छोड़ो।
हिंसक रोगी बनने का धन्धा भी छोड़ो, मायाचारी दंभ का कुभाव छोड़ो।
पाश्चात्य कुसंस्कृति की नकल त्यागो, महान् भारतीय संस्कृति (को) पालो।।(1)

दिखावे का अहिंसा धर्म न पालो, ''अहिंसा परमो धर्म'' आदर्श पालो/(मानो)।
''जीओ और जीने दो'' सर्वत्र मानो, ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' सूत्र /(भावना) को जानो।
मन-वचन-काय से अहिंसा पालो, करो कराओ अनुमोदना करो।। (2)

बाजारू फास्ट-फूड पिज्जा भी छोड़ो, बिस्कुट पेस्ट्री नमकीन भी छोड़ो।
आचार चटपटे व्यंजन भी त्यागो, बर्गर फ्रेंच फ्राईज चाउमीन भी त्यागो।
पोटेटो चिप्स आइस्क्रीम भी त्यागो, जेलेटी जैली चॉकलेट भी त्यागो।। (3)

जैम शैलेक शैम्पू साबुन त्यागो, च्युइंगम चीज ग्लिसरीन को त्यागो।
सोने-चाँदी के वर्क का प्रयोग त्यागो, चाय कॉफी सनटैन आयल त्यागो।
नेलपॉलिश लिप्स्टिक कॉस्मेटिक्स, त्याग करो टूथपेस्ट माउथवॉश।। (4)

इनमें प्रयोग होते अण्डा मछली, विषाक्त रसायन चर्बी व हड्डी।
गोमांस रक्त व हड्डी का रस, प्रयोग होती है गाय व भैंस की आँत।
अशुद्ध अमर्यादित विभिन्न तत्त्व, अशुद्ध पानी व बछड़ों की भी आँत।। (5)

इससे महान् हिंसा का पाप लगता, निर्दोष पशुओं का हनन होता।
विभिन्न प्रदूषण उत्पन्न होते, तन-मन आत्मा भी रोगी बनते।
भारतीय संस्कृति का लोप भी होता, समय शक्ति धन का अपव्यय भी होता।।(6)

शरीर में विभिन्न रोग भी होते, कब्ज अल्सर हृदयरोग बढ़ते।
ब्लड प्रेशर कैंसर मोटापा बढ़ते, डायबिटीज चक्षुरोग भी होते।
दमा खाँसी सिरदर्द स्मरण ह्रास, तनाव क्रोध चिड़चिड़ापन विशेष।। (7)

सत्तर प्रतिशत हुई रोगों की वृद्धि, भारत में इसलिये हुई समृद्धि।
सांस्कृतिक परम्परा घट रही है, अपसंस्कृति की बाढ़ बढ़ रही है।
इन विकृतियों को दूर करने हेतु, 'कनकनन्दी' की रचना सुरक्षा हेतु।। (8)

इन कारणों से युक्त जीवनचर्या से, यंत्रावलम्बित निष्क्रिय जीवन शैली से।
मोटापा तनाव मधुमेह बढ़ जाते, रक्तचाप कॉलेस्ट्रोल हृदयरोग हो जाते।
बाईस फीसदी (22%) दिमाग विकास घटता, गर्भस्थ शिशु का विकास भी कम होता।। (9)

विजयनगर, दिनांक 29.08.2012, ब्रह्ममुहूर्त्त 6.00

''नकलची (अन्धभक्त) की आत्मकथा''

(अकल बिना नक़ल करने से विभिन्न लाभ)

(राग : छोटी-छोटी गैया..., है अपना दिल तो आवारा..., मनहरण छन्द)

जो अन्य करते (हैं) मैं वैसा करता हूँ। अकल के बिना मैं नकल करता हूँ।।
इससे मुझे अनेक लाभ होते हैं। विचार बिन सब, मेरे काम चलते हैं।। (1)

इससे दिमाग से मैं काम न लेता। आराम से मेरा काम हो चलता।।
दिमाग को खपाने से मैं बच जाता हूँ। खाना-पीना-सोना से मैं जीवन जीता हूँ।।(2)

नकल से मुझे और भी लाभ होते हैं। भेड़ चाल वाले लाखों साथी मिलते हैं।।
जिससे मेरे दोष गुण भी हो जाते। समाज में मुझे उच्च स्थान मिल जाते।। (3)

शिक्षा खान-पान, चाल-चलन भाषा में। धर्म-परम्परा रीति-रिवाज ड्रेस/(वेश) में।।
नकल करके मैं श्रेष्ठ-सभ्य बनता हूँ। जीन्स/(केनवास) पहन के अप टू डेट
(आधुनिक) बनता हूँ।। (4)

कागजी/(कोरी) डिग्री (प्राप्त कर) से मैं ज्ञानी बनता हूँ। शादी पार्टी में अधिक
खर्च करता हूँ।।
प्रतिष्ठा प्राप्ति हेतु यह नकल करता हूँ। तथा ही फैशन-व्यसन आडम्बरों में।।(5)

देखा-देखी करके श्रेष्ठ बनूँ सभी में। मैंने सुना है नकल से श्रेष्ठ न बनते।।
यह तो कोरी कथा हम इसे न मानते। हम तो महान् बन गये देखा-देखी करके।।(6)

जिसे श्रेष्ठ बनना है चलो अन्ध बन के। मैं तो नकल करता हूँ हीरो-हीरोईन के।।
साक्षरी-मूर्ख पाश्चात्य-अपसंस्कृति के। धनी ढोंगी नगरवासी खिलाड़ी व नेता के।।(7)

मेरे सम नकलची आलसी प्रमादियों के। गुण-गुणी का हम नकल नहीं करते।
उनके अनुसार हम नहीं चलते। उनका अनुसरण मूर्ख जन करते।। (8)

तन-मन-आत्मा से भी श्रम करते। 'कनकनन्दी' सदा नकल नहीं करते।।
अन्ध भक्ति को वे सदा हेय मानते। इसलिये हम सदा उनसे दूर रहते।।
उनकी बातों को हम भी नहीं मानते।। (9)

विजयनगर, दिनांक 08.08.2012, रात्रि 12.20

''केवल भौतिक विकास अन्ततः विनाश के कारण''

(राग : इतनी शक्ति हमें देना...)

भौतिक विकास ही केवल होता, नैतिक प्राकृतिक विनाश होता।
शोषण भ्रष्टाचार खूब बढ़ते, शोषक-शोषित भेद भी बढ़ते।।ध्रु.

इसी से विषमताएँ बढ़ती/(फैलती), अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती।
प्राकृतिक विप्लव (भी) अधिक होते, मानवीय क्रान्तियाँ भी खूब होती।।

जीवन के आधारभूत विविध तत्त्व, विकृत तथा विनाश भी होते।
जंगल पशु-पक्षी कीट-पतंग वृक्ष, जल वायु मृदादि में (ये) होते।। (1)

गरीब मजदूर किसान असमर्थ, अधिक होते हैं ये भी शोषित।
जिससे विकास नींव ढह जाती, जिससे विकास विनाश हो जाता।।

लंका सभ्यता माया सभ्यता, रोमन व मैसोपोटामिया सभ्यता।
राजतंत्र व राजा महाराजा, तानाशाही की (यथा) विनाश है गाथा।। (2)

अभी के भौतिक यांत्रिक विकास, विकास सहित होता है विनाश।
तथा ही व्यक्ति परिवार समाज, राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय विकास।।

भौतिक विकास (तो) भोजन सम है, नैतिक विकास पानी के सम है।
प्राणवायु सम आत्म विकास (है), उत्तरोत्तर विकास महान्/(श्रेष्ठ) है।। (3)

आत्मिक विकास से हर विकास (होता) संभव, सर्वोच्च सुख इससे मिलता।
अतएव आत्मिक विकास करणीय, 'कनकनन्दी' के लिए वरणीय।। (4)

विजयनगर, दिनांक 19.08.2012, प्रातः - 6.18
(यह कविता हिस्टोरी चैनल की प्रेरणा से बनी)

''अण्डे तथा मद्य से भी अधिक हानिकारक तम्बाखू''

(अण्डे से होने वाला नुकसान धूम्रपान की तुलना में 1/3 है)

(राग : तुम दिल की धड़कन में...)

मैं कुछ तम्बाखू के बारे में...कर रहा हूँ वर्णन।
जो कुछ मैंने शोध किया...तथा ही वैज्ञानिक जन ने।।ध्रु.।।

तथा ही धर्म धर्मग्रंथों के...आधार से कर रहा हूँ वर्णन।
किया हूँ विस्तृत वर्णन मैंने...मेरे विभिन्न ग्रंथों में।।

उत्पादन से निर्माण तक...तथा क्रय-विक्रय सेवन से।
मन-वचन-काय से तथा कृत कारित...अनुमोदना व संगति से।। (1)

तम्बाखू से होते तन-मन रोग...तथा त्रस-स्थावर हिंसा भी।
मृदा-जल-वायु प्रदूषित होते...नाश होते धन-तन-मन-धर्म भी।।

तम्बाखू की एक पत्ती की रक्षा...निमित्ते जो विष प्रयोग होता।
हजारों त्रसजीव मारे जाते हैं...दो-तीन बार विष प्रयोग से।। (2)

उस विष से पुनः मृदा-जल...वायु भी प्रदूषित होते।
जिससे लाखों थल-जल-वायु के...जीव भी विनष्ट होते।।

तम्बाखू में होते चार हजार विष...विशेषतः होते ग्यारह विष।
तम्बाखू सेवन तथा सम्पर्क से...होते हैं विभिन्न कैंसर तन में।। (3)

हृदय रोग खाँसी दमा एम्फीजीमा...अवबोध शक्ति क्षीण मन से।
ब्रेन हेमरेज डायबिटीज उच्च रक्तचाप...अरूचि उत्पन्न भोजन से।।

अण्डे सेवन से जो होता...दिल के रोग इस मानव को।
धूम्रपान से होता तीन गुना...दिल के रोग इस मानव को।। (4)

एक सिगरेट के सेवन से पाँच मिनट...आयु क्षीण होती मानव में।
तम्बाखू सेवन हृदय रोग की...सम्भावना बढ़ जाती है मानव में।।

प्रथम विश्वयुद्ध में जितनी मृत्यु हुई...चार वर्ष में इस धरती में।
तम्बाखू सेवन से डेढ़ वर्ष में...उतनी मृत्यु हुई इस धरती में।। (5)

तम्बाखू से तीन सौ लोगों की...मृत्यु होती है इस भारत में।
सड़क दुर्घटना की मृत्यु से भी...बीस गुणा है इस भारत में।।

हर सौ धूम्रपान करने वालों में...एक चौथाई मरते धूम्रपान से।
पृथ्वी भर के रोगी में तीस प्रतिशत...होते भारत देश के।। (6)

मद्य-व्यसन में गर्भित है...तम्बाखू सेवन धर्मग्रंथों में।
तथापि सेवन क्रय-विक्रय व...उत्पादन निर्माण करते धार्मिकजन।।

जो यह करते वे न होते धार्मिक...न ही नैतिक न ही शिक्षित।

न ही राष्ट्रभक्त न जनसेवक...न ही दानदाता न ही रक्षित।। (7)

अतएव मद्य माँस सम ही तम्बाखू...सर्वथा ही वर्जन करो।
'कनकनन्दी' का आशीष तुम्हें...धार्मिक नैतिक सुखी भी बनो।।

विजयनगर, दिनांक 11.08.2012, अपराह्न 5.30
(सुविज्ञसागर जी के भावानुसार बनी रचना)

''दूसरे क्या बोलेंगे-क्या सोचेंगे की समीक्षा''

''किससे वचन ग्रहणीय तथा अग्रहणीय''

(राग : यमुना किनारे श्याम..., छोटी-छोटी गैया...)

सत्य-हित-पथ्य बातें सुना भी करो...मनन-चिन्तन द्वारा स्वीकार करो।
इससे अन्य बातें सुना न करो...सुनने पर भी उसे मत स्वीकारो।
समीक्षा सहित शिक्षा ग्रहण करो...गुण-दोष विवेक से समीक्षा करो।। (1)

दयालु प्रामाणिक व हितोपदेशी, हिताहित विवेक सह जो अनुभवी।
उनके ही वचन है ग्रहण योग्य, अन्य के वचन हो ग्रहण-योग्य।
अधिसंख्य मानव न होते सुयोग्य, जिनके वचन हो ग्रहण योग्य
/(उनके वचन नहीं ग्रहण योग्य)।। (2)

अधिसंख्य मानव होते रायचन्द जी, छिद्रान्वेषणकारी ईर्ष्यालु वृत्ति।
विघ्न संतोषी वाले कषायवृत्ति, दाल-भात में होते बालचन्द जी।
निन्दारस प्रेमी या चाटुकारी वृत्ति, गपोडशंख समान वाचालवृत्ति।। (3)

धूर्त लोमड़ी सम या शकुनीवृत्ति, मंथरा सम या वैश्या सम प्रवृत्ति।
ठग या चोर सम शोषण प्रवृत्ति, मच्छर जोंक के सम नीच प्रवृत्ति।
बगुला के समान कुटिल वृत्ति, शिकारी के समान जिनकी वृत्ति।। (4)

इनके कथन ग्रहण योग्य न होते, भले वे शिक्षित बुद्धिशाली क्यों न होते।

सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि युक्त क्यों न होते, किसी भी धर्म (या) जाति के क्यों न होते।
माता-पिता भाई-बन्धु समाजजन, विश्वास योग्य नहीं होते (हैं) अयोग्य जन।।(5)

तीर्थंकर बुद्ध महामानव आदि, अयोग्य वचन को न देते सम्मति।
जिससे महामानव गुणी वे हुए, स्व-पर कल्याण हेतु कार्य वे किये।
महामानवों को भी दुर्जन खूब सताते, उन्हें भी उपदेश देते व निन्दा करते।। (6)

दूसरों के अनुसार जो हैं चलते, दूसरों के अनुसार जो बोलते।
दूसरों के अनुसार जो हैं सोचते, उन्हें ही (तो) गुलाम या पराधीन कहते।
वे ही नकली-फैशनी-व्यसनी होते, अन्धानुकरणशील कायर होते।। (7)

कौरव नाश हुए शकुनी हेतु, राम वनवासी हुए मंथरा हेतु।
ऐसा ही अनेक जन नाश हो जाते, जो भी असत्यमय कथा मानते।
अतएव महात्मा एकान्त में रहते, जन सम्पर्क से रहित मौन रहते।। (8)

सत्यानुसार सोचते तथा चलते, वे ही सत्यनिष्ठ प्रमाणिक भी होते।
मौलिक चिन्तक स्वाधीनचेता वे होते, हिताहित विवेकशील वे होते।
वे ही प्रगतिशील चिन्तक सज्जन होते, स्व-पर उपकारी स्वाधीन होते।। (9)

वे ही दार्शनिक वैज्ञानिक भी होते, समाज सुधारक साधु-संत भी होते।
इनसे ही उपकृत मानव जाति, ज्ञान-विज्ञान उनसे होती उत्पत्ति।
मानव जाति के मार्गदर्शक होते, ''कनकनन्दी'' को ऐसे जन
/(गुण) ही भाते।। (10)

विजयनगर, दिनांक 12.07.2012, रात्रि 10.30

(मुनिश्री सुविज्ञसागर जी गुरुदेव की प्रार्थना से यह रचना बनी।
लुईस अंल हे रचित ''यू कैन हील योर लाईफ'' पुस्तक से प्रेरणा प्राप्त कविता।)

(रहस्यवादी-शोधपूर्ण-व्यापक कविता)

चीरहरण

(''मानवीय कुकृत्य'')

(राग : छोटी-छोटी गैया..., गजानना श्री...(मराठी), आधुनिक पढ़ी-लिखी..., आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

चीरहरण! चीरहरण!...द्रौपदी का होता रहा चीरहरण।
द्रौपदी तो थी एक प्रतीक/(दृष्टान्त) मात्र...चीरहरण होता सभी के साथ।।ध्रु.।।

महिला का होता है चीरहरण...पुरुषों का भी होता है चीरहरण।
धर्म का भी होता है चीरहरण...सदाचार का भी होता चीरहरण।। (1)

नीति-नियमों का भी होता चीरहरण...राजनीति का भी होता चीरहरण।
कानून-व्यापार का होता चीरहरण...संस्कृति भाषा का होता चीरहरण।। (2)

एक द्रौपदी का हुआ चीरहरण...राजसभा के मध्ये चीरहरण।
स्वपरिवार के मध्ये चीरहरण...वीरों के मध्य में चीरहरण।। (3)

नीतिज्ञों के मध्य में चीरहरण...न्यायविदों के मध्य में चीरहरण।
भीष्मप्रतिज्ञ के मध्ये चीरहरण...प्रजापालक के मध्ये चीरहरण।। (4)

ऐसा ही होता स्त्रियों के साथ...तथाहि पुरुष बच्चों के साथ।
पशु-पक्षी व प्रकृति के साथ...धर्म सदाचार नीति के साथ।। (5)

जब तक मानव स्वार्थी रहेगा...क्रोधी मानी लोभी कामी रहेगा।
तब तक चीरहरण होता रहेगा...अयोग्य काम होता रहेगा।। (6)

सत्ता-सम्पत्ति से प्रभुत्व वाले...बुद्धि-कौशल से सहित वाले।
विशेषतः करते हैं चीरहरण...रक्षक रूप में भक्षक वाले।। (7)

राजा-महाराजा/(समर्थ वाले) ही/(भी) युद्ध करते...आक्रमण हत्या लूट मचाते।
बलात्कार-शिकार-द्यूत खेलते...चीरहरण व चोरी करते।। (8)

नियम बनाते व उसे तोड़ते...कुटुम्ब-जन की हत्या करते।
ऐसा ही व्यक्ति राष्ट्र में होता...धार्मिक पन्थ मत में होता।। (9)

अधिक शक्ति से अधिक होता...कम शक्ति से कम भी होता।
इतिहास में इसके साक्ष्य लिखित...अभी तो सर्वत्र प्रत्यक्ष होता।। (10)

दुर्योधन व रावण कंस...जरासन्ध तथा बक राक्षस/(चैंगेज खाँ)।
मय सभ्यता व रोमन राज्य...ग्रेट ब्रिटेन के विस्तारवाद/(क्रूर साम्राज्य)।। (11)

तथा ही कट्टर राष्ट्रीय-धार्मिकवाद...आतंकवाद या जातियवाद।
अन्धानुकरण आधुनिकवाद...फैशन-व्यसन जो अतिवाद।। (12)

इत्यादि द्वारा होते (हर) चीरहरण...जिससे होता सत्य हनन।
न्याय-शान्ति-शील का हनन होता...मानव जाति का पतन होता।। (13)
इसकी निवृत्ति हेतु उपाय करो...स्वार्थ क्रोधादि को समग्र छोड़ो।
सत्य-समता व शान्ति को पालो...'कनकनन्दी' कहे सत्य/
(हित) ही बोलो।। (14)

'कनकनन्दी' की भावना/(प्रतिज्ञा) यह...कभी न करूँ मैं चीरहरण।
नवकोटी से मैं रहूँ निवृत्त...योग्यरीति से नाशूँ चीरहरण।। (15)

विजयनगर, दिनांक 14.07.2012, रात्रि 1.10

''विकास में बाधक एकांगी भाव''

(मानव में एकांगी भाव अधिक होता है, सर्वांगीण भाव कम)

(राग : नरेन्द्र छन्द)

विचित्र परिणाम के मानव देखे...एकांगी भाव के बहु देखे।
सर्वांगीण उन्नत के कम ही देखे...बहुगुणी दुर्लभ प्रायः देखे।।

कुछ भक्तिवाले मानव देखे...ज्ञान-विज्ञान रहित बहु देखे।
किन्तु दया सेवा दानशील देखे...भोला-भाला सरल नम्र देखे।।

बुद्धिजीवी मानव बहुत देखे...तोता रटन्त वाले प्रायः देखे।
शुष्क वाद-विवाद वाले देखे...दया सेवा दान से रिक्त देखे।।

(कोरा) धार्मिक चारित्र वाले देखे...आत्मज्ञान रहित बहु देखे।
बाह्य क्रियाकाण्ड प्रायः देखे...सत्य-साम्य-शान्ति से रिक्त देखे।।

सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि वाले देखे...क्रूर शोषक बेईमान देखे।
दया सेवा दान से रिक्त देखे...अहंकारी दिखावा वाले देखे।।

प्राचीन परम्परा वाले देखे...संकीर्ण अज्ञानी प्रायः देखे।
भेदभाव ईर्ष्या घृणा युक्त देखे...ढोंग पाखण्ड क्रिया वाले देखे।।

आधुनिक कहाने वाले देखे...फैशन-व्यसनी प्रायः देखे।
ज्ञान-विज्ञान-शील रिक्त देखे...आलस्य प्रमादी स्वार्थी देखे।।

सर्वांगीण उन्नत कम ही देखे (जो)...श्रद्धा प्रज्ञा चारित्र युक्त होते।
उदार सहिष्णु नम्र वाले...सरल सहज गुणी वाले।।

आध्यात्मिक सज्जन गुणीजन...होते हैं महान् सन्तजन।
वे अलौकिक अप्रसिद्ध होते...'कनक' को ऐसे ही गुण भाते।।

विजयनगर, दिनांक 04.11.2012, मध्याह्न 2.58

(सूचना-इस विषय के विशेष परिज्ञान के लिए आचार्य कनकनन्दी जी कृत (1) निकृष्टतम स्वार्थी क्रूरतम प्राणी : मानव, (2) मानव इतिहास एवं मानव विज्ञान, (3) संस्कृति की विकृति, (4) मानवीय निकृष्ट संघर्ष का इतिहास आदि ग्रंथों का अध्ययन करें।)

'राग की विनाशलीला'

(राग : सायोनारा..., इतनी शक्ति हमें..., प्रथम तुला वन्दितो..., इक परदेशी मेरा...).

राग को आग सर्वज्ञ ने कहा/(सर्वज्ञ कहते), जो अरिहन्त वीतरागी है।

राग होने से द्वेष भी होता, क्रिया-प्रतिक्रिया सिद्धान्त है।।

राग होने से आसक्ति होती, आसक्ति से आकर्षण है।
1. आकर्षण भी विकर्षण युक्त, जिससे होता घर्षण है।।
2. आकर्षण से विकर्षण होता, जिससे होता घर्षण है।।

घर्षण से ताप उत्पन्न होता, ताप से उत्पन्न आग है।
उस आग से तन-मन जलते, आत्मा भी होता उत्तप्त/(संतप्त) है।।

उससे कर्म का आस्रव होता, जिससे होता बन्धन है।
उससे संसार भ्रमण होता, जिससे अनन्त दुःख है।।

राग आग से अति भयंकर, जलाये अनन्त वार है।
भौतिक आग सीमित जलाये, भाव-आग बहुवार है।।

कैकेयी के राग/(भाव) के कारण, श्रीराम को वनवास हुआ।
राग से सीता हरण हुआ, जिससे रावण विनाश हुआ।।

राज्य राग से हुआ महायुद्ध, कौरव-पाण्डव मध्य में।
राज्य विस्तार राग के कारण, आक्रमण/(युद्ध) होता पृथ्वी में।।

धन राग से भ्रष्टाचार होता, चोरी मिलावट शोषण (वृत्ति) भी।
काम राग से मैथुन होता, बलात्कार अशीलता वैश्यावृत्ति।।

राग की पूर्ति जब न होती, द्वेष जन्म लेता प्रतिक्रिया में।
जिससे संघर्ष युद्ध भी होते, विनाशलीला होती राग भाव से।।

राग अभाव से द्वेष न होता, जिससे आती है साम्य अवस्था।
साम्य अवस्था में ही यथार्थ सुख, नहीं होती संक्लेश अवस्था।।

इसी अवस्था की प्राप्ति हेतु (ही), चक्रवर्ती त्यागता है राज्य वैभव।
इसके लिए ही 'कनकनन्दी', सतत करता है सच्चा प्रयास।।

विजयनगर, दिनांक 15.09.2012, रात्रि 11.44

नारकी की आत्मकथा तथा आत्मव्यथा

(राग : शायद मेरी..., छोटू मेरा नाम है..., भक्ति बेकरार है...)

नारकी मेरा नाम है, नारत रहना काम है।
द्रव्य क्षेत्र व काल भाव से, संत्रस्त रहना काम है।।ध्रु.।।

जन्म से लेकर मरण तक, हर क्षण हर काम में/(से)।
परस्पर को दुःख देते हैं, तन-मन विक्रिया से।।

कष्टकर उष्ण शीत से, क्षुधा तृष्णा की पीड़ा से।
असुरकुमार देवों से, समस्त शरीर रोग से।। (1)

अशुभतर भाव लेश्या से, विषाक्त भोजन पानी से।
संक्लेशित भाव काम से, दुःख पाते पूर्व पाप से।।

पूर्व भव के पाप विशेष, बह्वारंभ परिग्रह अशेष।
क्रोध मान माया लोभ विशेष, हिंसा झूठ चोरी कुशील।। (2)

सप्त व्यसन व अष्टमद से, मिथ्यावश कुभाव से।
जो पाप किये विशेष रूप से, मैं भोग रहा हूँ अशेष से।।

मरना भी मैं चाह रहा हूँ, आत्महत्या भी कर रहा हूँ।
पाप के फल भोगने हेतु, इसी गति में ही जी रहा हूँ।। (3)

शुभ भी करना चाहता हूँ, तो भी शुभ न कर पाता हूँ।
तीव्र पाप की शक्ति के आगे, अच्छा काम (भी) न कर पाता हूँ।।

मैं हूँ तीन ज्ञान के धारी, तो भी मैं हूँ दुःखियारी।
मैं हूँ विक्रिया तन धारी, तो भी भोगता हूँ दुःख भारी।। (4)

रत्न के बिल मैं रहता हूँ, कृष्यादि काम न करता हूँ।
स्वछन्द भाव से रहता हूँ, तो भी बहु दुःख भोगता हूँ।।

अनावश्यक (भी) क्रोध करता हूँ, मारकाट भी करता हूँ।

कठोर कटु वाणी बोलता हूँ, मनमाना काम करता हूँ।। (5)

पीड़ानुभव व देव प्रबोध से, जाति स्मरणादि हेतु से।
सम्यक्त्व जब उत्पन्न होता, सम्यग्ज्ञानी भी बनता।।

तो भी सभी दुःख दूर न होते, सभी कुकृत्य न त्याग होते।
अतएव पाप न करो मानव, 'कनक' अतः लिखा मेरा निबन्ध।। (6)

विजयनगर, दिनांक 13.09.2012, मध्याह्न 2.15

(व्यंग्यात्मक कविता)

''रुपया की महिमा''

(राग : ओडिसी, छुप-छुप खड़े हो..., मनहरण छन्द, सावन का महीना, पटरानी राग)

धन्य-धन्य रुपये तू अतिमनोहर। तुमसे मोहित होते सब लोभी नर।।
तुम्हारा मुखदर्शन करने मात्र से। अतिप्रसन्न होते तेरे भक्त ही मन से।।
तेरी प्राप्ति हेतु करते विविध उपाय। न्याय से अन्याय तक अनेक उपाय।।
पढ़ाई नौकरी सेवा/(सेना) राजनीति न्याय। धार्मिक क्रियाकाण्ड व्यापार व उद्योग।।
कला नृत्य संगीत व सिनेमा सर्कस। वेश्यावृत्ति कृषिकार्य सरकारी सर्विस।।
आतंकवाद युद्ध हत्या चोरी अपहरण। मिलावट शोषण व पशु-पक्षी हनन।।
येन-केन प्रकार से तेरी प्राप्ति ही चाहते। इसी हेतु विविध विघ्न संकट सहते।।
बाईस परिषह जैन साधु भी सहते। आत्मा की प्राप्ति हेतु सब उपसर्ग सहते।।
तेरी प्राप्ति हेतु तेरे भक्त अधिक सहते। बाईस सहस्त्र/(हजार) परिषह उपसर्ग भी सहते।।
जैन साधु माता-पिता आदि को त्यागते। तेरे भक्त तेरे हेतु माँ-बाप को मारते (त्यागते)।।
तेरे भक्त तेरे हेतु धर्म-कर्म भी करते। तेरी प्राप्ति ही स्वर्ग मोक्ष सर्वस्व मानते।।

तुम्हारा रसपान जो करता है भक्त। मद्यपान से भी अधिक होता मदमस्त।।
जिससे वे तुम्हारी ही आराधना करते। इसके लिए धर्म का भी बलिदान करते।।
जिससे तुम्हारा उन्हें आशीर्वाद मिलता। यहाँ भी दुःख मिलता, नरक भी मिलता।।
तुमसे विरक्त जो होते साधु संत/(जन)। उन्हें न मिलता तुम्हारा कभी आशीर्वाद।।
इसलिये 'कनक (नन्दी)' न बना तेरा भक्त। आत्मदेवता की भक्ति में बिताता वक्त।।

विजयनगर, दिनांक 10.08.2012, मध्याह्न 3.08

''संकीर्ण स्वार्थी क्रूरतम प्राणी : मानव''

(राग : आत्मशक्ति से ओतप्रोत..., सुवर्ण पात्री...(मराठी))

अभी तक के ज्ञात जीव में...सबसे क्रूर है मानव।
शास्त्र पुराण इतिहास लिखित...विज्ञान से है प्रमाण/(सिद्ध)।।ध्रु.।।

पाँचों पाप सप्त व्यसन...आठ मद मानव ही सेवता।
पच्चीस कषाय तीन सौ त्रेसठ...मत मानव ही करता।।

आक्रमण लूटपाट युद्ध महा...युद्ध मानव ही करता।
प्राकृतिक दोहन शोषण...विध्वंस भी मानव ही करता।। (1)

बलात्कार परस्त्री गमन...वेश्यागमन मानव ही करता।
माँस-शाकाहार दुग्धाहार...सर्वाहार मानव ही करता।।

युद्धबन्दी नौकरप्रथा...दासप्रथा मानव ही करता।
गर्भपात आत्महत्या दहेज...हत्या मानव ही करता।। (2)

स्वार्थ संकीर्णता व कषायों...से आवेशित होकर।
फैशन-व्यसन पापमद करता...है मानव होकर।।

इन कारणों से वह धर्म में...भी है करता बहु पाप।
जीवबलि भेदभाव हिंसा...प्रतिहिंसा-रूपी पाप।। (3)

मद्य-मांस नशा सेवन...परस्त्री सेवन करता तथा।
आक्रमण युद्ध हत्या गुलाम...बनाने की कुप्रथा।।

छुआछूत-ईर्ष्या-घृणा...नारी पुरुष में भेदभाव।
परम पावन धर्म के हेतु...करता है पापों के भाव।। (4)

ऐसा ही व्यापार व राजनीति...में भोग-उपभोग हेतु।
परम्परा व स्वास्थ्य कारण...सन्तान प्राप्ति के हेतु।।

सुख-समृद्धि वर्षा के कारण...युद्ध में विजय के हेतु।
करता है कुकाम विभिन्न...तथा ही भविष्य हेतु।। (5)

मानव स्व-शक्ति बुद्धि...साधना व उपकरण।
पाप हेतु अधिक करता...दुष्कर्म व दुराचरण।।

इस हेतु मानव से ही...विध्वंस अधिक है होता।
जिससे दुःखी यहाँ होता...मरकर नरक भी जाता।। (6)

यदि मानव स्वशक्ति आदि...का करेगा सदुपयोग।
इह-परलोक में वह करेगा...है सुख-उपभोग।।

मानव से महामानव...तथाहि बनेगा भगवान्।
इसी हेतु ही 'कनकनन्दी' भी...सतत प्रयत्नवान्।। (7)

विशेष परिज्ञान हेतु करो...मेरे साहित्य अध्ययन।
गद्य-पद्यमय अनेक साहित्य...किया मैंने लेखन।।

विजयनगर, दिनांक 23.08.2012, रात्रि 3.13

(यह कविता विदेशी वैज्ञानिक चैनल तथा हिस्ट्री चैनल से भी प्रभावित एवं प्रेरित है।)

एकता से विकास, एकता हीन से विनाश

(संगठन में शक्ति विघटन से क्षति)

(राग : आत्म शक्ति से..., चौपाई)

एकता सूत्रों के स्वरूप को जानो, उसकी महान् शक्ति पहचानो।
एकतामय है विकास (के) उपाय, विघटन है विनाश (के) आशय/(उपाय)।।

अनेकान्त में एकता समाहित, एकान्त में है एकान्त तिरोहित।
उदार सहिष्णु भाव में एकता, संकीर्ण कट्टर भाव (से) न एकता।।

परस्पर उपग्रहो एकता सिखाता, सहयोग द्वारा विकास होता।
वसुधैव कुटुम्ब है उदार भाव, स्वार्थपरता में अनुदार भाव।।

सद्भाव/(समन्वय) प्रेम से एकता बढ़ती, राग-द्वेष से एकता घटती।
सत्य समता है एकता का प्राण, ईर्ष्या घृणा से एकता का हनन।।

एकता हेतु है क्षमा अपनाओ, सहज-सरल भाव मन में लाओ।
विनम्र मधुर विराट बनो, भेद-भाव से ऊपर उठो।।

एकता में शक्ति है कलिकाल में, योग्यता शक्ति मन्द युग में।
तीर्थंकर गणधर रिक्त काल में, शलाका अवतारी शून्य काल में।।

रेशा सें जब रस्सी बनती, शक्तिशाली को भी बान्ध डालती।
प्रबल वेग से जब पानी बहता, चट्टानों को भी चूर्ण करता।।

धागा की एकता से वस्त्र बनता, ईंटों के द्वारा महल बनता।
जल बिन्दुओं से समुद्र बनता, भौतिक विश्व अणु से बनता।।

एकता हीन से दुर्दशा होती, देश/(भारत) की गुलामी से शिक्षा मिलती।
एकता हीन न समाज होता, केवल भीड़ न समाज होता।।

व्यक्ति समूह ही समान होता, सद्भाव सहयोग/(एकता सद्भाव) सहित होता।
एकता शक्ति से करो विकास, 'कनकनन्दी' का तुम्हें आशीष।।

मोक्षमार्ग है रत्नत्रयमय, पृथक्-पृथक् न मोक्षमार्ग।
विश्वास ज्ञान चारित्रमय है, सम्यक् समन्वयमय मार्ग।।

परसाद, दिनांक 04.03.2013, मध्याह्न 2.30

(इस विषय की विशेष जानकारी हेतु कवि लिखित ''संगठन के सूत्र, जैन एकता एवं विश्व शान्ति'' आदि कृतियों का अध्ययन करें।)

''सर्व अनुशासन के मूल आत्मानुशासन''

(आत्म अनुशासन महा अनुशासन)

(राग : मराठी-देहाची तिजोरी..., उघड़ दार देवा...आता...उघड़)

आत्म-अनुशासन महा-अनुशासन, जो सर्व शासन का मूल होता है।
व्यक्ति से लेकर वैश्विक स्तर के, लौकिक से आत्मिक स्तर के होता।।ध्रु.।।

यथा मूल से वृक्ष की वृद्धि होती, फूल-फल सह वृक्ष की स्थिति होती।
अनुशासनों की तथा ही स्थितिवृद्धि, आत्मानुशासन से ही संभव होती।।

मनानुशासन से आत्मानुशासन होता, इन्द्रिय व कषाय संयम युक्त होता।
शरीर समय व साधन संयम होता, जिससे सर्व शासन भी संभव होता।। (1)

आत्मानुशासन से शक्ति प्रगट होती, कार्यक्षमता में भी तीव्रता आती।
अन्य भी प्रभावित सहज से होते, समता शान्ति में तीव्रता आती।।

तीर्थंकर बुद्ध राम मसीह गाँधी, आत्मानुशासन से पाई प्रसिद्धि।
उनसे प्रभावित अन्य सहज होते, पशु भी तीर्थंकर के भक्त बनते।। (2)

तथाहि जो शासक राजा व्यक्ति, आचार्य शिक्षक संघनायक आदि।
आत्मानुशासन से जो युक्त रहते, उनके प्रभाव भी उत्तम होते।।

जो तानाशाही (व) उद्दण्ड क्रूर होते, अव्यवस्थित असंयमी भी होते।
वे स्व-पर-विश्व के अपकारी ही होते, स्व-पर-विश्व के नाशक होते।। (3)

संयमित अग्नि-वायु-नदी जो होती, उपकार युक्त प्रवाहित भी होती।
असंयमी होते हैं बहु अपकारी, धन-जन-प्रकृति के नाशनकारी।।

तथाहि अनुशासन व उद्दण्डता में जानो, विकास नाशक क्रमशः मानो।
अनुशासन ही सदा पालनीय, 'कनकनन्दी' द्वारा सदा ग्रहणीय।। (4)

बावलवाड़ा, दिनांक 15.12.2012, रात्रि 9.33

''कोई भी कार्य अचानक (अकारण) नहीं होता''

(असन्तुलित भाव से होती हैं दुर्घटनाएँ)

(राग : तुम दिल की धड़कन...)

भाव के अनुसार भावी होता है, यह सर्वत्र सत्य सिद्धांत है।
यह मुख्य कार्य कारण नियम, अन्य सब होते हैं गौण/(बाह्य) नियम।।

दुर्घटना या असफल हो जाना, अचानक नहीं हो जाते हैं।
कारण के बिना कार्य कभी भी, संभव ही नहीं हो पाता है।। (1)

चिन्ता तनाव व नशा के कारण, जब मन अस्थिर होता है।
काम भी व्यवस्थित नहीं हो पाता, बार-बार दोष भी हो जाता है।।

हर कार्य के होते अनेक कारण, कोई समझ पाये या न पाये।
माने या न माने कोई भी, कारण श्रृंखला सभी की होती है।। (2)

राम वनवास या सीता हरण, सुग्रीव मित्रता या रावण मरण।
सीता के अपवाद या वनगमन, सबके होते हैं कार्य कारण।।

अंजना सती का जो हुआ अपमान, श्रीपाल को हुआ कुष्ठ (व) अपमान।
उपसर्ग हुआ जो पार्श्वनाथ पर, कारण श्रृंखला का हैं अन्तिम परिणाम।। (3)

रोग-शोक या संयोग-वियोग, जन्म-मरण या हो अपमरण।
आत्महत्या या दुर्घटना आदि, सभी होते हैं सहित कारण।।

अतिवृष्टि अनावृष्टि बाढ़ भूकम्प, सुनामी बवण्डर व भूस्खलन।
ग्लोबल वार्मिंग या ग्लेशियर गलन, प्राकृतिक प्रकोपादि होते सहकारण।। (4)

विज्ञान अभी इसे खोज रहा है, धर्म तो इसे पहले से मान रहा है।
कार्यकारण या निमित्त उपादान, क्रिया-प्रतिक्रिया भी इसी का नाम।।

अनेकान्त सिद्धान्त या कर्मसिद्धान्त, मनोविज्ञान व बिसलोड सिद्धान्त।
ये सब सिद्धान्त भी यह सिद्ध करते, कोई भी काम अचानक नहीं होते।। (5)

आकस्मिक हठात् या अचानक, नियति या एकान्त कालवाद।
जो होना सो होयेगा मिथ्यावाद, अपरिवर्तनशील भाग्यवाद।।

ये सब एकान्त हैं मिथ्यावाद, अविचारित रम्य है तुच्छवाद।
विकास हेतु यह सब त्याज्य, 'कनकनन्दी' गहे सत्य-तथ्य।। (6)

बावलवाड़ा, दिनांक 17.2.2012, मध्याह्न 1.04

''असफल होने के कारण''

(प्रमाद आलस्य बहाना व्याज से मिलती है असफलता)

(राग : यमुना किनारे श्याम...)

प्रमाद आलस्य व्याज/(बहाना) किया न करो, विकास का मार्ग रोका न करो।
आत्मानुशासी स्वावलम्बी ही बनो, विकास का मार्ग प्रशस्त करो।।

पंद्रह प्रकार होते प्रमाद जानो, क्रोध[1]-मान[2]-माया[3]-लोभ[4]-मिथ्यात्व[5] मानो।
हास्य[6]-रति[7]-अरति[8]-शोक[9]-भय[10]-जुगुप्सा[11], पुंवेद[12]-स्त्रीवेद[13]-नपुंसक[14] भेद।।
आलस्य है कर्त्तव्य में निरूत्साह भाव, शक्त्यनुसार करने का निरुद्यमी भाव।।(1)

देखा जायेगा करूँगा हो जायेगा भाव, अभी नहीं बाद में कुंठा युक्त भाव।
इनसे युक्त बहाना/(व्याज) भाव न करो, अकारण को भी कारण सही न करो।
टालमटोल की नीति नहीं अपनाओ, कर्त्तव्य छोड़कर विफल नहीं बनो।। (2)

यथा कोर्ट में पेशी बार-बार देते, वर्षों-वर्षों फैसला टाले जाते हैं।
लाखों-करोड़ों धन खर्च होते हैं, दोनों पक्ष में अनेक मरे जाते हैं।
द्रव्य-क्षेत्र-काल का बहाना/(व्याज) न करो, भाव में दुर्बलता स्वार्थ न भरो।।(3)

मनमानी काल्पनिक विचार छोड़ो, उच्च विचार सह कर्त्तव्य करो।
संकीर्ण-स्वार्थ छोड़ो उदार बनो, दान-दया-सेवा हेतु तत्पर बनो।
नैतिक-आध्यात्मिक विकास करो, अन्धानुकरण परापेक्षी न बनो।। (4)

शारीरिक मिथ्या बहाना छोड़ो, पेटदर्द सिरदर्द ढोंग न करो।।
पढ़ाई व्यापार जन्म-मरण ढोंग, सर्दी-गर्मी-वर्षा का जो कुछ ढोंग।।
चाय पीना बीड़ी पीना सोना घूमना, नहीं सुना नहीं पढ़ा छोड़ो बहाना।। (5)

याद नहीं भूल गया नहीं विचारा, अन्य नहीं करता का छोड़ो बहाना।
स्व का विकास स्व के द्वारा ही करो, बाह्य निमित्तों का सहयोग भी जोड़ो।
स्व-पर विश्व हेतु कर्त्तव्य करो, 'कनक' हित वचन स्वीकार करो।। (6)

बावलवाड़ा, दिनांक 11.12.2012, मध्याह्न 2.55

लक्ष्य प्राप्ति के उपाय

(तर्ज : मोक्षपद मिलता है धीरे-धीरे...)

लक्ष्य तो मिलता है.../(तो मिले है) धीरे-धीरे
लक्ष्य निर्धारो संकल्प करो, दृढ़ता लाओ
धैर्य से बढ़ो, लक्ष्य को पाओगे धीरे-धीरे (ध्रुवपद)

चिन्तन करो विवेक धारो विघ्न-बाधा को पार भी करो,
अनुभव आयेगा धीरे-धीरे।। (1) लक्ष्य...

संयम धरो ज्ञान बढ़ाओ, अनपेक्षित की उपेक्षा करो,
अपेक्षा प्रतीक्षा दंभ को छोड़ो।। (2) लक्ष्य...

संकीर्ण स्वार्थ को दूर भगाओ, स्वावलम्बी व साहसी बनो,
संकल्प-विकल्प संक्लेश त्यागो।। (3) लक्ष्य...

दबाव प्रलोभन भय पछाड़ो, ख्याति पूजा लाभ मोह को त्यागो,
तीव्र होयेगी गति तेरी।। (4) लक्ष्य...

लक्ष्यनिष्ठ हो सम्पूर्ण शक्ति, लक्ष्य प्राप्ति में हो पूर्ण प्रवृत्ति,
लक्ष्य प्राप्ति होगी पूर्ण तेरी।। (5) लक्ष्य...

लक्ष्य ही तू ही प्राप्य भी तू ही, परिणाम भी परिणाम तू ही,
''कनक'' लक्ष्यमय सम्पूर्ण तू ही।। (6) लक्ष्य...

बावलवाड़ा, दिनांक 14.12.2012, रात्रि 10.12

''पाश्चात्य से प्रायोगिक शिक्षा लेकर भारत बने विश्वगुरु''

(शिक्षा एवं धर्म के प्रायोगिककरण से भारत बनेगा महान्)

(राग : आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

विश्वगुरु भारत को अभी सीखना होगा पाश्चात्य से शिक्षा।
भारतीय महान्/(आत्मिक) शिक्षा सहित, पाश्चात्य देशों की जीवन्त शिक्षा।।ध्रु.।।

भारत में महान् शिक्षा निहित है, प्राचीन् ग्रन्थों में अनेक विध।
लौकिक से आध्यात्मिक तक, आत्म-परमात्मा से ब्रह्माण्ड तक।।

कथनी में है करनी में नहीं, रूढ़ि परम्परा व ग्रन्थ लिखित।
इसलिये तो भारत देश, गुलाम रहा है शताब्दी तक।। (1)

अभी भी स्वतंत्र भारत में नहीं, किसी भी विधा का प्रयोग रूप।
नैतिक वैज्ञानिक कानूनी, राजनीति संस्कृति आध्यात्म रूप।।

भौतिकवादी पाश्चात्य देश, प्रायोगिक रूप/(कारण) से हुए समृद्ध।
उनसे प्रायोगिक शिक्षा लेकर, भारतीय बनो सही समृद्ध।। (2)

उनसे (भी) अधिक समृद्ध होने की, संस्कृति विद्यमान हमारे देश।

हमारी संस्कृति आध्यात्मिक है, जिससे समृद्ध हमारा देश।।

तथापि पाश्चात्य से सीखने योग्य, आत्मविश्वास व धैर्य साहस।
प्रेम एकता परोपकार, सेवा दान सम्मान प्रोत्साहन।। (3)

गुण ग्रहण व शोध-बोध-खोज, नव-निर्माण व मौलिक काम।
समीक्षा शिक्षा वैश्विक चिन्तन, पशु-पक्षी व पर्यावरण रक्षा।।

अच्छे कार्य हेतु पुरस्कारदान, ज्ञानी-गुणी को मानना अच्छा।
कर्त्तव्य-निष्ठा व प्रामाणिकता, व देश-प्रेम व शरीर श्रम।। (4)

अनुशासन व समयबद्धता, नियम पालन व स्वच्छता काम।
इत्यादि कारणों से पाश्चात्य देश, भौतिक से बने न्यायिक/(नैतिक) देश।।

न्यायिक से नैतिक तथा धार्मिक, अभी बन रहे हैं आध्यात्म देश।
प्रायोगिक बिना हमारा देश, आध्यात्मिक से बना है भ्रष्टों का देश।। (5)

भ्रष्ट से श्रेष्ठ बनने के हेतु, अनुकरण करो है पश्चात्य देश।
कभी भारत के लोग पाश्चात्य को, मान रहे थे असभ्य देश।।

असभ्य आज सभ्य बन गये, धार्मिक बन गये आज असभ्य।
बालक से भी शिक्षा ग्रहणीय, यदि मिलती है उत्तम शिक्षा।। (6)

हिताहित प्राप्ति परिहार समर्थ, यह ही होती है उत्तम शिक्षा।
श्रेष्ठ ज्ञान आचरण कारण, भारत बना था विश्व का गुरु।।

'कनकनन्दी' का प्रयास सदा, भारत बने विश्व का गुरु।
इसी हेतु शोध-बोध-प्रचार में, संलग्न सदा है 'कंनक गुरु'।। (7)

परसाद, दिनांक 14.02.2013, मध्याह्न 1.18

(यह कविता वैज्ञानिक आइन्स्टीन एवं वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग की जीवनी की किताब से भी प्रेरित है।)

''श्रेष्ठता से मिलता सम्मान''

(राग : शत-शत वन्दन..., सावन का महीना...)

श्रेष्ठता/(उच्चता) से सम्मान प्राप्त होता है, साधना व संघर्ष से प्राप्त होता है।
प्रगति व दृढ़ता से स्थाई होता है, अन्यथा तिरस्कार प्राप्त होता है।।

सम्मान प्राप्त हेतु जो काम करता, उसका सम्मान न स्थिर रहता।
श्रेष्ठता से सम्मान स्वतः मिलता, उसका सम्मान स्थिर रहता।।

सम्मान प्राप्ति की जो लालसा होती, निष्काम भावना नहीं रहती।
कमियाँ व दुर्बलता अवश्य होती, सम्मान से/(की) च्युति अवश्य होती।।

श्रेष्ठ हेतु ही जो श्रेष्ठ बनता, अपेक्षा प्रतीक्षा रहित होता।
आशा-निराशा से परे रहता, उसका सम्मान तो स्थिर रहता।।

यथा तीर्थंकर बुद्ध ईसा मसीह, आत्म साधक जो साधु निस्पृह।
श्रेष्ठ ज्येष्ठ क्लिष्ट के जो काम करते, सम्मान की तृष्णा बिना सम्मान पाते।।

श्रेष्ठता में वे पूर्ण शक्ति लगाते, ईर्ष्या-तृष्णा से वे रहित होते।
जिससे श्रेष्ठता को वे प्राप्त करते, श्रेष्ठता से सम्मान को प्राप्त करते।।

इससे विपरीत नीच रावण सम, श्रेष्ठता बिना न मिले सम्मान।
सत्ता-सम्पत्ति बुद्धि से न मिले सम्मान, भले इसी से मिले दुराभिमान।।

सिद्धि से प्रसिद्धि स्वतः मिलती, प्रसिद्धि तो सिद्धि की छाया ही होती।
सिद्धि प्राप्त करते महान् जन, 'कनक' अतः करे ज्ञान अर्जन।।

डेरी (विजयनगर से विहार करके रात्रि विश्राम स्थल),
दिनांक 28.11.2012, रात्रि 10.44

स्वयं के द्वारा स्वयं को महान् बनाओ

(राग : रघुपति राघव..., हे राम! हे राम!...)

अन्य को क्या/(क्यों) प्रभावित करना रे!/(हे!) वन्दे,

स्वयं को प्रभावित करे!। हे मम/(हे प्रबुद्ध) आत्मन्!
अन्य को प्रकाशित के पहले, स्वयं को प्रकाशित किया करो।।

दूसरों को उपदेश देने के पहले, स्वयं को उपदेश दिया करो।
डूबते हुए को पार लगाने हेतु, स्वयं को तैरना सीखा करो।।

जो सूर्य स्वयं प्रकाशित होता/(है), अन्य भी प्रकाशित होते स्वयं ही।
जो फूल स्वयं सुगन्धित होता/(है), पवन सुगन्धित होते स्वयं ही।।

तानाशाही स्वयं को न शासित करता, अन्य पर शासन करता वह भी।
तीर्थंकर स्व-पर शासन करते, विश्व शासित होता स्वयं ही।।

श्याम विवर/(ब्लैक हॉल) न प्रकाशित करता, दूसरों को निगलता विशेष वही।
जो स्वयं आदर्श नहीं होता है, दूसरों को कष्ट देता भी वही।।

स्वयं ही श्रेष्ठ चुम्बक बन जाओ, गुणग्राही आकर्षित होंगे स्वयं ही।
मकरन्द भरा कुसुम कानन से, मधुप आकर्षित होते स्वयं ही।।

गुणों को स्वयं में विकसित करो, गुणी बन जाओगे स्वतः ही स्वयं ही।
स्वयं में ही जब संतुष्ट रहोगे, संतोष सुख पाओगे स्वयं ही।।

स्वयं की उपलब्धि स्वात्मोपलब्धि, जिसकी उपलब्धि स्वतः तू ही।
मृग नाभि में कस्तूरी विराजे, बाहर ढूँढ़ने से मिलेगी नहीं।।

यह है परम आध्यात्म रहस्य, आध्यात्म ध्यानी जानते सही।
स्वयं के द्वारा ही स्वयं को पाओ, 'कनकनन्दी' की साधना यही।।

खेरवाड़ा, दिनांक 24.01.2013, रात्रि 4.05

असाधारण पुरुषों की क्यों होती है अलौकिक वृत्ति?

(राग : आत्मशक्ति..., नरेन्द्र छन्द)

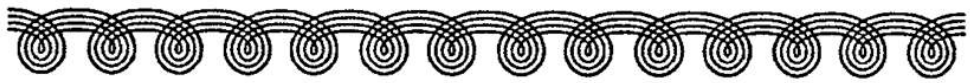

दार्शनिक वैज्ञानिक लेखक सन्त साधक होते हैं अति विचित्र/(विशेष)।
साधारण लोगों से होते हैं विपरीत तथा पालते हैं उच्च चारित्र।।

असाधारण प्रतिभा न होती सामान्य में, तथा न होता है महान् लक्ष्य।
गतानुगतिक नकलची होते सत्ता-सम्पत्ति ही होता है लक्ष्य।।

इसी से भिन्न वे महान् होते, दार्शनिक आदि विचित्र/(विशेष) लोग।
सत्य-तथ्य के शोध-बोध हेतु, करते वे सदा भिन्न प्रयोग।।

इसी हेतु वे सदा प्रयत्न करते, तन-मन समय व साधन से।
तुच्छ कार्य हेतु उनके पास, नहीं रहता तन-मन साधन व समय।।

जिससे वे फैशन-व्यसन व आडम्बर दिखावा नहीं करते।
लड़ाई-झगड़ा व गप्पे लगाना, आलस्य प्रमाद भी नहीं करते।।

स्व-स्व लक्ष्य प्राप्ति हेतु वे, भोग-विलासिता से दूर रहते।
धन-जन-मान प्रतिष्ठा लाभ को, तुच्छ मानकर दूर रहते।।

इसलिए इनके रहन-सहन व वेशभूषा भी भिन्न होते।
कम वस्त्र रखते या कौपीन धरते उच्च सन्त तो नग्न रहते।।

कोई बाल बढ़ाते या मुण्डन करते जैन साधु केशलोंच करते।
शाकाहार करते कम बार खाते जैन साधु एक बार आहार लेते।।

एकान्त शान्त स्थान में रहते, मौन अध्ययन चिन्तन करते।
असामाजिक सा वर्तन करते, संकीर्ण रूढ़ि से परे वे होते।।

अतएव अन्य इन्हें भ्रष्ट मानते, बुद्धिहीन व पागल मानते।
इनकी निन्दा चुगली करते, अपमान करते कष्ट भी देते।।

इसके दृष्टांन्त अनेक प्रसिद्ध, तीर्थंकर बुद्ध ईसा मसीह।
सुकरात गैलोलियो मीराबाई अनेक साधु-संत लेखक चिन्तक।।

इतिहास पुराण में यह सब पढ़ा हूँ, देश-विदेशों के ग्रन्थ में पढ़ा हूँ।
जीवन में बहु अनुभव किया हूँ, 'कनक' इसी से मैं पाठ पढ़ा हूँ।।

खेरवाड़ा, दिनांक 02.02.2013, रात्रि 12.28
(यह कविता वैज्ञानिक आइंस्टाइन की जीवनी से भी प्रभावित है।)

''संगीत से होते हैं तन-मन स्वस्थ''

(राग : होठों पे सच्चाई..., है प्रीत जहाँ...)

भारतीय शास्त्रीय संगीत है, जो तन-मन स्वस्थ करता है।
भाव उदात्तिकरण द्वारा, मन को प्रसन्न करता है
/(मन सरोज भी खिल जाता है)।।ध्रु.।।

न्यूरोट्रांसमीटर स्राव होता, जब संगीत सुनते हैं।
जिससे तनाव दूर होता, मूड़ भी प्रभावित होता है।।

पेन मासिंग एंड्रोफिन्स, दिमाग से स्रावित होता है।
तनाव से भी मुक्ति मिलती, सहन शक्ति भी बढ़ती है।। (1)

इम्यूनोग्लोबिन-ए बढ़ने से, शरीर में रोग न होता है।
रोग-प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती, संक्रमण रोधक क्षमता है।।

कार्टिसोल हार्मोन स्राव से, तनाव भी दूर होता है।
ब्रेनस्टेम भी अच्छा बनता, हृदय रोग नहीं होता है।। (2)

स्मरण शक्ति की वृद्धि होती, तथा सुनने की क्षमता भी।
इससे दिमाग साफ होता, अकेलापन भी होता दूर।।

चिन्ता व बेचैनी दूर होती, माँसपेशियों की ऊर्जा बढ़ती।
पार्किसन व अलजाइमर्स, दूर होते हैं डिप्रेशन भी।। (3)

ध्यान केन्द्रित (भी) संगीत करता, खाँसी जुकाम संगीत भगाता।
प्रेम संगठन भी संगीत बढ़ाता, परमब्रह्म का ज्ञान कराता।।

अनिद्रा रोग भी दूर होता, मनोरंजन स्वस्थ होता।
भक्ति संगीत की पावन धारा, 'कनकनन्दी' को लगती प्यारी।। (4)

भावना मृदु-मधुर होती, दुर्घटना की संख्या घटती।
रॉक संगीत से क्रूरता बढ़ती, दुर्घटना की संख्या बढ़ती।।

भारतीय संगीत है महान्, आनन्द प्यार बढ़ाता है।
धैर्य शान्ति निश्छलता देता, आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ाता है।। (5)

छाणी, दिनांक 14.01.2013
(मकर संक्रान्ति), रात्रि 10.42
(यह कविता आर्यिका सुनीतिमती की भावना से बनी)

''सुखी होने के धार्मिक एवं वैज्ञानिक कारण''

(राग : छोटी-छोटी गैया..., शत-शत वन्दन...)

सुखी होने के कारणों को जानो, स्वयं के अन्दर उसे पहचानो।
प्रमुख कारण आत्मा ही जानो, विकार भाव दुःख ही मानो।।ध्रु.।।

सच्चिदानन्द है आत्मस्वभाव, सत्य-शिव-सुन्दर आनन्द भाव।
राग-द्वेष-मोह दुःख स्वभाव, पापकर्म से दुःख ही सम्भव।।

पावन भाव से सुख उपजे, पुण्यकर्म भी कारण दूजे।
दान दया सेवा परोपकार, ध्यान-अध्ययन श्रेष्ठ विचार।।

विज्ञान में अभी सिद्ध हुआ है, हैप्पी हार्मोंस सिद्ध हुए हैं।
डोपामाइन व सेरोटोनिन, ऑक्सीटोसिन व एण्ड्रोफिन।।

कार्टिसोल हार्मोंस उत्पन्न होने से, प्रसन्न भाव होता मन में।
डोपामाइन उत्पन्न होता अच्छे काम से, महान् लक्ष्य के प्राप्त होने से।।

सम्मान से होता सेरोटोनिन स्राव, जिससे विश्वास होता उद्भव।
अविश्वास या हीनभाव से, विपरीत प्रभाव होता स्राव में।।

सुरक्षात्मक विश्वास भाव से, ऑक्सीटोसिन का होता स्राव है।
इसी भाव के विपरीत होने से, विपरीत स्राव होता दिमाग में।।

एण्ड्रोफिन स्राव होता हँसी से, प्राकृतिक निश्चलमय हँसी से।
दर्द समय में भी स्राव होता, जिससे दर्द कम हो जाता।।

कार्टिसोल प्रेरित करता भाव को, खतरों से आगाह करता मन को।
संकट में यह सहयोगी बनता, उत्साह हेतु भी प्रेरित करता।।

धर्म में वर्णन विस्तार से हुआ, विज्ञान में अभी कुछ शोध हुआ।
'धर्मसर्वसुखाकरो' बताया गया, संक्षिप्त में वर्णन 'कनक' किया।।

बावलवाड़ा, दिनांक 21.12.2012, प्रातः 7.05

भ्रमण एक लाभ अनेक

(भ्रमण के धार्मिक-शैक्षणिक-स्वास्थ्यप्रद कारण)

(राग : कौन परदेशी..., छोटी-छोटी गैया...)

भारत में भ्रमण का महत्त्व रहा, धर्म-ज्ञान-स्वास्थ्य का/(में) महत्त्व रहा।
तीर्थंकर बुद्ध ऋषि तथा गृहस्थ, भ्रमण करते थे हेतु सहित।।

भ्रमण से प्राकृतिक ज्ञान भी होता, सभ्यता-संस्कृति भाषा का होता।
भूगोल-इतिहास-कला-संगीत, नदी-नाल पर्वत तीर्थों का होता।।

पशु-पक्षी नदी-नाल पर्वत-गुफा, वृक्ष घास गुल्म तथाहि लता।
वन-उपवन पुष्प-निकुञ्ज, खेती-खलिहान तथा मैदान।।

विभिन्न खान-पान रीति-रिवाज, विभिन्न भाषा व बोली का ज्ञान।
विभिन्न संस्कृति का ज्ञान भी होता, कर्त्ता-अकर्त्तावादी का होता।।

विभिन्न महापुरुषों का ज्ञान भी होता, तीर्थंकर बुद्ध ऋषि मुनि का होता।
दार्शनिक वैज्ञानिक कवि का होता, लेखक संगीत वीरों का (भी) होता।।

पर्व उत्सव मेला यात्रा का होता, वेश-भूषा अलंकार नृत्य का होता।
विभिन्न वाद्ययंत्र सुरों का होता, लोक मान्यताएँ व मिथक होता।।

अनेकता में एकता का ज्ञान भी होता, संगठन विघटन का भान भी होता।
एकता से विकास का ज्ञान भी होता, विघटन से विनाश का ज्ञान भी होता।।

भ्रमण से पॉजिटिव इफेक्ट्स होते हैं, बॉडी व माईण्ड एक्टिव होते हैं।
जिससे हैल्थ भी डेवलपमेंट होते हैं, सुगर कैंसर दूर भी होते हैं।।

हृदय रोग व कब्ज दूर हो जाते हैं, माइट्रोकॉण्ड्रिया संख्या में बढ़ जाते हैं।
इसीसे मानसिक बीमारी दूर होती, मैमोरी पॉवर क्रम से वृद्धि होती।।

बॉडी भी कूल होती हड्डी भी दृढ़ होती, तन की गन्दगी दूर भी होती जी।
तन-मन में चुस्ती-स्फूर्ति भी आती, दिन में स्फूर्ति रात को नींद आती।।

पाचन तंत्र भी स्वस्थ रहता, वात पित्त कफ भी सम रहता।
शारीरिक अकड़न दूर भी होता, बुढ़ापा भी शरीर में शीघ्र न आता।।

साइड इफेक्ट भी नहीं होता, प्राकृतिक चिकित्सा है पैदल-यात्रा।
जुकाम सिरदर्द दूर भी होता, प्रकृति-पर्यावरण का ज्ञान भी होता।।

प्रकृति से आत्मीयता का भान होता, इसी से विभिन्न अनुभव होता।
वैद्य-वैज्ञानिक शोध जो करते, विश्वहित हेतु काम भी करते।।

भ्रमण नहीं केवल भटकन है, अपव्यय नहीं समयशक्ति धन है।
फैशन-व्यसन उत्श्रृंखलता नहीं है, 'कनकनन्दी' लाभ लेता भ्रमण से है।।

परसाद, दिनांक 19.03.2013, मध्याह्न 4.22

मानवीय कलंक को मिटाने वाले
महामानव अब्राहम लिंकन

(राग : शत-शत वन्दन..., है अपना दिल तो...)

हुआ था एक महामानव, नाम था अब्राहम लिंकन।
मिटाया मानव जाति-कलंक, दास-प्रथा रूपी महाकलंक।।

परिवार था उनका निर्धन, पंकज/(कमल) सम खिले लिंकन।
मृदुल सरल वीर न्यायप्रिय, दास उद्धारक मानव प्रिय।।

धीर-वीर धैर्यशाली गम्भीर, हार न मानने वाला कर्मवीर।
लोकतन्त्र के है अमोघ वीर, मानव अधिकार के उन्नत शिर।।

उदार व्यापक विचारशील, परोपकारी मननशील।
न्याय राजनीति समता नेता, अमेरिका के महान् नेता।।

अन्तःकरण को मानने वाले, पवित्र विचार करने वाले।
दास-प्रभु को न मानने वाले, समता-शासन पालने वाले।।

शत्रु को भी मित्र मानने वाले, मित्र बनाकर मिटाने वाले।
तन-मन-धन-सत्ता-समय, सदुपयोग में किया नियोग।।

तुम्हारे आदर्श मानव पाले, सत्ता-सम्पत्ति सम्पन्न वाले।
पृथ्वी में न्याय का शासन होगा, 'कनक' का भाव सफल होगा।।

परसाद, दिनांक 20.04.2013, मध्याह्न 2.34

''भौतिकमय यांत्रिक मानव की दुर्दशा''

(राग : छोटी-छोटी गैया..., रघुपति राघव...)

आज तो मानव भौतिक हो रहा, भौतिक के साथ यांत्रिक हो रहा।
यंत्र को बनाया यंत्रमय हो गया, संवेदन शून्य भौतिक हो गया।।ध्रु.।।
टी.वी. को देखता व सुनता टी.वी., उसका भाव-व्यवहार हो गया।
तथा ही मोबाईलमय हो गया, खाना-पीना-सोना में तन्मय हुआ।।

इंटरनेट के अन्दर हो गया, परिवार समाज से दूर हो गया।
कार-मोटर का सवार हो गया, पैदल चलना भूल-सा गया।।

मोटापा डायबिटीज सवार हो गया, विभिन्न रोगों का आगार हो गया।
चूल्हा चक्की कुआँ से दूर हो गया, विभिन्न यंत्रों का गुलाम/(दास) हो गया।।

खाना-पीना-सोना तथा जगना, चलना-बैठना तथा देखना।
सुनना-सुनाना तथा पायखाना, कपड़ा धोना नहाना तथा सुखाना।।

सोचना सूचना देना तथा बुलाना, जेन्टलमैन बनना तथा दिखाना।
यंत्रमय मानव खुद हो गया, खुद व खुदा से जुदा हो गया।।

यंत्रमय मानव व्यग्र हो रहा, अस्त-व्यस्त व संत्रस्त हो रहा।
सुख-शान्ति निद्रा से हीन हो रहा, हीन-दीन व रोगी हो रहा।।

शान्ति प्राप्ति हेतु नैतिक बनो, संवेदनशील मानव बनो।
आध्यात्मिकता से पावन बनो, 'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो।।

परसाद, दिनांक 14.03.2013, रात्रि 12.38

''शिक्षा तेरी धारा है अजस्र''

(लौकिक शिक्षा से जीविका निर्वाह तो अलौकिक से निर्माण)

(राग : गंगा तेरा पानी अमृत..., आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

शिक्षा तेरी धारा अजस्र...सर्वत्र बहती जाये।
तेरे ही कारण मानव जाति...सबसे श्रेष्ठ कहाये।।ध्रु.।।

लौकिक तथा अलौकिक तेरी...बहती प्रमुख धारा।
लौकिक है दैहिक भौतिक...अलौकिक आत्मिक धारा।।
लौकिक से भी अधिक श्रेष्ठ...अलौकिक आत्मिक धारा।। (1)

लौकिक है भाषा गणित (मई)...कला वाणिज्य विज्ञान।
खगोल भूगोल रसायन भौतिक...इतिहास आयुर्वेद ज्ञान/(धारा)।
संगीत कला शिल्प उद्योग...यांत्रिक राजनीति ज्ञान।। (2)

इसी से जीविका निर्वाह होता...भौतिक होता विकास।
सभ्यता का विकास होता...समाज होता विकास।
किन्तु इसी से आत्मतत्त्व/(मानव) का...नहीं होता विकास/(है निर्वाण)।।(3)

आत्मतत्त्व के विकास हेतु...धारा अलौकिक शिक्षा/(धारा)।
सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य व...अपरिग्रह की दीक्षा।
संयम तप आत्मानुशासन...ध्यान वैराग्य निष्ठा।। (4)

इसी से मानव महामानव से...बनता है परमात्मा।
इसे ही कहते सत्य शिव सुन्दर...मोक्ष निर्माण शुद्धात्मा।
यह ही जीव की परम अवस्था...जो है मुक्तावस्था।। (5)

"सा विद्या या विमुक्तये"...इसी से प्रसिद्ध हुआ।
"सा विद्या या मुक्तये"...अभी तो प्रसिद्ध हुआ।
इसी कारण मानव आज...अशान्त संत्रस्त हुआ।। (6)

लौकिक परे अलौकिक शिक्षा...प्राप्त करो हे मानव।
जिससे तेरा सर्वोदय होगा...नहीं रहेगा तनाव।
इसी हेतु ही 'कनकनन्दी'...रची है शिक्षा का काव्य।। (7)

परसाद, दिनांक 21.03.2013, रात्रि 9.36

विभिन्न-विषय ज्ञान से विविध लाभ

(राग : छोटी-छोटी गैया..., यमुना किनारे...)

बहुविध/(विभिन्न विषय) ज्ञान से नाना/(बहु) लाभ होता है,
चिन्तन का क्षेत्र बड़ा होता है।
समन्वय समीक्षा की शक्ति आती है, विचार विनिमय की युक्ति आती है।।

बहुविध भाषा का ज्ञान होने से, बहुविध संस्कृति का ज्ञान भी होता है।
भाव विनिमय सरल होता है, प्रेम संगठन की वृद्धि होती है।।

अज्ञान अन्धकार दूर होता है, हठग्राह-दूराग्रह दूर होता है।
संकीर्णता-जड़ता दूर होती है, उदारता-व्यापकता की वृद्धि होती है।।

उत्तरोत्तर जब ज्ञान होता है, पूर्व की अज्ञानता का भान होता है।
अन्धकार प्रकाश से यथा मिटता, ज्ञान बढ़ने से अज्ञान मिटता।।

दुर्विदग्ध अल्पज्ञानी घमण्डी होते, हठग्राही संकीर्ण व कुतर्की होते।
हिताहित विवेक से रहित होते, स्व-पर अहितकारी काम करते।।

ज्ञान से अनुभव जब बढ़ता, कूपमण्डुकता का ज्ञान भी होता।
स्व-अज्ञानता का नाश भी होता, ज्ञानार्जन हेतु भाव बढ़ता।।

नीति सदाचार का ज्ञान होने से, नैतिक सदाचारी जीव बनता।
आयुर्वेद ऋतुओं का ज्ञान होने से, स्वास्थ्य रक्षा नियम भी सही पलते।।

सभ्यता संस्कृति का ज्ञान होने से, सुसभ्य सांस्कृतिक जीव बनते।
जिससे समाज राष्ट्र श्रेष्ठ बनते, विविध प्रकार के विकास होते।।

पर्यावरण व अहिंसा के ज्ञान से, पर्यावरण-जीवों की सुरक्षा होती।
जिससे तन-मन स्वस्थ भी होते, विश्व में विविध विकास होते।।

आध्यात्मिक ज्ञान तो महान् ज्ञान, जिससे जीवन होता महान्।
मानव इसीसे महामानव होता, इसीसे ही अमृत तत्त्व को पाता।।

बहुविध ज्ञान अतः करो हे! मानव, सदुपयोग से बनो महामानव।
दुरुपयोग ज्ञान का कभी न करो, कनकनन्दी का मत/(राय) स्वीकार करो।।

परसाद, दिनांक 21.03.2013, रात्रि 11.08

ज्ञान-दान एवं ज्ञानार्जन की सही पद्धति

(राग : छोटी-छोटी गैया...)

ज्ञानदान महादान सभी दानों में, अभय औषधि आहारदान मध्य में।
ज्ञानदानी ही होते महान् गुरु, अन्य दानदाता नहीं होते हैं गुरु।। (1)

आत्मज्ञान दाता होते आध्यात्म गुरु, आध्यात्म गुरु ही सच्चा होते हैं गुरु।
सत्य समता शान्ति की जीवन्त मूर्ति, ज्ञान दया निस्पृहता की साक्षात् मूर्ति।। (2)

आत्मज्ञान हेतु सत्यज्ञान होना चाहिए, सत्यज्ञान हेतु सर्वज्ञान होना चाहिए।
तत्त्वार्थ श्रद्धान से यह प्रारम्भ होता, तत्त्वार्थ में सर्वसत्य निहित होता।। (3)

जीव अजीव बन्ध मोक्ष शुभ अशुभ, मूर्तिक-अमूर्तिक व विशुद्ध भाव।
प्रकृति ब्रह्माण्ड का यथार्थ ज्ञान, होना चाहिए गणित सह विज्ञान।। (4)

इतिहास पुराण से प्राप्त शिक्षा, महान् पुरुषों की आदर्श गाथा।
नीति नियम सामाजिक विज्ञान, भूगोल खगोल का यथार्थ ज्ञान।। (5)

स्वास्थ्य विज्ञान व मनोविज्ञान, भौतिक रसायन प्राणी विज्ञान।
अनेकान्तमय समन्वय का ज्ञान, कर्म सिद्धान्त गुणस्थान का ज्ञान।। (6)

एकांगी ज्ञान से न होता विकास, रूढ़ि संकीर्णता में यदि होता विश्वास।
कट्टर दुराग्रही अविनयी दुर्जन, ज्ञानदान योग्य न होते वे जन।। (7)

अयोग्य को ज्ञानदान नहीं विधेय, सर्प को दुग्धपान नहीं विधेय।
गौ सम शिष्य होते ज्ञान के पात्र, 'कनकनन्दी' चाहे सदा सुपात्र।। (8)

परसाद, दिनांक 27.04.2013, मध्याह्न 5.37

''विवाद-विसंवाद से सत्य व शान्ति अप्राप्त''

(राग : सायोनारा..., शायद मेरी शादी...)

वाद-विवाद नहीं करणीय, हठाग्रह दूराग्रह त्यजनीय।
सनम्र सत्याग्रह भजनीय, संकीर्ण पूर्वाग्रह त्यजनीय।। (1)

सरल सहज भाव करणीय, पाखण्ड व दंभ त्यजनीय।
प्रज्ञा श्रद्धा न त्यजनीय, दीन-हीन भाव न धरणीय।। (2)

सत्य समता शान्ति भजनीय, विवश भय न धरणीय।
प्रेम एकता न खण्डनीय, वैर विरोध न करणीय।। (3)

विवादेन/(बहस से) समाधान नहीं होता, विवाद/(बहस) है संकीर्ण मानसिकता।
पराजित या विजयी दोनों, वैचारिक समाधान नहीं पाते।। (4)

विवाद से समय नष्ट होता, सौहार्द्र समन्वय नष्ट होता।
कलह विसंवाद द्वेष बढ़ते, समाधान सत्य नहीं पाते।। (5)

धैर्य से सही कार्य करणीय, कर्त्तव्य से सत्य सिद्धनीय।
'सत्यमेव जयते' यह सत्य, विवाद नहीं है हित/(प्रिय) सत्य।। (6)

अनेकान्त स्याद्वाद सेवनीय, प्रमाण नय भी भजनीय।
समता शान्ति रक्षणीय, 'कनकनन्दी' को यह प्रिय।। (7)

परसाद, दिनांक 13.04.2013, मध्याह्न 2.43

(''बहस कभी आपके काम नहीं आती''-आशीष जैन के लेख तथा
''पुरुषार्थ सिद्धयुपाय'' से प्रभावित कविता।)

धैर्य से मिलती है महानता एवं सफलता

(क्षुद्र व्यक्ति से विवाद एवं संगति महानता नाशक)

(राग : तुम दिल की धड़कन...)

समता भाव से धैर्य भी प्राप्त होता, धैर्य से कार्य भी सफल होता।
समता आती है शान्त भाव से, ईर्ष्या तृष्णा मोह शान्त होने से।। (1)

सहनशीलता की वृद्धि धैर्य से होती, धीरता वीरता गम्भीरता आती।
एकाग्रता विवेकशीलता आती, निर्णय क्षमता में तीव्रता आती।। (2)

कार्यक्षमता में तीव्रता आती, स्मरण शक्ति भी तीव्र होती।
तन मन आत्मा की शक्ति बढ़ती, मन व आत्मा की शान्ति बढ़ती।। (3)

इसी हेतु आध्यात्मिक ज्ञान चाहिए, आत्म चिन्तन व ध्यान चाहिए।
इसी योग्य महान् गुरु चाहिए, मार्गदर्शन व संगति चाहिए।। (4)

वाद-विवाद से शक्ति घटती, संक्लेश/(तनाव) चिन्ता से शान्ति नशति।
इनसे सफलता नहीं मिलती, स्व-महानता में कमी आती।। (5)

अनुदार हठग्राही क्षुद्र व्यक्ति से, विवाद करना नहीं विधेय।
इसी से महानता मलिन होती, समता शान्ति व शक्ति नशति।। (6)

ईर्ष्या घृणा तृष्णा निन्दा चुगली, महानता नाशक अशान्ति गाली।
क्षुद्रता भी अविधेय क्षुद्रजन से, अस्पर्श ही विधेय स्पर्श रोगी से।। (7)

प्रकाश से अन्धकार यथा भागता, समता-धैर्य से अपवाद नशता।
क्षुद्रता नशति है महानता से, सफलता चाहे 'कनक' महानता से।। (8)

(यह कविता ''बड़ी सोच का बड़ा जादू'' एवं ''विजय के लिए जरूरी तत्त्व है धैर्य'' से भी प्रभावित।)

परसाद, दिनांक 22.04.2013, रात्रि 10.55

पशुओं की भी सेवा से मिलता है स्वास्थ्य

(राग : शत-शत वन्दन...)

अहिंसा प्रेम सेवा करो, धर्म पुण्य स्वास्थ्य वरो।
धर्म विज्ञान भी यह कहता, मनोविज्ञान भी यह मानता।।

इसी से पुण्य बन्ध होता, पापकर्म विनाश होता।
प्रसन्नता व शान्ति मिलती, हर जीव की सुरक्षा होती।।

हर धर्म में तो यह मान्य, विज्ञान में अभी हुआ मान्य।
पर्यावरण की सुरक्षा होती, बीमारियाँ भी नहीं होती।।

पशुओं की जो रक्षा करते, पालन सह सेवा करते।
ऑक्सीटोसिन वे स्राव करते, जिससे अनेक लाभ होते।।

इम्यून सिस्टम अच्छा होता, पेन मैनेजमेंट सही होता।
विश्वास करने का सेंस बढ़ता, क्रोध आवेश कम होता।।

शारीरिक गतिविधि वृद्धि होती, सहानुभूति की वृद्धि होती।
सीखने की क्षमता बढ़ती, अहिंसा-सेवा-दया बढ़ती।।

एड्रीनेलिन का स्तर घटता, कार्टिसोल का स्तर घटता।
इससे तनाव स्तर घटता, मानसिक रोग दूर भागता।।

पशु भी अपना मित्र बनते, सेवा सहयोग रक्षा करते।
सेवा धर्म अतः महान् कहा, 'कनक' को यह गुण भाया।।

(आधुनिक मनोवैज्ञानिक शोध भी इस कविता का आधार)

परसाद, दिनांक 15.04.2013, मध्याह्न 3.00

परोपजीवी से समस्या तथा परस्परोपग्रह से समाधान

(राग : शत-शत वन्दन..., शायद मेरी..., सायोनारा...)

परोपजीवी सकलजन वे होते, जो स्वकर्त्तव्य नहीं करते।
आलस्य प्रमाद युक्त भ्रष्टाचार से, जो जीविका निर्वाह करते हैं।।

चोर ठग मिलावटी व कामचोर, शेषक संग्रहक/(जमाखोर जो) भी होते हैं।
वे भी सब परोपजीवी होते हैं, जो अनीति से धन कमाते हैं।।

इन दुर्गुणों से युक्त सेठ-साहूकार, नेता-अभिनेता मंत्री भी।
उद्योगपति व राष्ट्रपति होते हैं, परोपजीवी व पूँजीपति।।

अध्यापन बिना शिक्षक, आत्म साधना बिना साधु जन।
जनसेवा बिना सांसद, परोपजीवी मंत्रीगण।।

काम किये बिना कर्मचारी, सुशासन बिना प्रशासन।
न्याय किये बिना न्यायाधीश, होते हैं परोपजीवी याचक।।

अन्नदाता होते हैं किसान, सहयोगी होते हैं श्रमिक गण।
परोपजीवी न होते हैं कर्त्तव्यनिष्ठ, जो सदाचारी न्याय संयुक्त।।

आत्मसाधक साधु होते आदर्श, वे होते हैं सही शिक्षक।
स्व-पर-विश्वहितकारी वे होते, उनसे उपकृत सभी होते।।

उनकी सेवा करणीय वरेण्य, तथाहि माता-पिता वृद्ध व रूग्ण।
बालक विकलांग असमर्थ जन, घायल व विपत्ति सहित जन।।

सेवा दान परोपकार होते हैं धन, यथायोग्य पालनीय ये कर्म।
पशु पक्षी कीट पतंग या मानव, सबकी रक्षा है परमोधर्म।।

परशोषण या परोपजीवी, यह काम है निष्कृष्ट काम।
'जियो और जीने दो' उत्तम धर्म, 'परस्परोपग्रहो' उत्तम काम।।

परशोषण से विषमता जन्मती, जिससे समस्याएँ उत्पन्न होती।
'परस्परोपग्रह' से उन्नति होती, 'कनक' की भावना शान्ति भी होती।।

परसाद, दिनांक 11.04.2013, मध्याह्न 2.42

धार्मिक मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक शोध पूर्ण कविता

''संगति का फल''

(सुसंगति का सुफल तथा कुसंगति का फल)

(राग : यमुना किनारे श्याम...)

कुसंगति को त्यागो सुसंगति करो, नैतिक आध्यात्मिक विकास करो।
इसे भी कार्य कारण सम्बन्ध मानो, निमित्त उपादान व्यवस्था जानो।।

द्रव्य क्षेत्र काल भाव सम्बन्ध होते, अंतरंग-बहिरंग निमित्त होते।
वातावरण संगति इसे कहते, सहयोगी उद्दीपक कारक होते।।

संगति अग्नि से यथा घी गलता, ज्वलन बिन्दु में अग्नि रूप हो जाता।
हिमांक बिन्दु में घन रूप हो जाता, सामान्य में तरल रूप में होता।।

तथाहि पानी गैस धातु में होता, बाह्य संगति से ये सब होता।
संगति से बीज से अंकुर बनता, अंकुर से विशाल वृक्ष बनता।।

अन्य संगति से बीज भोज्य बनता, भोजन से रस रक्त माँस बनता।
ज्वलनांक में बीज भस्म बनता, फ्रिज के संगति से स्थिर रहता।।

सुसंगति द्वारा सुसंस्कार आते, कुसंगति द्वारा कुसंस्कार आते।
सुगुरु उपदेश से सम्यक्त्व होता, कुगुरु उपदेश से मिथ्यात्व होता।।

व्यसनी संगति से व्यसनी होते, फैशनी संगति से फैशनी होते।
ज्ञानी के संगति से ज्ञान मिलता, अज्ञानी से अज्ञान तथा मिलता।।

हीन दीन कायर से तथा बनते, राग द्वेषी मोही से तथा ही होते।
सकारात्मक विचार तथा नकारात्मक, भाव संक्रमण से बनते तथा आत्मक।।

आलसी प्रमादी व क्रूर दुष्ट से, हिंसक चोर नशेड़ी दगाबाजों से।
दूर रहो सदा ही अप्रियवादी से, दुर्जन कलहप्रिय शठ दंभी से।।

दृढ़ प्रहारी वाल्मकी तथा अंगुलीमाल, गौतम गणधर तथा विद्युत चोर।
दोनों संगति के उदाहरण जानो, प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध अनेको मानो।।

प्रभाव कुसंगति का शीघ्र पड़ता, जल यथा निम्नगामी शीघ्र बनता।
प्रभाव सुसंगति का धीरे पड़ता, जल या ऊर्ध्वगामी कठिन होता।।

स्पर्श से स्पर्श रोग यथा फैलता, सम्पर्क से संक्रामक रोग फैलता।
कुसंगति से दुर्गुण शीघ्र आता, स्वास्थ्य सम सुगुण शीघ्र न आता।।

अतएव कुसंगति कभी न करो, सुसंगति सदा व सर्वथा करो।
धर्म तथा विज्ञान भी इसे मानता, 'कनक' बाल्यकाल से इसे मानता।।

परसाद, दिनांक 06.04.2013, रात्रि 10.32 तथा 3.23

श्रावक एवं श्रमण हेतु त्यजनीय अनावश्यक पाप

(जिन दोषों का त्याग प्राथमिक श्रावक (द्वितीय प्रतिमाधारी) का होता है उन दोषों को ज्ञात-अज्ञात से अनेक श्रेष्ठ श्रावक, क्षुल्लक-ऐलक, आर्यिका-साधु-उपाध्याय आचार्य तक करते हैं।)

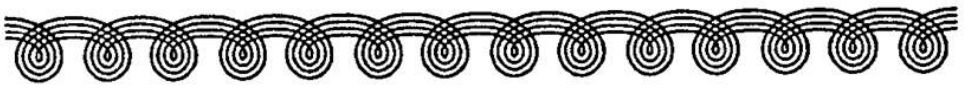

(राग : सुनो-सुनो हे दुनियाँ वालों...)

सुनो-सुनो हे! श्रावक-श्रमण, तीर्थंकरों का दिव्य सन्देश।
अनावश्यक पाप त्याग से, होगा सही आत्म विकास।। (1)

इसे कहते अनर्थदण्डव्रत जो व्रतों में है महत्त्वपूर्ण।
यह व्रत पालन अति कठिन, तथाहि अति सरलतम।। (2)

इसके प्रमुख पाँच भेद हैं, अतिविस्तार इसके प्रभेद।
अपध्यान व पापोपदेश प्रमादचर्या हिंसादान।। (3)

दुःश्रुति भेद है प्रमुख जानो, प्रभेद होते हैं बहु प्रकार।
दुश्चिन्ता करना प्रथम भेद, जिससे बन्धता है पाप प्रचुर।। (4)

अन्य की हानि चिन्तन करना, अपना क्षुद्र लाभ निमित्त।
जय-पराजय स्व-पर चाहना, अन्य के सुख से होना दुःखित।। (5)

अन्य के दुःख से सुखी भी होना, चोरी कुशील का होना चिन्तन।
कलह झगड़ा हत्या तिरस्कार शिकार युद्ध का होना चिन्तन।। (6)

पापोपदेश है द्वितीय भेद, आरम्भ-परिग्रह का होता कथन।
असि मषी कृषि वाणिज्य सेवा, शिल्प से होता जीविकार्जन।। (7)

मंत्र यंत्र तंत्र विद्या जो जीविकार्जन के ज्ञान-विज्ञान।
क्रय-विक्रय व आयात-निर्यात, युद्ध योग्य भी जो ज्ञान-विज्ञान।। (8)

धनार्जन हेतु विद्या प्रदान तथाहि कृषि शिल्प विज्ञान।
सेवा-नौकरी योग्य जो भी ज्ञान (कथन), वे सब होते हैं पाप-कथन।। (9)

ज्ञानदान नहीं है अनर्थदण्ड इससे आत्मा का होता विकास।
त्याग होता है पंच पाप, सप्त व्यसन/(प्रमाद) विकथा।। (10)

प्रमादचर्या है अनर्थकाम, भूमि खोदना व पानी ढोलना।
वृक्ष उखाड़ना पत्थर फेंकना, आग जलाना पशुओं को पीटना।। (11)

घूमना-फिरना, चिमटी भरना, नाखून खाना व बाल तोड़ना।
कागज फाड़ना लकड़ी तोड़ना, इधर-उधर वस्तु सरकाना।। (12)

हिंसा प्रदान है हिंसोपकरण दान, अस्त्र-शस्त्र विष अग्नि प्रदान।
पिंजरा यंत्र रस्सी/(सर्प) प्रदान, शेर व्याघ्र यान-वाहन दान।। (13)

हिंसा झूठ कुशील परिग्रह चोरी को बढ़ाने के जो है शास्त्र।
उसका अध्ययन अध्यापन, श्रवण कथन भी होता है दुःश्रुत।। (14)

जूआ खेलना भी अनर्थदण्ड, जिससे होता राग-द्वेष-मोह।
ताश खेलना सट्टा लगाना, लाटरी तथा शर्त लगाना।। (15)

इसी व्रत के अतिचार भी कहे गये हैं पंच प्रकार।
कन्दर्प कौत्कुच्य मौखर्य तथा असमीक्षाधिकरणाचार।। (16)

सेव्यार्थाधिकता सहित पाँच प्रभेद होते बहु प्रकार।
काम उद्रेपक कथन चेष्टा साहित्य कविता नृत्य/(सिनेमा) विकार।। (17)

धृष्टतापूर्वक कथन तथा सम्बन्ध रहित व्यर्थ कथन।
अप्रयोजन काम करना वस्तु संग्रह जो अप्रयोजन।। (18)

कृतकारित व अनुमोदन मनवचन व काय के द्वारा।
राग द्वेष मोह ईर्ष्या घृणा कृत, हर कार्य होते अनर्थ मूल।। (19)

इसके अतिरिक्त अन्य कार्य से, नहीं होते बहु अनर्थ काम।
अप्रयोजनभूत कार्यों से पाप न करो धार्मिक जन।। (20)

असंयम जनित दोष भी होता आरम्भ का होता अनुमोदन।
परिग्रह जनित दोष लगता, पापों का होता समर्थन।। (21)

आर्त्त रौद्र ध्यान होते, समय शक्ति का होता क्षरण।
तनाव दुःश्चिन्ता संक्लेश होते, मानसिक रोग के होते कारण।। (22)

मानसिक स्थिरता नहीं होती, आत्मा की विशुद्धि मलिन होती।
अन्याय अत्याचार पाप बढ़ते, अनेक समस्याएँ जन्म लेती।। (23)

अणुव्रत-महाव्रत भंग होते, अव्रती सम भाव भी होते।
भाव विशुद्धि च्युत होती, जिससे गुणस्थान गिरते।। (24)

अनर्थदण्ड तो महान् दण्ड, त्यजनीय है सदा सर्वदा।
इसे त्याग हेतु 'कनकनन्दी', यत्न करता है सदा सर्वथा।। (25)

(यह कविता 'पुरुषार्थसिध्युपाय' ग्रन्थ के आधार पर रची गयी है।)

परसाद, दिनांक 16.04.2013, रात्रि प्रायः 1 बजे

शान्ति प्राप्ति के पूर्ण रहस्य

(राग : दुनियाँ में रहना है तो...)

सत्य के मार्ग पर चलते रहो, समता व शान्ति का भाव धरो।
स्व-पर-विश्व हित का भाव धरो, अपेक्षा उपेक्षा की चिन्ता छोड़ो।। (1)

ख्याति पूजा लाभ की चाह छोड़ो, राग द्वेष मोह का भाव छोड़ो।
माने कोई बुरा की चिन्ता छोड़ो, वाद-विवाद में मत पड़ो।। (2)

सभी का प्रिय न कोई हुआ, सभी से मान्य न कोई हुआ।
सभी के भाव न साम्य होता, वैषम्य ही संसार होता।। (3)

तीर्थंकर सिद्ध साधु महात्मा, ईसा मसीह या बुद्ध-महात्मा।
सभी के द्वारा न होते मान्य, अन्य जन सभी होते सामान्य।। (4)

विभिन्न कर्म होते सभी जीव में, विभिन्न भाव होते अतः जीव में।
कर्म से रहित जब जीव होंगे, तब ही समान ही भाव रहेंगे।। (5)

कर्म रहित हेतु सत्य पालो, समता शान्ति ध्यान धारो।
आत्म विशुद्धि द्वारा कर्म नाशो, ज्ञानानन्दमय रूप प्रकाशो।। (6)

यही ही आध्यात्मिक परम सत्य, शान्ति प्राप्ति के पूर्ण रहस्य।
आत्म सम्बोधन हेतु बना ये काव्य, 'कनक' का आत्मा ही परम लक्ष्य।। (7)

परसाद, दिनांक 29.04.2013, रात्रि 11.13

(परिग्रह में अनेक पाप गर्भित : उदाहरण सह)

''खनिज उत्पादक : अनेक पाप उत्पादक''

(खान से प्राप्त तेल, गैस, सोनादि धातु, पत्थर महान् हिंसाकारक प्रदूषणकारी-भूकम्प कारक)

(राग : यमुना किनारे श्याम..., रघुपति राघव...)

पापों की खानी होते हैं खनिज द्रव्य, हिंसक प्रदूषक महंगा भूकम्पकर।
अधिक गहराई से जो निकले द्रव्य, अधिक हिंसादि कारक होते वे द्रव्य।।

तेल गैस सोनादि धातु तथा मार्बल, त्रस स्थावर हिंसकादि भूकम्पकर।
मीटरों से मील तक खुदाई होती, असंख्य त्रस स्थावरों की हिंसा होती।।

जल वायु मृदा प्रदूषण भी होते, प्रदूषण शब्द अपशिष्ट भी होते।
भूजलस्तर नीचे जाता परिवर्तन भी होता, खेती वन-उपवन विनष्ट होते।। (1)

निवास पशु-पक्षियों का विनष्ट होता, उनके योग्य भोजन नहीं मिलता।
पशु-पक्षी भी इसलिये विनष्ट होते, पर्यावरण संतुलन भी बिगड़ जाता।।

तेलादि कच्चामाल ट्रांसपोर्ट संस्करण से, ये सब समस्याएँ और भी अधिक हो।
संस्करण के बाद पुनः परिवहन में, पैकिंग किप-अफ डाउनलोड में।। (2)

उपकरण निर्माणादि ट्रांसपोर्टादि में, समस्याएँ उत्पन्न यथायोग्य होती।
दमा श्वास कैंसर टी.बी. रोगादि होते, तन-मन आत्मा अस्वस्थ होते।।

इससे अन्य समस्याएँ उत्पन्न होती, समस्या की श्रृंखलाएँ खूब बढ़ती।
जिससे ग्लोबल वार्मिंग खूब बढ़ता, वर्षा प्रभावित होती भूकम्प आता।। (3)

सुनामी कहर रूपी प्रलय आता, प्राकृतिक शोषण का बदला लेता।
वैज्ञानिक शोधों से यह सिद्ध हो रहा, मेरे ग्रंथों में मैंने वर्णन किया।।

इन वस्तु से (प्रति) क्रोध मान भी होते, मोह माया लोभ संयुक्त होते।
झूठ चोरी मिलावट शोषण होते, भय संक्लेश व युद्धादि होते।। (4)

बह्वारंभी परिग्रही को नारकी कहा, आरंभ उद्योग को हिंसा भी कहा।
परिग्रह को वीर ने हिंसा ही कहा, अपरिग्रह को अणु-महा भी कहा।।

अणुरूप से गृहस्थ पालन करे, महाव्रतरूप में साधु भी पालो।
सन्तोषमय सादा जीवन जीये, दूसरों को जीने दे स्वयं भी जीये।। (5)

परस्परोपग्रहो सह अस्तित्व पाले, वसुधैव कुटुम्ब का सिद्धान्त पाले।
केवल भौतिकता दुःख कारक होता, क्रिया की प्रतिक्रिया सिद्धान्त होता।।

सर्वोदय हेतु आत्मविकास करो, 'कनक' का आशीष सत्य शान्ति को पालो।
यह है धार्मिक-वैज्ञानिक सिद्धान्त, इसी से ही मिलेगा पूर्ण विकास।। (6)

सोना को मानव माने उत्तम धातु, बहुमूल्य गुणकारी दुर्लभ.वस्तु।
उपरोक्त सभी दोष होते इसी से, और भी कुछ दोष होते इसीसे।।

बीस टन (20) चट्टान की खुदाई द्वारा, अंगूठी जितना सोना मिले खान से।
जिससे साइनाइट विष फैले पृथ्वी में, राग-द्वेष-मोह होते सोना से।। (7)

परसाद, दिनांक 06.04.2013, मध्याह्न 2.22
(यह कविता वैज्ञानिक चैनल व लेखों से भी प्रभावित है।)

धन विहीन सुख एवं आनन्द

(राग : आत्म शक्ति...)

धन-सम्पत्ति है परिग्रह पाप जो है जड़ स्वरूप।
जड़ में न होती चेतना कभी न होता है ज्ञानानन्द।।

शरीर इन्द्रियाँ मन भी जड़ है काम-भोग राज-पाट।
जन्म-मरण व बुढ़ापा भी जड़ महल व ठाठ-बाट।।

ईर्ष्या द्वेष घृणा काम क्रोध मोह तृष्णा व आसक्ति मद। (भाव)
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि विद्वेष चिन्तादि विकृत भाव।।

जड़ स्वरूप व विकृत भाव में न होता है ज्ञानानन्द।
इसीसे आत्मा तो मलिन होता नशता है ज्ञानानन्द।।

ज्ञानानन्द हेतु तीर्थंकर बुद्ध आध्यात्मिक साधुसंत जन/(गण)।
चक्रवर्ती के भी वैभव त्यागकर, करते हैं आत्मध्यान।।

''जो राजेश्वरी सो नरकेश्वरी'' त्याग से है (सर्वोदय)/मोक्षधाम।
बहु आरम्भ व परिग्रह से नरक में होता गमन।।

परिग्रह हेतु सभी पाप होते, शोषण मिलावट चोरी।
क्रोध मान मोह लोभ भी होते है हिंसा झूठ मायाचारी।।

इसी के बिना सत्ता सम्पत्ति व भोग-विलास न होते।
राजतन्त्र या लोकतंत्र में पाप बिना कभी न होते।।

इसी के कारण राजा-महाराजा सेठ-साहूकार धनी/(जन)।
ईर्ष्या तृष्णा दम्भ व्यसन कारण, होते हैं संत्रस्त मन।।

आत्म शान्ति हेतु अनेक हैं अभी देश-विदेश के जन।
पर हित हेतु दान करते हैं, रखते न ज्यादा धन।।

बिल गेट्स व वॉरेन बफे, जुकरबर्ग स्टीव, जॉब्स।
अजीम प्रेमजी धन त्यागकर, पाते हैं आत्मसंतोष।।

मनोवैज्ञानिक तथा अर्थशास्त्री, अभी जो किया है शोध।
सुखी होना है तो संतोषी बनो, तृष्णा में नहीं है सुख।।
वे हैं शोधकर्त्ता मार्था नसबम, अमर्त्य सेन, जॉन राल्स।
माइकल सैण्डल, राबर्ट पुत नेम, गायत्री चक्रवर्ती, स्वी वॉकं।।

भौतिकवाद व बाजारवाद से, लोप हो रहा है नैतिक मूल्य।
व्यापार शिक्षा कानून राजनीति, धर्म में भी लोप है मूल्य।।

नैतिक बिना न सदाचार होता, सदाचार शून्य न धर्म।
धर्म बिना न शान्ति मिलती, यह है सुख का मर्म।।

धर्म मोक्ष शून्य अर्थ काम से, कभी न मिलता सुख।
'कनकनन्दी' का आह्वान/(आशीष) विश्व को, पाओ हे! आत्मिक सुख।।

(यह कविता प्रो. पूर्व कुलपति नरेश दाधीच के लेख से भी प्रभावित है।)

परसाद, दिनांक 21.04.2013, रात्रि 10.52

''यदि विश्व में युद्ध न होता''

(राग : आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

यदि न होता विश्व में युद्ध...कितना उत्तम होता।
धन जन समय नष्ट न होते...विकास में विनिमय होते।।ध्रु.।।

बुद्धि व खोज युद्ध में न होते...विकास में प्रयोग होते।
पर्यावरण साधन घर न नशते...नदी नाला खेती न नशते।।

आक्रमण व प्रति आक्रमण का...सिलसिला समाप्त होता।
हत्या लूट बलात्कार विध्वंस...युद्ध बन्दी विकलांग न होते।।

शान्ति समाधान सौहार्द्र बढ़ते...सहयोग एकता समन्वय।
सर्वोदय हेतु चिन्तन आचरण...तथाहि शोध बोध ज्ञान।।

धर्म अर्थ काम मोक्ष पुरुषार्थ...तथाहि चारों आश्रम।
समुचित रूप से विकसित होते...न होता विनाश काम।।

महाभारत व रामायण युद्ध...तथाहि दो विश्वयुद्ध।
तथाहि अन्य लाखों युद्ध...जो है प्रसिद्ध अप्रसिद्ध।।

युद्ध की कथा सुनने सुनाने में...नाटक में देखने में।
भले लगती है वीररसमय...वास्तविक विध्वंसमय।।

अतएव तीर्थंकर बुद्ध अशोक...रामकृष्ण व युधिष्ठर।
गाँधी संयुक्त राष्ट्र संघ...न मानते हैं श्रेयस्कर।।

यदि सब जन युद्ध न चाहेंगे...करेंगे शान्ति की सन्धि।
शान्ति से यदि समाधान होगा...अप्रासंगिक युद्ध होगा।।

इसी हेतु उपाय (है) पंचव्रत समता...समन्वय सदाचार।
क्षमा सहिष्णुता ईर्ष्या द्वेष त्याग...वैश्विक कुटुम्ब विचार।।

इनसे यदि मोक्ष मिलता है...युद्ध बन्द काम तो छोटा।
अंतरंग शत्रु जब नाश हो जाते...अजितशत्रु वह हो जाता
/(विश्वविजयी स्वतः हो जाता)।।

यह मार्ग ही सर्वोच्च उपाय...तीर्थंकर बुद्ध ने जो खोजा।
अन्य उपाय है प्रतिक्रियावादी...'कनकनन्दी' को यह सब भाया।।

परसाद, दिनांक 30.03.2013, मध्याह्न 3.00

''परवश से पाप, स्ववश से मोक्ष''

(विवश है संसारी जीव, स्ववश है मुक्त जीव)

(राग : आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

विवश है जीव संसार में, कर्मों के वश में होकर।
कर्म को भी बान्धा है स्वयं ने, विभाव भाव व्यवहार से।।

अनादि अनन्त काल से जीव, कर्म बन्धन से सहित है।
कर्म उदय से कर्म को बान्धता, यह क्रम जारी सतत है।।

यथा बीज से वृक्ष होता है, वृक्ष से पुनः बीज है।
यह क्रम सतत प्रवाहित रहता, तथाहि कर्म से कर्म है।।

कर्म के कारण जन्म-मरण व, रोग-शोक दुःख होते हैं।
संयोग-वियोग संकल्प-विकल्प, राग-द्वेष मोह होते हैं।।

इससे विवश होते हैं जीव, भाव व व्यवहार करते हैं।
इससे पुनः कर्म बान्धकर, संसार भ्रमण करते हैं।।

प्राचीन कर्मों के उदय सहित, बहिरंग निमित्त मिलते हैं।
दोनों से विवश होकर जीव, भाव-व्यवहार करते हैं।।

क्रोध से द्रव्य कर्म सहित, कहासुनी आदि हो जाती है।
क्रोधावेश में आकर मानव, कलह युद्ध हत्या करते हैं।।

तथाहि मान माया लोभ व, मोह व काम के वश होकर।
अन्याय अत्याचार पाप दुराचार, हिंसा झूठ कुशील मायाचार।।

चोरी मिलावट भ्रष्टाचार व, ईर्ष्या द्वेष घृणा करते हैं।
आसक्ति तृष्णा फैशन-व्यसन व, लड़ाई-झगड़ा युद्ध करते हैं।।

तनाव दबाव उदासीन होते, आत्महत्या तक करते हैं।
नदी स्रोत के तिनका के सम, विवश होकर करते हैं।।

मन्द कर्म के उदय के कारण, प्रबल पुरुषार्थ के द्वार।
भाव-व्यवहार जो विकृत न करता, स्व-वश वह जीव होता।।

आत्मविश्वास व विवेक सहित, आत्मानुशासी जो होता है
/(आत्मानुशासन जो करता है)।
संयम धैर्य क्षमा समता युत, विनम्र पावन जो होता है।।

ऐसा मानव ही महामानव है, स्वावलम्बी व स्वाधीन भी।
निस्पृह वितरागी ज्ञानी-ध्यानी है, अविकारी आत्मविजयी भी।।

ऐसा जीव ही कर्मनाश कर, बनते सच्चिदानन्द है।
वे ही सत्य शिव सुन्दर है, 'कनक' का परम ध्येय है।।

परसाद, दिनांक 01.04.2013, मध्याह्न 2.47

''अनेकान्तात्मक कार्यकारण सिद्धान्त''

(भाग्य पुरुषार्थ से भावी निर्माण)

(राग : रघुपति राघव..., इतनी शक्ति...)

भाव अनुसार कर्म होता है...कर्मानुसार भावी होता है।
इनके लिए बाह्य निमित्त होते...द्रव्य क्षेत्र काल भावादि होते।।ध्रु.।।

धन जन साधन शिक्षादि होते...स्वप्न शकुनादि सूचक होते।
किन्तु भाव होता बीज समान...अन्य होते पानी खाद समान।।

बीजानुसार ही वृक्ष होता है...पानी आदि सहयोगी होते हैं।
भाव अनुसार भावी होता है...द्रव्य क्षेत्रादि सहयोगी होते हैं।।

प्रधान कारण भाव होता है...बाह्य/(अन्य) कारण गौण होते हैं।
बाह्य कारण भी होना चाहिए...प्रेरक उदासीन/(सहयोगी) सूचक चाहिए।।

कर्म प्रेरक निमित्त होता...द्रव्यादि सहयोगी निमित्त होते।
स्वप्न शकुनादि सूचक होते...धर्म द्रव्यादि भी उदासीन होते।।

परिसर भी कारक बनता...धन जन साधन सहयोगी बनते।
शिक्षा संस्कार भी सहयोगी होते...कानून राजनीति निमित्त बनते।।

ये सब बाह्य कारक मिलकर...भाव को भावी रूप दिलाते।
भाव ही मुख्य कारक होकर...भावी रूप में लेता है आकार।।

पानी से बीज अंकुर होता...तो भी पानी न अंकुर बनता।
तथाहि भाव-भावी में भी होता...बाह्य निमित्त भावी न बनते।।

उत्तम संहनन धारी भी होता...चतुर्थकाल भी उत्तम होता।
विदेह/(भारत) क्षेत्र भी उत्तम होता...उत्तम भाव बिना नरक जाता।।

उत्तम कुल शिक्षा साधन सहित...उत्तम परिसर धन जन युक्त।
उत्तम भाव बिना (जो) कुकर्म करते...पाप कमाकर नरक जाते।।

स्वप्न शकुन व अंगस्फूरण...सूचक होते ज्योतिष ज्ञान।
भावानुसार भावी जो होगा...उसे बताते हैं सूचकज्ञान।।

उत्तम भाव तो सदा करणीय...सुद्रव्य क्षेत्रादि भी/(को) वरणीय।
सत् पुरुषार्थ सदा करणीय...भविष्य निर्माण सुकरणीय।।

यह अनेकान्त कार्य कारण...निमित्त उपादान यह है ज्ञान।
भाग्य पुरुषार्थ इसे कहते...'कनक' को यह मान्य भी होते।।

परसाद, दिनांक 31.03.2013, रात्रि 4.18

मानव-दानव-महामानव-भगवान्

(प्रकृति को वश में करने का दम्भ भरने वाला मानव स्वयं का भी मालिक नहीं बना)

(राग : आत्मशक्ति..., शत-शत वन्दन...)

पशु-पक्षी व प्रकृति को भी, वश करता है मानव।
किन्तु स्वयं को वश न करता, बनता दुष्ट दानव।।

रावण कंस जरासन्ध हिटलर, उदाहरण हुए प्रसिद्ध।
यथायोग्य भी अन्य मानव, इसमें प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध।।

मानव ही है दानव बनता, महामानव या भगवान्।
कुकर्म से तो दानव बनता, सुकर्म से होता मानव।।

ज्ञान ध्यान व तप के कारण, बन जाता है भगवान्।
बीज ही यथा अंकुर बनता, बनता है वृक्ष महान्।।

शारीरिक संरचना बौद्धिक बल व, साधन उपकरणों से।
शोध-बोध-आविष्कार द्वारा, प्रकृति वश करे यंत्रों से।।

परन्तु स्व-वश करने हेतु, नहीं उसमें है दक्षता।
आत्मानुशासन संयम धैर्य, नहीं शम दम क्षमा समता।।

इन्द्रियों का दास बना है, बना है गुलाम मन का।
कषायों का तुच्छ दास है, दास है ईर्ष्या/(घृणा) तृष्णा का।।

जो स्वयं का मालिक न बना है, कैसा प्रभु होता अन्य का।
जो दीपक स्वयं नहीं जला है, कैसे प्रकाशित करे अन्य का।।

इसलिए तो मानव के कारण, प्रकृति का संतुलन नशता।
प्राकृतिक आपदायें अनेक आती, मानव के गर्व को नशती।।

स्वयं के मालिक बनने हेतु, तीर्थंकर बुद्ध ऋषि-मुनि।
सत्ता-सम्पत्ति भोग त्यागकर, बनते आत्मसंयमी।।

स्वयं को पूर्ण वश में करता, बनता है वह भगवान्।
आंशिक वश में करने वाला, बनता है सही इन्सान।।

जो न स्वयं को वश में करता, बनता है वह हैवान।
मानव से भगवान् बनने हेतु, प्रयत्न करें हर इन्सान।।

मानव से दानव बनना है, मानव का अपमान।
मानव से महामानव बनना, मानव का सही सम्मान।।

महामानव से भगवान् बनना, मानव का सर्वोत्तम काम।
इसी हेतु ही 'कनकनन्दी', करता है प्रत्येक काम।।

परसाद, दिनांक 31.03.2013, मध्याह्न 2.10

बुद्धि-संवेदना-आध्यात्म

(बुद्धि से श्रेष्ठ संवेदना, संवेदना से श्रेष्ठ आध्यात्म)

(राग : आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

बुद्धि (I.Q.) व संवेदना (E.Q.) आध्यात्मिक (S.Q.) जानो,
बुद्धि से उत्तरोत्तर दोनों महान्।
बुद्धि मतिज्ञान पदार्थ को जानती, संवेदना शून्य स्वार्थपर (जो) होती।।

सत्ता-सम्पत्ति भोग को चाहती, इसी के लिए अन्याय भी करती।
दया दान सेवा रहित भी होती, श्रद्धा वात्सल्य स्नेह न करती।।

संवेदना रहित जो बुद्धि होती, आध्यात्मिक विकास में बाधक होती।
बुद्धि से श्रेष्ठ संवेदना होती, दया दान सेवा से सहित होती।।

संकीर्ण स्वार्थ परे ही होती, अन्य को क्षति नहीं पहुँचाती।
परदुःखकातर दयालु भी होती, हिताहित विवेक सहित भी होती।।

इनसे (भी) श्रेष्ठ आध्यात्मिक होता, बुद्धि (व) संवेदना सहित भी होता।
सत्ता-सम्पत्ति व भोग न चाहता, ज्ञान वैराग्य सह साम्य भी होता।।

राग-द्वेष-मोह परे भी होता, शम दम सहिष्णु पावन होता।
परोपजीवी तो बुद्धिजीवी होते, स्वार्थी संकीर्ण क्रूर भी होते।।

होते परोपकारी संवेदनशील, दान सेवायुक्त करूणाशील।
आध्यात्मिक परायण होते वैरागी, हर अवस्था में होते समभावी।।

ईर्ष्या घृणा तृष्णा से रहित होते, सरल-सहज शुची ध्यानी होते।
बुद्धि सहित व संवेदनशील, आध्यात्मवादी होना विरल।।

संवेदनशील जो जीव होते, अल्पबुद्धि से भी महान् होते।
परमात्मा बनते आध्यात्मिक जन, 'कनकनन्दी' चाहता है आत्मकल्याण।।

परसाद, दिनांक 01.04.2012, प्रातः 6.15

नीति-सुनीति-कुनीति

(राग : तुम दिल की धड़कन...)

नीति-सुनीति-कुनीति का कर रहा हूँ वर्णन।
स्व-पर-विश्व कल्याण हिते कर रहा हूँ विवेचन।।ध्रु.।।

जो लोक-व्यवस्था हेतु, बनती सो है नीति।
सुराजनीति संविधान, कानून लौकिक-नीति।।

इह-परलोक हित में, बनती सो सुनीति।
पंचव्रत दशधर्म व, रत्नत्रय आत्मिक-नीति।। (1)

जो स्वार्थ साधन हेतु, बनती सो है कुनीति।
कुराजनीति संविधान, कानून संकीर्ण/(लौकिक) नीति।।

साम दाम दण्ड भेद, क्रय-विक्रय विनिमय।
असि मसि कृषि शिल्प वाणिज्य, सेवा विवाहमय।। (2)

व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र, विश्व की व्यवस्था-नीति।
परस्परोपग्रहो युक्त, एकता समन्वय की नीति।।

अविरोध-धर्म-अर्थ-काममय, होती है गृहस्थ-नीति।
परस्पर प्रेम सहयोगमय, अपर पीड़क नीति।। (3)

इससे परे मोक्ष पुरुषार्थ, सहित होती है सुनीति।
हर जीव की रक्षा सहित, होती आध्यात्मिक नीति।।

आत्मानुशासन संयम दम, तप त्याग ब्रह्मचर्य।
ध्यान अध्ययन आत्मविशुद्धि, समस्त मोक्ष के कर्म।। (4)

नीति सुनीति रहित सर्व, होती है नीति कुनीति।
क्रूर कठोर स्वार्थपरक, जो कुछ मानव नीति।।

सत्य समता शान्ति रहित, उदार सहिष्णु रिक्त।
वे सब नीति है कुनीति, भले लिखित हो अलिखित।। (5)

व्यक्तिगत सामाजिक, राजनैतिक या राष्ट्रीय।
अन्तर्राष्ट्रीय या धार्मिक भी, हो सकती कुनीतिमय।।

बलिप्रथा दासप्रथा शोषण, आक्रमण व युद्ध।
औपनिवेशिकवाद व तानाशाही या आतंकवाद (भी)।। (6)

विधर्मी प्रति विद्वेष व, क्रूर-कपट की नीति।
तथाहि अन्य जाति भाषा, राष्ट्र विरोध की नीति।।

नीति द्वारा कुनीति त्यागो, धारण करो सुनीति।
सुनीति से मोक्ष वरो, 'कनक' मान्य सुनीति।। (7)

परसाद, दिनांक 28.02.2013, रात्रि 10.50

प्रिय-अप्रिय

(चाल : बड़ा नटखट है रे..., मेरे गुरुदेव आये...)

जो जिसे चाहे उसका वह प्रिय होता (है), गुण या व्यक्ति द्रव्य कम होता (है)।
अच्छा-बुरा का महत्त्व भी कम होता (है), आवश्यकता या चाह प्रमुख होती (है)।। (ध्रुव)...

गुणी को गुणी प्रिय, दुर्गुणी को दुर्गुण, ज्ञानी को ज्ञान प्रिय, धनी को धन।
मद्यपी चाहे मद्य, मधु को मधुप, मोक्ष/(मुक्ति) चाहे वैरागी, कामी तो सम्भोग।।(1)

ऊँट को नीम-बबूल, बकरी को पत्ती, गाय को घास, बछड़े को दूध में रूचि।
बच्चों को खेल, वृद्धों को विश्रामे रुचि, व्यसनी-फैशनी को स्व-स्व कामे में रूचि।। (2)

इसमें कारण कर्म-संस्कार-जिनोम, इच्छा व आवश्यकता आदत कारण।
लक्ष्य साध्य साधन व भावना रुचि, योग्य द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव प्रभृति।। (3)

एक जीव की जो चाह होती है, अन्य की अन्यथा रुचि होती है।
सम्पूर्ण समान रुचि, प्रायः कम ही होती, न्यूनाधिक विपरीत भाव अधिक होते।। (4)

एक जीव की रुचि, सर्वदा न होती, द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से भिन्न भी होती।
इसके उदाहरण भी अनेक होते, शिशु-किशोर-युवा व वृद्धादि होते।। (5)

अशोक अंगुलिमाल व विद्युत चोर, दृढ़ प्रहरी वाल्मीकि अञ्जन चोर।
मिथ्यात्व सम्यक्त्व व्रती व श्रमण, श्रेणी आरोहक केवली सिद्ध भगवान्।। (6)

इसीसे शिक्षा मुझे मिली अनेक, हर रुचि वालों से न कर सम्पर्क।
सबसे साम्य भाव रखना उचित, आत्मकल्याणे प्रयत्न करूँ उचित।। (7)

परसाद, दिनांक 23.03.2013, मध्याह्न 3.00

''विभिन्न स्वतंत्रता एवं परम स्वतंत्रता''

(राग : आत्मशक्ति से ओतप्रोत..., तुम दिल की धड़कन...)

स्वतंत्रता का रूप पहचानो, श्रद्धा भाव द्रव्य से जानो।
राजनैतिक संविधान रूप, परम्परा जाति सामाजिक रूप।।

तन मन वचन आर्थिक रूप, साक्षरी या अनक्षरी रूप।
ख्याति पूजा लाभ विचार रूप, द्रव्य क्षेत्र काल भाव स्वरूप।।

जन्म-मरण कर्म कषाय रूप, विवाह परिवार नौकरी रूप।
अन्धश्रद्धा व संकीर्ण रूप, कट्टर दुराग्रह पूर्वाग्रह रूप।।

फैशन-व्यसन आधुनिक रूप, देशी-विदेशी भाषा रूप।
नीति-अनीति उच्छृंखल रूप, उद्दण्ड अविवेक स्वार्थ रूप।।

सत्य समता शान्ति रहित, दबाव प्रलोभन भय सहित।
पक्षपात संक्लेश दुःखजनक, परतंत्रता है विभाव/(अनात्म) रूप।।

स्वतंत्रता है स्वभावमय, सत्य समता सुख/(शुद्ध) मय।
आत्मानुशासन व संयममय, शुद्धभाव व्यवहारमय।।

संक्लेश द्वन्द्व विरहित भाव, स्व-पर अविरोधी स्वभाव।
कषाय कर्म विवर्जित भाव, अहिंसा क्षमा सहज भाव।।

कर्त्ता कर्म व भोक्ता भी स्वयं, शासक शासित नियम स्वयम्।
संविधान कानून प्रशासन स्वयं, सार्वभौम सत्ता भी स्वयम्।।

इसका प्रारम्भ श्रद्धा से होती, आत्मविश्वास ज्ञान से बढ़ती।
चारित्रस्वानुशासन समता, संयम ध्यान से समृद्ध होती।।

संकल्प-विकल्प कषाय क्षय से, भाव कर्म द्रव्य कर्म क्षय से।
स्वात्मा की शुद्ध उपलब्धि होने से, पूर्ण स्वतंत्रता मिलती जीव को।।

अन्य स्वतंत्रता सहयोगी होती, राजनैतिक आदि यथायोग्य होती।

अन्तिम स्वतंत्रता प्राप्ति के हेतु, अन्य स्वतंत्रता प्राथमिक/(अनिवार्य) हेतु।।

मोक्ष प्राप्ति है अन्तिम लक्ष्य, उसके सहयोगी अन्य अवश्य।
अन्य स्वतंत्रता यदि नहीं है, मोक्ष प्राप्ति भी साध्य नहीं है।।

चक्रवर्ती राजा-महाराजा भी, योद्धा वीर विद्वान् जन भी।
सर्व त्यागकर बने संन्यासी, तीर्थंकर गणधर बुद्ध व ऋषि।।

मोक्ष का लक्ष्य जब होता है, आत्मविश्वास व ज्ञान होता है।
पुरुषार्थ से मोक्ष मिलता है, 'कनकनन्दी' का लक्ष्य मोक्ष है।।

परसाद, दिनांक 28.03.2013, मध्याह्न 2.15
(यह कविता 'व्यक्तित्व विकास' पुस्तक से प्रभावित है।)

''मानव के विश्वरूप''

(मानव के मानव दानव भगवान रूप)

(राग : तू ही तेरा परम..., गंगा तेरा पानी अमृत..., तुम दिल...)

मानव! तेरा रूप अनेक, वचने कहि न जाये।
कभी तू मानव कभी तू दानव, कभी तू महात्मा होय।।ध्रु.।।

तुझसे ही ज्ञान (विज्ञान) उपजे तथाहि सभ्यता संस्कृति।
भाषा व्याकरण गणित कला, आयुर्वेद संगीत मूर्ति।
दया दान परोपकार उदार सहिष्णु भक्ति।। (1)

तप त्याग ध्यान वैराग्य की साक्षात् मानव मूर्ति।
इससे विपरीत तेरा रूप ही कठोर क्रूर मूर्ति।
असत्य चोरी कुशील परिग्रह पाप की साक्षात् मूर्ति।। (2)

क्रोध मान माया लोभ व मोह काम की मूर्ति।
आक्रमण युद्ध विध्वंस की साक्षात् दानव मूर्ति।
इससे परे भी तेरा ही रूप, साधु-संत व बुद्ध।। (3)

आचार्य पाठक श्रमण केवली तीर्थंकर व सिद्ध।
इसलिये तो देव दानव राक्षस भूत पिशाच/(व यक्ष)।
अवतारी या शलाकापुरुष तीर्थंकर (भी) तेरा रूप।। (4)

शक्ति के सदुपयोग से (तू) बनता महामानव रे!/(हे!)।
शक्ति के दुरुपयोग से तू बनता दानव रे!/(हे!)।
स्व-पर विश्वकल्याण हेतु तू सत् प्रयत्न कर।। (5)

इसलिये तेरा विभिन्न रूप 'कनक' किया उल्लेख।
'कनक' भी ऐसा सदा कर रहा है प्रयत्न।
विश्वमानव भी प्रयत्न करे भावना भाये अहर्निश।। (6)

परसाद, दिनांक 20.03.2013, रात्रि 10.29

प्रतिष्ठा से महान् चारित्र

(राग : छोटी-छोटी गैया...)

प्रतिष्ठित से श्रेष्ठ चारित्रनिष्ठ, श्रेष्ठ या कनिष्ठ होता प्रतिष्ठित।
सुगुण से होता चारित्रनिष्ठ, धनादि से भी होता प्रतिष्ठित।।

सत्यनिष्ठा उदारभाव युक्त, दया-दान व सेवा से सहित।
सरल सहज व विनम्र युक्त, धैर्य क्षमा युक्त चारित्रनिष्ठ।।

स्व-पर उपकार भाव सहित, ईर्ष्या-द्वेष-घृणा भाव रहित।
निन्दा चुगली विद्वेष रहित, सत्य समता शान्ति सहित।।

ऐसा व्यक्ति प्रसिद्ध भले न होता, तथापि वह महान् व्यक्ति ही होता।
अप्रसिद्ध सिद्ध क्या होते हैं तुच्छ, लाखों चक्रवर्ती भी उनसे तुच्छ।।

चारित्र तो आत्मा का स्वभाव होता, स्वर्ग मोक्ष के लिए हेतु बनता।
स्वभाव का अभाव कभी न होता, सर्वसुखकारी व पावन होता।।

प्रतिष्ठा तो नामकर्मजन्य भी होती, सत्ता-सम्पत्ति द्वारा प्राप्त भी होती।
इसके लिए अनेक कुकार्य होते, स्व-पर अपकारी कार्य भी होते।।

प्रतिष्ठा व शाश्वतिक आत्मा की होती, समस्या व विषमता जन्म भी लेती।
उसके समाधान हेतु पाप भी होते, अहंकार पक्षपात विनाश होते।।

प्रतिष्ठा त्याग करते महान् जन, चारित्रनिष्ठ होते वे सज्जन।
चारित्र पालते यश मिले ना मिले, 'कनकनन्दी' तो चारित्र ही पालते।।

परसाद, दिनांक 12.03.2013, द्विपहर 4.50

अकारण से आनन्द, सकारण से दुःख

(राग : आत्मशक्ति...)

अकारण से ही आनन्द होता, आनन्द आत्म स्वरूप है।
सकारण से ही दुःख होता, दुःख अनात्म स्वरूप है।।

चैतन्यमय है आत्म रूप, बाह्य है जड़ स्वरूप।
जड़ तो सदा आनन्द रिक्त, उससे न मिले सुख।।

औषधि रोगी ही सेवन करते, नहीं करते निरोगी है।
दुःखी जीव ही परावलम्बी होते, नहीं होते सुखी जीव है।।

यथा अग्नि जो उष्ण होती, उष्णता अग्नि स्वरूप है।
शीतल जल उष्ण होता, कारण उसका अग्नि है।।

चिदानन्दमय आत्मरूप, सहज प्राकृतिक रूप है।
जन्म-मरण रोगादि दुःख, कर्म संयोग स्वरूप है/(इसका कारण कर्म है)।।

कारण से यदि सुख होता, वह तो सुखाभास है।
यथाहि जल में उष्णता, वह तो अग्नि जनित है।।

कारण निमित्त/(जनित) जो सुख होता, वह अचिर स्थाई है।
कारण लोपे सुख भी लोप, अथवा दुःखदायी है।।

फैशन-व्यसन भोग-विलास या, हिंसा झूठ कुशील (से) है।
परिग्रह कारण जो सुख होता, कण्डू खुजाल समान है।।

शान्त भाव से बिना कारण/(हेतु) से, सुख जो होता सहज/(स्वभाव) है।
प्रकाश यथा सूर्य का होता, जीव स्वभाव आनन्द है।।

इसी हेतु ही चक्रवर्ती भी, त्यागते वैभव-भोग है।
आत्मा में ही लीन होकर, पाते अनन्त आनन्द/(सुख) है।।

चक्रवर्ती भी जो भोग-भोगते, पाते नरक-दुःख है।
आकिञ्चन्य जो मुनि/(सुखी) होते, पाते अनन्त सुख है।।

परावलम्बन में आनन्द/(सुख) नहीं है, स्वावलम्बन में है सुख।
आनन्दधन है आत्मरूप, 'कनक' का शुद्ध रूप है।।

परसाद, दिनांक 13.03.2013, रात्रि 3.30

जीनियस (प्रतिभावान्) बनने के कारक

(राग : सावन का महीना...)

जीनियस बनने के उपाय को जानो, प्रयोग द्वारा जीनियस बनो।
उनतीस प्रतिशत (29%) है पर्सपिरेशन, पन्द्रह प्रतिशत (15%) है एक्स्लोरेशन।।

तेरह प्रतिशत (13%) है फ्रस्टेशन, ग्यारह प्रतिशत (11%) है इमीटेशन।
ग्यारह प्रतिशत (11%) है डेस्परेशन, आठ प्रतिशत (8%) है एस्पिरेशन।।

सात प्रतिशत (7%) है कंटेम्प्लेशन, पाँच प्रतिशत (5%) है इम्प्रोवाइजेशन।
एक प्रतिशत (1%) है इंस्पिरेशन, किंचित् प्रतिशत (0.1%) है इलेशन।।

अतः परिश्रम करो विशेष, मौलिक शोध-बोध के सह।
कुण्ठा दूर हेतु अनुकरण कर, महत्वाकांक्षा से निराशा हरो।।

चिन्तन से प्रदर्शन भी करो, प्रेरणा से खुशी प्राप्त करो।
साथ ही कुछ कारक होते, कर्म संस्कार या जिनोम होते।।

प्रतिभा के कुछ स्तर भी होते, बुद्धि मेधा संज्ञा भी होती।
चिन्ता/(तर्क) मति स्मृति भी होती, अनुमान व प्रज्ञा भी होती।।

यह सब मतिज्ञान के भेद, इससे परे है श्रुत प्रभेद।
अवधि मनःपर्यय ज्ञान प्रकृष्ट, केवलज्ञान है सर्व उत्कृष्ट।।

केवलज्ञान अनन्त जानता, अवधि मनःपर्यय असंख्य ज्ञाता।
मतिश्रुत ज्ञान संख्यात ज्ञाता, ये सबके मूल चैतन्य आत्मा।।

अभी तो केवल दो ज्ञान होते, अन्य ज्ञान सभी नहीं होते।
आत्मज्ञान ही है सच्चा ज्ञान, 'कनकनन्दी' का स्वरूप ज्ञान।।

(1) 29% पर्सपिरेशन (कड़ी मेहनत), (2) 15% एक्स्फोरेशन (खोज), (3) 13% फ्रस्टेशन (कुण्ठा), (4) 11% इमीटेशन (नकल), (5) 10.9% डेस्पेरेशन (निराशा), (6) 8% एस्पिरेशन (महत्वाकांक्षा), (7) 7% कंटेम्प्लेशन (चिन्तन), (8) 5% इम्प्रोवाइजेशन (तात्कालिक प्रदर्शन), (9) 1% इस्पिरेशन (प्रेरणा), (10) 0.1% इलेशन (खुशी)।

(दैनिक भास्कर के एक चित्रमय लेख से प्रभावित)

परसाद, 14.03.2013, रात्रि 11.50

सम्पूर्णता की प्राप्ति

-'जैनमित्र' शैलेन्द्र घीया, मुम्बई

यदि पैसा रह गया मात्र आँकड़ों तक,
और गेहूँ भी सिर्फ बोरियों तक।

तो हकीकत और स्वप्न में फर्क ही क्या?
'और उपयोग में न आया तो मतलब ही क्या?
मानो लग्न हुआ पर मिलना ही मना।

बजाय के गेहूँ चूहे ले जाये,
क्यों न उसकी रोटी बनाये।

और बजाय के बदहजमी हमें हो जाये,
क्यों न रोटी बाँट के खाये।

बाँटने से प्रगटेगी महादेवी शान्ति,
और दिल में उसे समा लें तो
लब्धि जो एक-एक प्राप्त होगी,
चार चाँद जीवन में लगा देगी।

एक अलौकिक अनुभव बाँटने में है,
जो मिलता नहीं साधारण कार्य में।

जो सम्पूर्णता अभागों के बीच मिले,
वह मिल नहीं सकती ईंटों की दीवारों में।

जैसे खुशबू आ नहीं सकती कागज के फूलों से।
परिवार का अर्थ बदल डालो, विस्तार से समझो कुछ उसको।
अपना लो उन अभागों को, जो कोई भले लगते हो।
अन्त में-
दिया नहीं, तो दया क्या, और दया नहीं, तो धर्म क्या।

मेरी प्रतिज्ञा

(आचार्य कनकनन्दी की प्रतिज्ञा एवं साधना)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : तेरे प्यार का आसरा...)
एकान्त-मौन में मैं रहना चाहता हूँ...
स्वात्मा की साधना सदा चाहता हूँ...
संकल्प-विकल्पों से दूर रहता हूँ...

राग-द्वेष-मोह को मैं दूर करता हूँ...(1)

त्यागे हुए विषयों को नहीं चाहता हूँ...
गृहस्थों के विषयों से दूर रहता हूँ/
(गृहस्थावस्था की चर्चा नहीं करता हूँ)...
तन-मन-वचन से दूर रहता हूँ...
कृत-कारित-अनुमत से दूर रहता हूँ...(2)

धन-जन-मान व ख्याति-पूजा-लाभ से...
संकीर्ण पंथ-मत-जाति व भाषा से...
तेरा-मेरा भेदभाव घृणा-ईर्ष्या से...
दूर ही रहता हूँ स्वार्थ व लोभ से...(3)

दिखावा-आडम्बर व प्रतिस्पर्द्धा से...
निन्दा-चुगली व वाद-विवादों से...
दूसरों के अनादर-अहित भावों से...
दूर ही रहता हूँ फूट व लूट से...(4)

चन्दा-चिट्ठा-याचना संग्रह वृत्ति से...
भौतिक निर्माण व लन्द-फन्दों से...
दबाव-प्रलोभन-ढोंग-पाखण्डों से...
'कनक' दूर है अनात्म कामों से...(5)

परसाद, दिनांक 21.03.2013, मध्याह्न 12.17

मेरी अन्तः चेतना के संदेश एवं आदेश

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : शत-शत वन्दन..., है अपना दिल तो आवारा...)

बार-बार मुझे बाल काल से...यह संदेश मिलते हैं।
अन्तः चेतना की गहराई से...यह संदेश आते हैं।।ध्रु.।।

सत्य को जानो स्व को पहचानो...करो अपना ही कल्याण।
राग-द्वेष मोह भ्रम त्यागकर...करो विश्व का भी कल्याण।।

स्वयं को आदर्श पहले बनाओ...अन्य को करो बाद में।
निस्पृह एकान्त शान्तभाव से...ध्यान-अध्ययन मौन में/(से)।। (1)

ढोंग पाखण्ड रूढ़ि से परे करो...स्व आध्यात्मिक साधना।
ख्याति पूजा लाभ तेरा-मेरा त्यागो...करो समता की साधना।।

त्यागो प्रतिस्पर्द्धा अन्धानुकरण भी...त्यागो समस्त संक्लेश।
आदेश निर्देश दबाव त्याग करो...त्यागो संकल्प-विकल्प।। (2)

सामाजिक लन्द-फन्द भी त्याग करो...चन्दा-चिट्ठा भी सर्व त्यागो।
भौतिक निर्माण भी त्याग करो...सर्व याचना प्रलोभन त्यागो।।

त्यागो आकर्षण-विकर्षण सर्व...अपना-पराया भी त्यागो।
आध्यात्म साधना विशुद्धि के द्वारा...संकीर्ण भाव को त्यागो।। (3)

सत्य समता शान्ति साधना से...स्व-अनुभव बढ़ाओ।
भाव-व्यवहार इसी से करो...माध्यस्थ-भाव भी बढ़ाओ।।

स्वप्न शकुन अंगस्फूरण व...भाव-शकुन के द्वारा।
अनुभव से माध्यस्थ रहकर...भावी को जानो स्व-द्वारा।। (4)

भावी निर्माण भी भाव से होता है...यह भी अंतः संदेश।
आत्मा-साधना ही सतत करो...यह है अंतः आदेश।।

ऐसा ही संदेश सर्वज्ञ ने दिया...जिनवाणी कां आदेश है।
इसे ही पालन करता है 'कनक'...की अन्य नहीं है आश।। (5)

परसाद, दिनांक 11.04.2013, प्रातःकाल 8.07

(नव संवत्सर की शुभ वेला में)

''सामान्यज्ञान एवं सदाचार''

(राग : रघुपति राघव..., सायोनारा...)

प्राथमिक ज्ञान सच्चा कीजिये...प्राथमिक ज्ञान पक्का कीजिये।
महल हेतु नींव सही कीजिये...फसल हेतु बीज अच्छा बोइये।।

ग्रन्थ अध्ययन हेतु साक्षर बनिये...गणित हेतु अंकज्ञान कीजिये।
भाषा के लिए व्याकरण सीखिये...स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद सीखिये।। (1)

सदाचार हेतु नीतिज्ञान चाहिये...हित-मित-प्रिय बोली चाहिये।
दया दान सेवा सदा कीजिये...अनुशासन भंग मत कीजिये।।

सनम्र सत्यग्राही सदा बनिये...उदार सहिष्णु भाव धरिये।
दीन हीन अहंकार भाव त्यजीये...व्यर्थ के काम मत कीजिये।। (2)

कार्यकारण का ज्ञान कीजिये...अनेकान्तमय भाव कीजिये।
कर्म सिद्धान्त को सही जानिये...गुणस्थानों का भाव जानिये।।

फैशन-व्यसनों से दूर रहिये...आलस्य प्रमाद मत कीजिये।
वाद-विवाद मत कीजिये...शालीनता पूर्ण व्यवहार कीजिये।। (3)

सरल-सहज व मृदु बनिये...गुणग्रहण का भाव धरिये।
ईर्ष्या-तृष्णा व घृणा त्यजीये...अहिंसा क्षमामय भाव धरिये।।

चोरी मिलावट ठगी त्यजीये...कुशील (व) तुच्छता का भाव त्यजीये।
मैत्री प्रमोद भाव धरिये...दुर्जन संगति मत कीजिये।। (4)

व्यायाम-प्राणायाम ध्यान कीजिये...भ्रमण योगासन श्रम कीजिये।
अध्ययन-चिन्तन चर्चा कीजिये...आत्म विश्लेषण सदा कीजिये।।

तनाव संक्लेश चिन्ता त्यजीये...महान् उद्देश्य पूर्ण काम कीजिये।
आदर्शमय शान्त जीवन जिये...कनकनन्दी को आदर्श भाये।। (5)

परसाद, दिनांक 07.05.2013, रात्रि 12.19

शान्ति प्राप्ति के उपाय : पवित्र भाव-व्यवहार

(केवल धार्मिक क्रियाकाण्ड या सत्ता-सम्पत्ति-बुद्धि-प्रसिद्धि-डिग्री से शान्ति नहीं मिलती)

(राग : रघुपति राघव राजाराम...)

रीति-रिवाज को ही धर्म मानते, पावन भाव व्यवहार से रहित होते।
संकीर्ण क्रूर व अज्ञानी (भी) होते, अधिक पापी व अनम्र (भी) होते।।

अन्धविश्वास से सहित होते, संकीर्ण स्वार्थ से ग्रसित होते।
ईर्ष्या द्वेष घृणा सहित होते, उदार सहिष्णु रहित होते।। (1)

भेद-भाव से वे मण्डित होते, अहं दीन हीन से खण्डित होते।
दया दान सेवा से विमुख होते, ख्याति पूजा लाभ के/(में) सम्मुख होते।।

अतएव धर्म का वे फल न पाते, सातिशय पुण्य से वे वंचित होते।
मानसिक आध्यात्मिक सुख/(शान्ति) न पाते, तनाव अशान्ति से सहित होते।।(2)

धर्म सर्व सुखकर हितकर ही होता, धर्म तो आत्मस्वभावमय होता।
क्रोध मान माया लोभ रहित होता, दया दान सेवा परोपकार भी होता।।

इसीसे विपरीत तो अधर्म होता, अधर्म सदा दुःखकर ही होता।
धर्म रहित जो क्रियाकाण्ड करते, सातिशय पुण्य व शान्ति न पाते।। (3)

सत्ता सम्पत्ति से सुख न मिले, डिग्री व बुद्धि से भी सुख न मिले।
केवल बाह्य धर्म से सुख न मिले, भोग-उपभोग से भी सुख न मिले।।

धर्म सहित जो क्रियाकाण्ड करते, वे भी धर्म के फल को पाते।
ऐसे लोक विरले महान् होते, अनुकरणीय व आदर्श होते।। (4)

यह अनुभव मैंने किया बहुत, धार्मिक ग्रंथों में पढ़ा विशेष।
मनोविज्ञान में भी पढ़ा बहुत, आधुनिक विज्ञान भी पाया ये सत्य।।

विज्ञान ने अभी तो शोध किया है, क्रोध मान तनाव को जो त्याग किया है।
दिमाग का बायाँ भाग सक्रिय होता, जिससे उसको विशेष सुख मिलता।। (5)

तीर्थंकर बुद्ध ऋषि साधु महात्मा, शान्ति प्राप्ति हेतु बनते पवित्र आत्मा।
पवित्र भाव का फल होती है शान्ति, कनकनन्दी का लक्ष्य आत्मिक शान्ति।।(6)

परसाद, दिनांक 04.05.2013, मध्याह्न 1.57

(खुशपाल जी-आशा देवी (ग.पु.कॉ. सागवाड़ा) एवं एक वैज्ञानिक शोध लेख भी इस कविता के निमित्त बनें।)

''महानतम रहस्य''

(प्राच्य के प्राचीन रहस्य जिसे अभी पाश्चात्य मान रहा है किन्तु भारत भूल-सा गया)

(राग : सायोनारा..., रघुपति राघव...)

आत्मविश्वास युक्त ज्ञान चाहिये...स्वयं की महानता का भान चाहिये।
आत्मविश्लेषण भी सदा चाहिये...दुर्गुण विसर्जन सदा चाहिये।।

स्व-सत्ता की भी श्रद्धा चाहिये...परमात्मा बनने का लक्ष्य चाहिये।
अनन्त-शक्ति युत स्वयं को मानो...अभिव्यक्ति हेतु ध्यान कीजिये।। (1)

स्व-शक्ति (की) अभिव्यक्ति होती ध्यान से...उदार सहिष्णु साम्यभाव से।
सहज सरल व नम्र भाव से...शम दम क्षमा धैर्य भाव से।।

दान दया सेवा शान्ति भाव से...संयम त्याग व आत्मनिष्ठा से।
आकर्षण-विकर्षण शून्य भाव से...अपेक्षा-प्रतीक्षा रिक्त भावं से।। (2)

इसी से विपरीत होते जो भाव...उससे विकृत होते आत्म-स्वभाव।
आत्मिक-शक्तियों का होता क्षरण...समता शान्ति का होता मरण/(हरण)।।

विश्व का महानतम यह रहस्य...तीर्थंकरों द्वारा ज्ञात रहस्य।
ध्यान योगियों का ज्ञात रहस्य...अतीन्द्रिय ज्ञानियों का स्व-रहस्य।। (3)

प्राच्य-विद्या का यह प्राचीन ज्ञान...पाश्चात्य में हो रहा अनुसंधान।
भारतीय यह अभी भूल-सा गये...भौतिक भोग में डूब-सा गये।।

जिससे समस्याएँ अधिक हुईं...किंकर्तव्यविमूढ़ता व्यापक हुई।
आध्यात्मिक रहस्य माने भारत...'कनकनन्दी' करे सदा प्रयास।। (4)

परसाद, दिनांक 08.05.2013, मध्याह्न 2.57
('गहरा रहस्य' एनमैरी पोस्टमा की पुस्तक से भी प्रभावित यह कविता।)

''सभी-सभी को उपकारी नहीं मानते''

(स्व-स्वार्थ के अनुसार मानते हैं उपकारी-अपकारी)

(राग : विष्णुपद छन्द...(कहाँ गये चक्री...))

सभी-सभी को स्व-उपकारी कोई नहीं मानते।
स्व-स्व स्वार्थ के अनुसार ही उपकारी मानते।।

तीर्थंकर बुद्ध ईसा मसीह साधु-साध्वी/(आर्क) सज्जन।
सभी न माने उपकारी उन्हें कोई माने दुर्जन।। (1)

इसलिये तो इन्हें भी बहु कष्ट भी देते।
अज्ञानी दुर्जन अपकारी मान हत्या भी करते।।

चोर वेश्या हत्यारे को भी उपकारी मानते।
जिससे अपनी स्वार्थ सिद्धि हो उसे हितकारी मानते।।(2)

मकड़ी मेंटेस् कोबरा व नरभक्षी/(बेम्पायर) मानव।
स्व-प्रजाति के भक्षक होते ऐसे हैं दानव।।

शार्क के गर्भस्थ बच्चे (भी) अन्य को खाते।
हिप्पो शेर मानव भी स्वजन को मारते।। (3)

सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि हेतु स्व-जन मारते।
स्वार्थ सिद्धि के सहयोगी को सम्मान भी करते।।

कृतघ्न मानव अधिक होते कृतज्ञ न होते।
माता-पिता भाई-बन्धु व गुरु को भी मारते।। (4)

प्रकृति दोहन शोषण विकृत मानव करता।
जिस हांडी/(थाली) में खाना खाता छेद उसमें करता।।

मातृ जाति से जन्म लेता उसका द्रोही बनता।
भ्रूण हत्या दहेज हत्या पक्षपात करता।। (5)

जिस मृग शिशु से खेलता शेर उसे मारकर खाता।
तथाहि स्वार्थी मानव का व्यवहार होता।।

जिस पशु-पक्षी मछली सर्प मानव को पालता।
उसे भी कष्ट देता या मारकर भी खाता।। (6)

जो गुणग्राही सज्जन व कृतज्ञ भी होते।
वे ऐसे कुकृत्यों को कभी नहीं करते।।

स्व-पर उपकार में ही सदा रत रहते।
'कनकनन्दी' को ऐसे ही सद्गुण हैं भाते।। (7)

परसाद, दिनांक 11.05.2013, मध्याह्न 12.20

''सच्ची एवं झूठी प्रशंसा का स्वरूप एवं फल''

(राग : आत्मशक्ति से ओतप्रोत..., तुम दिल की धड़कन...)

सच्ची प्रशंसा का स्वरूप जानो...गुणानुमोदना सच्ची प्रशंसा मानो।
उदार सहिष्णु प्रोत्साहनमय...सरल-सहज होती वात्सल्यमय।।ध्रु.।।

गुणेषु प्रमोद इसे ही कहते...स्तुति वन्दना पूजा भी कहते।
प्रार्थना आरती आदर कहते...पुरस्कृत करना या सम्मान कहते।।

इसी से बहुविध लाभ ही होते...पूज्य पुरुष प्रति यदि यह करते।
उनके गुण हमें भी मिलते...'वन्दे तद्गुणलब्धये' कहते।। (1)

पाप निरोध होता पुण्यार्जन...दर्शन विशुद्धि होता विनय गुण।
भाव पवित्र भी होता विशेष...स्वर्ग मोक्ष सुख मिले अशेष।।

गुण-गुणी प्रति यदि यह करते...आह्लादकारी भाव जगते।
स्वयं में वे गुण होते विकसित...गुणी भी वे गुण करते विकासित।। (2)

परस्पर प्रेम वात्सल्य बढ़ते...सहयोग व संगठन बढ़ते।
इसका प्रभाव बहुविध होते...अन्य जन भी शिक्षा लेते।।

दुर्गणी की जो प्रशंसा होती...संकीर्ण स्वार्थ से प्रेरित होती।
इसके प्रभाव विपरीत होते...स्व-पर अहितकारी (ये) होते।। (3)

इसे कहते हैं खुशामदकारी...दुर्गण प्रेरक चापलूसकारी।
चमचागिरी ये भाण्ड के काम...शिकारी ठग व वेश्या के काम।।

प्रशस्तभाव है होती प्रशंसा...नवकोटि से होती प्रशंसा।
प्रशंसनीय बने गुण व गुणी...'कनक' को भाये गुण व गुणी।। (4)

परसाद, दिनांक 13.05.2013, मध्याह्न 1.27 (अक्षय तृतीया)

मानवीय कलंक को मिटाने वाले महामानव अब्राहम लिंकन

(राग : शत-शत वन्दन..., है अपना दिल तो...)

हुआ था एक महामानव, नाम था अब्राहम लिंकन।
मिटाया मानव जाति-कलंक, दास-प्रथा रूपी महाकलंक।।

परिवार था उनका निर्धन, पंकज/(कमल) सम खिले लिंकन।
मृदुल सरल वीर न्यायप्रिय, दास उद्धारक मानव प्रिय।।

धीर-वीर धैर्यशाली गम्भीर, हार न मानने वाला कर्मवीर।
लोकतन्त्र के है अमोघ वीर, मानव अधिकार के उन्नत शिर।।

उदार व्यापक विचारशील, परोपकारी मननशील।
न्याय राजनीति समता नेता, अमेरिका के महान् नेता।।

अन्तःकरण को मानने वाले, पवित्र विचार करने वाले।
दास-प्रभु को न मानने वाले, समता-शासन पालने वाले।।

शत्रु को भी मित्र मानने वाले, मित्र बनाकर मिटाने वाले।
तन-मन-धन-सत्ता-समय, सदुपयोग में किया नियोग।।

तुम्हारे आदर्श मानव पाले, सत्ता-सम्पत्ति सम्पन्न वाले।
पृथ्वी में न्याय का शासन होगा, 'कनक' का भाव सफल होगा।।

परसाद, 20.04.2013, मध्याह्न 2.34

सज्जन एवं दुर्जन संगति के फल

(राग : हल्दीघाटी में समर..., गजानना श्री गणराया...)

सज्जन संगति करणीय...सद्गुण सदा वरणीय।
दुर्जन संगति त्यजनीय...दुर्गुण कदा न भजनीय।।

सज्जन शीतल छाया सम...दुःख ताप के उपशम।
दुर्जन अग्नि ताप सम...दुःख ताप के प्रवर्द्धन।।

चन्दन सम सज्जन संग...सुगन्ध शीतल अनुपम।
दुर्गन्ध सम दुर्जन संग...दुर्गन्ध दूषित होता मन।।

सज्जन होते दीप सम...स्व-पर प्रकाशित जीवन।
अन्धकार सम होते दुर्जन...स्व-पर अप्रकाशी जीवन।।

मधुर संगीतमय सज्जन...झंकृत हो जाता सुमन।
शोरगुल सम हैं दुर्जन...तनावमय होते तन-मन।।

सूर्यकिरण समान सज्जन...विकसित होते गुणी सुमन।
कोहरा के सम हैं दुर्जन...विनाशकारी होते सुमन।।

प्रेरक प्रसन्नकारी सज्जन...प्रोत्साहकारी मिले सुज्ञान।
कुण्ठा निराशकारी दुर्जन...शंका भय मिले कुज्ञान।।

अमृत समान होते सज्जन...रोग-शोक प्यास शमन।
मद्य समान होते दुर्जन...पाप-ताप/(मद) दुःख जनम।।

उदार सहिष्णु होते सज्जन...स्व-पर उपकारी निर्मल मन।
अनुदार स्वार्थी होते दुर्जन...स्व-पर अपकारी दूषित मन।।

सज्जन संगति करो हे! जन...उन्नतमय करो जीवन।
दुर्जन संगति त्यजो हे! जन...'कनक' संगति करे सज्जन।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 31.05.2013, रात्रि 10.18

''अहंवाद से विवाद/(बहस), संवेदना से संवाद''

(बहस का विषय कौन सही, तो संवाद का विषय क्या सही)

(राग : तुम दिल की धड़कन...)

अहंवाद से विवाद होता उत्पन्न, संवेदना से संवाद होता उत्पन्न।
सत्य शान्ति विनाशक विवाद होता, सत्य शान्ति प्राप्ति हेतु संवाद होता।।ध्रु.।।

'कौन सही' बहस का विषय होता, 'क्या सही' संवाद का विषय होता।
बहस से दुराग्रह दूर न होता, संवाद में दुराग्रह हठ न होता।।

दुराग्रह से सत्य दूर हो जाता, जिससे सत्य निर्णय कभी न होता।
इसी से विपरीत संवाद होता, जिससे सत्य निर्णय शीघ्र हो जाता।। (1)

आध्यात्मिक होता पूर्ण संवादमय, अनुभव पूर्ण सत्य उदारमय।
हठाग्रह दुराग्रह अहं रहित, अन्तःचेतनागम्य तर्क रहित।।

इसी से विपरीत होता बहस, अनुभव शून्य संकीर्ण युक्त।
हठाग्रह दुराग्रह अहं सहित, अवचेतन तुष्टी युक्त तर्क सहित।। (2)

संवेदना होती है पवित्र भाव, अनेकान्तमय व उदार भाव।
स्याद्वाद होता है संवादमय, सापेक्ष कथन सह सहिष्णुमय।।

इसी से विवाद विनष्ट होते, समन्वय सहयोग विकास होते।
तीर्थंकर देवों की यह पवित्र देन, 'कनकनन्दी' इसे करे सम्मान।। (3)

श्री राजेन्द्र शान्ति धाम, काया (प्रवास में),
दिनांक 15.05.2013, मध्याह्न 2.30

''अभी के वृक्ष भी हैं कल्पवृक्ष सम''

(पशु-पक्षी कीट-पतंग मानव के जीवन आधार : वृक्ष)

(पौराणिक एवं आधुनिक शोधपूर्ण कविता)

(राग : सावन का महीना..., मनहरण छन्द, भातकुलीच्या...)

शास्त्रों में कल्पवृक्षों के बारे में पढ़ता हूँ,
अभी के वृक्षों का भी मैं शोध-बोध करता हूँ।

दोनों में समानतायें कुछ ही पाता हूँ,
जिसका वर्णन यहाँ मैं कर रहा हूँ।।

भोजनांग से यथा भोजन मिलता था,
अभी भी वृक्षों से भोजन मिलता है।

अनाज तिलहन फल सब्जी पत्ती भाजी भी,
घास वृक्ष लता गुल्म से मिलते हैं।।

गुड़ शक्कर तेल मसाले औषधि पेय,
अभी भी वनस्पति से मिलते हैं।

पशु-पक्षी मनुष्य व कीट पतंग,
'पानांग' सम प्राप्त करते विविध पेय।।

'आलयांग' से यथा आलय मिलता था,
अभी भी आलय बनते वृक्ष गुल्मादि/(घासादि) से।

पशु-पक्षी अनेक निवास करते वृक्षों में,
मनुष्यों के घर भी बनते वृक्षों से/(में)।।

'वस्त्रांग' से यथा मिलते थे विविध वस्त्र,
अभी भी प्राप्त करता (है) मानव वृक्षों से वस्त्र।

कपास नीलगिरि सण कदली घास,
प्राप्त होते वस्त्र अभी भी वृक्षों से।।

'भूषणांग' से भूषण तथा 'मालांग' से माला,
अभी भी प्राप्त होते तथा भूषण व माला।

फूल पत्ती लकड़ी से बनते हैं ये सब,
वनवासी अधिक प्रयोग करते हैं सब।।

'मद्यांग' से मधुर रस प्राप्त होता था पूर्वे,
अभी भी मधुर रस मिलता वृक्ष फलो से।

गन्ना खजूर ताड़ आम अनार अँगूर,
नारंगी अनान्नास से मिलते रस मधुर।।

'दीपांग' 'तेजांग' से यथा मिलती थी ज्योति,
अभी तेलों से मिलती है दीपक ज्योति।

'तूर्यांग' से मिलते थे विभिन्न वाद्य,
वृक्षों से अभी बनते हैं अनेक वाद्य।।

'भाजनांग' से बनते थे विभिन्न पात्र बर्तन,
अभी भी वृक्षों से बनते हैं कुछ बर्तन।

'प्राणवायु' मिलती है वनस्पति से,
जिसके बिना मानव लोप होगा धरती से।।

प्रदूषणरूपी विष नाशक होते हैं वृक्ष,
तापमान नियंत्रक ए.सी. (A.C.) होते हैं वृक्ष।

प्राकृतिक सौंदर्य के अलंकार होते वृक्ष,
मदा अपर्दन रोधी होते हैं वृक्ष।।

वन उपवन के प्रति होते हैं वृक्ष,
वर्षा आमंत्रणकारी होते हैं वृक्ष।

जलस्तर व आर्द्रता के हेतु होते हैं वृक्ष,
पुष्प सुगन्धी के आधार होते हैं वृक्ष।।

वृक्ष बहु उपकारी मानव पशु-पक्षी के,
वृक्षारोपण व रक्षणीय सर्व हित में।

कृतघ्न न बनो मानव कृतज्ञ बनो,
'कनकनन्दी' के आह्वान सर्वथा सुनो।।

परसाद, दिनांक 29.03.2013, मध्याह्न 2.58

(पलाश वृक्ष के फूलों के मकरंद को विभिन्न प्रकार के पक्षी व गिलहरी आदि पान करते हुए देखकर यह कविता सृजित हुई।)

संगीत-चिकित्सा

(राग : सायोनारा..., रघुपति राघव..., फूलों का..., छोड़ दे सारी..., यमुना किनारे..., मेरा जूता है..., शोधिशी मानवा (मराठी))

सुर ताल गाना का संगत है संगीत, तन-मन इन्द्रियों को करता आह्लादित।
संगीत की ध्वनि में होती है लय, तन-मन इन्द्रियों को बनाती तल्लय।।

जिससे श्वास क्रिया भी बनती तल्लय, रक्त संचार भी बनता तन्मय।
हृदय गति की लय तन्मय होती, मन की गति/(स्थिति) भी तन्मय/(तल्लय) होती।।

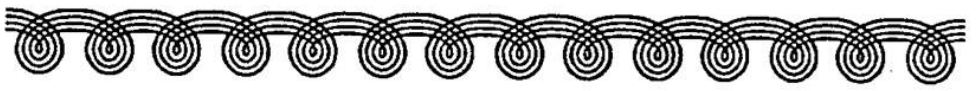

इसी से मानसिक रोग दूर होते, शारीरिक रोगों को भी साथ ले जाते।
शरीर मन जब स्वस्थ्य होते हैं, इन्द्रियों के स्वास्थ्य भी सही होते हैं।।

पाचन ग्रन्थियों को भी बल मिलता है, चिन्ता व अकेलापन दूर भागता/(है)।
शरीर में सप्त धातु सात रंग है, सप्त स्वरों/(सुरों) से करने संगत है।।

कफज रोगों को दूर करता भैरवी, श्वास यक्ष्मा खाँसी भागती दमा भी।
मानसिक चंचलता तथा क्रोध को, भगाते राग मल्हार जैजैवन्ती।।

रक्तचाप हेतु असावरी राग है, उदर रोगों को पंचम राग है।
राग खमाज दूर करे पागलपन, अनिद्रा को भगाता नीलाम्बरी तान/(राग)।।

श्रीराम राग से पाचन क्रिया सही, पीड़ा को दूर करे रागवर्द्धनी।
शरीर को क्रियाशील बनाये तोड़ी राग, हृदय फेफड़ों को सही करते हैं राग।।

ब्राह्मी सुन्दरी व वृषभसेन ने, संगीत सीखे थे आदिनाथ से।
गन्धर्व शास्त्र का प्रणयन किया था, छन्दशास्त्र का भी प्रशिक्षण दिया था।।

संगीत के साक्ष्य मिले सिन्धु घाटी में, संगीत ज्ञान था चीन देश में।
छन्दबद्ध पद्य में ग्रन्थ रचे हैं, संस्कृत प्रकृति पाली भाषा में।।

संगीत समयसार सामवेद भी, संगीत शिक्षामय प्राचीन ग्रन्थ भी।
वाद्ययंत्र भी बहुविध बने थे, प्राचीन मन्दिरों के मूर्ति से सिद्ध है।।

अभी भारत में बेसुर संगीत है, प्रदूषणमय व अश्लील युक्त है।
संगीत कानफोड़ू रोगकारक है, शब्द अर्थ व शिक्षा रहित है।।

विदेशी सीख रहे हैं हमारे संगीत, भारतीय सीखते हैं विकृत संगीत।
भारतीय जागो अभी सही अपनाओ, 'कनक' का आशीष स्वास्थ्य को पाओ।।

परसाद, दिनांक 22.03.2013, रात्रि 11.15

(यह कविता डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा के लेख से भी प्रभावित है।)

अन्य की क्षुद्रता-दुर्दशा से दया आती तथा शिक्षा मिलती

(राग : छोटी-छोटी गैया...)

शिक्षा भी मिलती दया भी आती, देखकर मानव की दुष्प्रवृत्ति।
क्षुद्र भावना सह नीच प्रवृत्ति, दीन-हीन अहं की कुप्रवृत्ति।।

दुर्लभ मानव जन्म लेकर भी, नहीं है परमार्थ की भावना।
संकीर्ण स्वार्थवश में होकर, पाते हैं विचित्र यंत्रणा।।

काम भोग लोभ लालसावश में, न जानते निज आत्मा।
श्रद्धा विवेक अन्धे बनकर, भोग रहे चिर यातना।।

मनमाना रूप से स्वयं को दिखाते, सच्चा अच्छा पक्का उच्च मानते।
शिक्षित सभ्य व ज्ञानी आदर्श, निर्दोष महान् व श्रेष्ठ।।

कूपमण्डुक सम होते महान्, मच्छर सम होते गुणग्राही।
बगुला सम वे होते सफेद, लोमड़ी सम होते महाज्ञानी।।

गोबरिला सम धन संग्रह करते, यथा गोबरिला गोबर को।
अपरिचित कुत्ते समान लड़ते, स्वजाति भक्षक कोबरा सम।।

जल मकड़ी सम चक्कर लगाते, उच्च लक्ष्यहीन स्वार्थ में।
कोल्हू बैल सम भटकते रहते, ईर्ष्या-तृष्णा-घृणा चक्कर में।।

मृग सम मृगमरीचिका पीते, विषम-विष-सम भोग रस।
मकड़ी जाल सम माया जाल में; फँसते-फँसाते भी अन्य जन।।

सुर्पणखा समत करते फैशन, व्यस्त-मस्त होते व्यसन में।
चोर-मायाचारी रावण सम होते, श्रेष्ठता प्रदर्शन दिखावा में।।

गोमुख व्याघ्र सम होते हैं धार्मिक, तोता रटन्त सम होते ज्ञानी।
परोपदेशक होते हैं धोबी के सम, गधे सम होते परदोषवाही।।

इनसे मुझे तो शिक्षा मिलती, इनके समान न बनूँ कभी।
इनका भी हो आत्म कल्याण, 'कनक' की भावना सदा पावन।।

परसाद, दिनांक 02.05.2013, रात्रि 11.02

कब ये भारत महान् होगा?

(भारत को पुनः महान् बनाने के सूत्र)

(राग : आत्मशक्ति से..., शायद मेरी..., सायोनारा...)

कब ये भारत महान् होगा, स्व-संस्कृति का ज्ञान करेगा?
छोड़ के फैशन-व्यसन भेड़चाल, आत्म संस्कृति को वरण करेगा।।

त्याग के पाश्चात्य अन्धानुकरण, ज्ञान-विज्ञान को सही जानेगा।
सादा जीवन व उच्च विचार युत, उदार व्यापक भाव धरेगा।।

अनेकान्तमय विचार सहित, वैश्विक कुटुम्ब भाव धरेगा।
आदर्शमय जीवन जीकर, विश्व गुरुत्व को पुनः पायेगा।।

दीन-हीन अहं भाव त्यागकर, सत्य समतामय बनेगा।
अन्याय अत्याचार भ्रष्टाचार मुक्त, महान् आदर्श देश बनेगा।।

गरीबी भुखमरी बीमारी मुक्त हो, स्वस्थ्य सबल सम्पन्न होगा।
शोषण मिलावट कालाबाजार शून्य, न्याय से उन्नतशाली बनेगा।।

अपरिग्रह व अहिंसा के द्वारा पर्यावरण की रक्षा करेगा।
तन-मन आत्मा स्वच्छता सहित, राष्ट्र की स्वच्छता स्वयं करेगा।।

संकीर्ण पंथ मत जाति से परे, राष्ट्रीय एकता भाव धरेगा।
कट्टर संकीर्ण क्षेत्र-भाषा परे, राष्ट्रीय गौरव काम करेगा।।

भूखण्ड केवल भारत नहीं है, सभ्यता संस्कृति प्रकृतिमय है।
मानव पशु-पक्षी वनस्पति आदि, ज्ञान-विज्ञान सहित देश है।।

इनकी सुरक्षा समृद्धि से ही, भारत भी सही महान् होगा।
ऐसी महानता 'कनक' सदा चाहे, आत्मविकास सम्पूर्ण होगा।।

परसाद, दिनांक 07.05.2013, मध्याह्न 1.54

''व्यापार के स्रोत है-भय-आशा-लालच''

(राग : छोटी-छोटी गैया..., यमुना किनारे...)

भय/(इच्छा) आशा लालच से व्यापार होता, वस्तु से लेकर धर्म का होता।
निस्पृही वीतरागी तो इसी से बचते, अज्ञानी मोही जन फँसे रहते।।

भय से रक्षा हेतु होता व्यापार, अस्त्र-शस्त्र युद्ध हत्या गुप्त विचार।
मंत्र-यंत्र टोना-टोटका भविष्य फल, ताला-चाबी रक्षाकवच सुरक्षा बल।। (1)

तथाहि आशा/(इच्छा) से भी होता व्यापार, सत्ता-सम्पत्ति हेतु होता व्यापार।
प्रसिद्धि सम्मान या जनसंग्रह हेतु, न्याय-अन्याय से होते बहु व्यापार।।

लालच तो व्यापार का प्रमुख स्रोत, मिलावट ठगी भ्रष्टाचार सहित।
न्याय राजनीति वाणिज्य शिक्षा व धर्म, हर क्षेत्र में होते अयोग्य कर्म।। (2)

शिकारी करता यथा बहु प्रयत्न, शिकार को पकड़ने का करता यत्न।
प्रलोभन भय आशा बहला-फुसला, तथाहि व्यापार में विभिन्न कला।।

परस्पर उपग्रहो जीवों का होता, उपकार से अपकार बहु करता।
जीव जीवस्य रक्षण होना विधेय, जीव जीवस्य भक्षण होता अधिक।। (3)

सहयोग उपकार सेवा समन्वय, प्रत्युपकार दान-त्याग योगदान।
यह तो योग्य है विकास निमित्त, शोषण भक्षण तो विनाश निमित्त।।

दुग्धपान योग्य दोहन विधेय, शोषण भक्षण नहीं है विधेय।
सत्य न्याय समता सहयोग विधेय, 'कनकनन्दी' चाहता है सर्वोदय।। (4)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक ...., मध्याह्न 3.20

कृत्रिम आधुनिक जीवन

(राग : छोटी-छोटी गैया...)

कृत्रिम जीवन आधुनिक हो गया, नीति सदाचार से रहित हो गया।
मनमाना उत्श्रृंखल उद्दण्ड हो गया, अनुशासन नम्रता रिक्त हो गया।।

कृत्रिम बाजारू खान-पान हो गया, अश्लील भद्दे पहनावा हो गया।
यूज एण्ड थ्रो सामान हो गया, बफर सिस्टम प्रीतिभोज हो गया।।

हिंसात्मक प्रसाधन द्रव्य हो गया, रोगकर केमिकल मिश्र हो गया।
डिस्को डांस अश्लील गाना हो गया, कानफोड़ संगीत बाजा हो गया।।

मोबाईल इंटरनेटमय हो गया, टी.वी. मोटरमय जीवन हो गया।
सेवा सहयोग प्रेम दूर हो गया, यांत्रिकमय जीवन जड़ हो गया।।

नैतिकता बिन पढ़ाई हो गयी, संवेदनशीलता कम हो गयी।
आध्यात्मिकता गायब हो गई, परलोक भावना दूर हो गई।।

पढ़ाई बड़ाई चमड़ी रह गई, दमड़ीमय भावना रह गई।
भौतिकतामय चकाचौंध हो गई, अंतरंग चक्षु की ज्योति चल गई।।

माता-पिता बन्धुजन पर हो गये, आध्यात्मिक गुरु तो बेकार हो गये।
बॉयफ्रेंड गर्लफ्रेंड निज हो गये, फैशन-व्यसन लक्ष्य हो गये।।

तनावमय जीवन अतः हो गया, सुख-शान्ति प्रेम से रिक्त हो गया।
आध्यात्मिक जीवन से ही शान्ति मिलती, 'कनक' का लक्ष्य है आत्मिक शान्ति।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 01.06.2013, अपराह्न 5.36

''पास-फैल की सही पद्धति''

(पढ़ाई के पास-फैल नहीं है जीवन के पास-फैल)

(राग : सुनो-सुनो हे दुनियाँ वालों!...)

सुनो-सुनो हे भारतवासी!...पास-फैल की सही पद्धति।
स्कूल परीक्षा के पास-फैल ही...नहीं होती है सही पद्धति।।ध्रु.।।

महान् लक्ष्य व सही पुरुषार्थ...पास होने की सही पद्धति।
इससे भिन्न परीक्षा पास भी...हो जाती है फैल पद्धति।।

तीर्थंकर बुद्ध ईसा मसीह...रवीन्द्र लिंकन एडीसन।
परे होकर पास-फैल के...बन गये वे अति महान्।। (1)

गाँधी अम्बानी टाटा बिड़ला...महापंडित सांस्कृतायन।
कालिदास व तुलसीदास...वरदराज हुए तथा महान्।।

क्रोध मान माया लोभ...काम ईर्ष्या तृष्णा मोह से/(में)।
होते हैं फैल जीवन्त शिक्षा में...पास होते हैं स्कूल से/(में)।। (2)

अनेक डिग्रीधारी जन तो...अनेक क्षेत्र में होते नापास।
फैशन-व्यसन भ्रष्टाचार से...करते हैं स्व-पर विनाश।।

आलस प्रमाद उच्छृंखल व...अन्याय अत्याचार करते।
शोषण मिलावट ठगी चोरी...बलात्कार व हत्या करते।। (3)

कलह विसंवाद अशान्ति...तनाव से आत्महत्या तक करते।
इनसे भिन्न अनपढ़ भी...धन सम्पन्न व सुखी होते।।

लक्ष्य विहीन अभी की शिक्षा...नौकरी शादी प्रतिष्ठा हेतु।
ज्ञान सदाचार अनुभवहीन...केवल डिग्री प्राप्ति के हेतु।। (4)

आनन्ददायी नहीं है शिक्षा...नहीं है मुक्ति प्राप्ति के हेतु।
तोता रटन्त नकलीज्ञान...फैशन-व्यसन तनाव हेतु।।

यह शिक्षा तो अभक्ष सम...जिससे होते रोग-मरण।
व्यक्ति परिवार राष्ट्र नाशक...समय शक्ति व धन सम्मान।। (5)

हित ग्रहण व अहित त्याग...जिससे होता है वह सुज्ञान।
सुज्ञान हेतु ही शिक्षा चाहिये...'कनक' चाहे सदा सुज्ञान।। (6)

हिरणमगरी, सेक्टर-11 (उदयपुर), दिनांक 25.05.2013, रात्रि 12.04

शिक्षा सम्बन्धी शोधपूर्ण कविता

ज्ञान/(शिक्षा) प्राप्ति के उत्तरोत्तर श्रेष्ठ उपाय

(शब्द ज्ञान<पद ज्ञान<वाक्य ज्ञान<भाषा ज्ञान<विषय ज्ञान<भाव ज्ञान<अनुभव)

(राग : सुनो-सुनो हे दुनियाँ वालों!..., शायद मेरी शादी...)

सुनो-सुनो हे ज्ञानपिपासु!...ज्ञान के उत्तरोत्तर स्तर।
शब्द से लेकर अनुभव तक...होते हैं दुर्लभ उत्तरोत्तर।।ध्रु.।।

शब्द से पद-पद से वाक्य...वाक्य से भाषा दुरूहतर।
भाषा से विषय-विषय से भाव...भाव से अनुभव होता दुष्कर।।

शब्द ज्ञान तो प्राथमिक ज्ञान...जो होता बिना वाक्य प्रयोग।
वाक्यांश जो होता है पद...पद होता कारक युक्त प्रयोग।।

एकादिक पद सह वाक्य होता...जिससे अभिप्राय प्रकट।
एकादिक वाक्य से होती है भाषा...जिससे होता ज्ञान प्रकट।।

जिससे होती भाव-भासना...जिससे होता अनुभव ज्ञान।
अनुभव ज्ञान ही सच्चा ज्ञान...जिसके सहयोगी शब्दादि ज्ञान।।

अनुभव ज्ञान से शब्दादि ज्ञान...सरलता से होते अधिगम।
अनुभव ज्ञान यदि नहीं होता...यथार्थ न होते शब्दादि ज्ञान।।

जिसको भूख का अनुभव हुआ...बिना शब्द से भी जानेगा भूख।
केवल भूख शब्दादि मात्र से...अनुभव में न आयेगी भूख।।

तथाहि पीड़ा भय प्यास...सर्दी-गर्मी स्वाद सुगन्ध।
अनुभव से सहज गम्य...शब्दादि मात्र से न होता बोध।।

तथाहि आत्मा या परमात्मा...स्वप्न अथवा पूर्व आभास।
शब्दादि मात्र से न होता बोध...अनुभव से होता है बोध।।

शब्द से लेकर भाषा तक तो...विषयज्ञान के होते हैं हेतु।
ये सब केवल माध्यम होते...विषय के अवबोधन हेतु।।

विषयज्ञान से भाव ज्ञान होता...जिससे होता अनुभव ज्ञान।
ज्ञान-भाव व अनुभव ही...होते हैं सही चैतन्यवान्।।

चैतन्य ही है जानने वाला...जिससे होते हैं ज्ञान अशेष।
इसलिये ही अनुभव से...विषयज्ञान भी होता विशेष।।

अतएव ही अनुभव श्रेष्ठ...अन्य सब ही होते कनिष्ठ।
अनुभव प्राप्ति हेतु ही सदा...'कनकनन्दी' करे प्रयास।।

परसाद, दिनांक 09.05.2013, रात्रि 9.17

सफलता या असफलता

(राग : सायोनारा...)

परम सफलता है परम शान्ति, जिसकी प्राप्ति होती मोक्ष में।
अन्य सफलता सापेक्ष होती, चाहने/(मानने) वालों की दृष्टि से।।

धनार्जन से/(को) कोई सफल माने, तीर्थंकर त्यागते राज्य वैभव।
सत्ता प्राप्ति को/(से) कोई सफल माने, शान्तिनाथ त्यागे चक्री वैभव।।

प्रसिद्धिपाना कोई सफल माने, वीतरागी त्यागते प्रसिद्धि पाना।
विवाह करना कोई सफल माने, बाल ब्रह्मचारी बनते साधु।।

परिवार पोषण कोई सफल माने, तीर्थंकर भी छोड़े परिवार।
डिग्री प्राप्ति भी कोई सफल माने, तीर्थंकर न गये विद्यालय।।

डिग्री धारी भी असफल होते, सत्ता-सम्पत्ति व सम्मान में/(से)।
परिवार समाज में असफल होते, तनाव सहते आत्महत्या करते।।

असफल होते सत्ता-सम्पत्ति वाले, बुद्धि कला से युक्त वाले भी।
सुख-शान्ति स्वास्थ्य से रहित होते, अन्यायी अत्याचारी पापी होते भी।।

वह जीवन है सफल जीवन, जो सत्य साम्य सुखमय होता।
स्व-पर उपकार से सहित होता, दीन-हीन अहं से भी रहित होता।।

सरल-सहज सादा आदर्श होता, धैर्य क्षमा सहित निर्भय होता।
पुरुषार्थ महान् लक्ष्य हेतु ही होता, उदार-सर्वोदयी भाव ही होता।।

असफल पहले हो भले यह जीवन, अन्त में अवश्य ही सफल होगा।
ऐसे उदाहरण सर्वत्र मिले, परम-सफलता तो 'कनक' चाहे।।

परसाद, दिनांक 12.05.2013, दोपहर 5.08

''गुरु की आत्मकथा''

(राग : तुम दिल की धड़कन..., आत्मशक्ति से...)

मैं हूँ गुरु सबसे निराला...सबसे निराला मेरा काम।
लौकिक से आध्यात्मिक तक...मार्गदर्शन है मेरा काम।।ध्रु.।।

माता-पिता है प्रथम गुरु...लौकिक दृष्टिकोण से।
लौकिक शिक्षक होते (हैं) गुरु...व्यवहार की दृष्टि से।।

जिससे जो भी शिक्षा मिले...वह उसके शिक्षक है।
जो गुणों से गुरु/(भारी) होता...वह सापेक्ष गुरु है।।

'गु' होता है अन्धकार...'रु' है अन्धेरा नाशक।
अज्ञान तम नाशक जो...सो होता है सही गुरु।।

अतएव मेरा सच्चा रूप है...मोहान्धकार नाशक है।
अरिहंत सिद्ध आचार्य व...पाठक साधु पंच है।।

पाँचों (ही) होते हैं परमगुरु...अरिहंत सिद्ध देव रूप।
साधु पाठक आचार्य ही...उत्तरोत्तर है श्रेष्ठ गुरु।।

पूर्ण ज्ञानी है अरिहंत सिद्ध...सम्पूर्ण दोषों से रहित है।
मोक्ष मार्ग के उपदेश व...सिद्ध साक्षात् मोक्ष है।।

सम्यग्ज्ञान के धारक व...आंशिक दोषों से रहित है।
साधु पाठक व आचार्य...श्रेष्ठ से श्रेष्ठ गुरु है।।

इन्हीं के द्वारा ज्ञात व...उपदिष्ट पूरे ज्ञान है।
अणु से लेकर ब्रह्माण्ड तक...आत्मा से परमात्मा है।।

अरिहंत के होते गणधर...वह भी मेरा रूप है।
चार ज्ञानधारी होते गणधर...दिव्य ध्वनि सम्पादक है।।

गौतम गणधर जब बने...उस दिन गुरु पूर्णिमा हुई।
पूर्णिमा के दिन बने गणधर...अतएव गुरु पूर्णिमा हुई।।

अरिहंत सिद्ध होते अनन्तज्ञानी...असंख्यात ज्ञानी होते गणधर।
संख्यात ज्ञानी शेष गुरुवर...साधु पाठक आचार्यवर।।

इनसे सीखते थे सम्पूर्ण ज्ञान...लौकिक से आध्यात्मिक तक।
राजा-महाराजा सामान्य जन...देव तिर्यंच व साधु जन।।

जिसके कारण भारतवर्ष...विश्वगुरु रहा पूर्व में।
विश्व को ज्ञान-विज्ञान दिया...पूजनीय हुआ विश्व में।।

यह परम्परा लोप हो रही...चल रही मैकाले की शिक्षा।
मुक्ति के बदले गुलाम शिक्षा...भौतिकवादी नौकर शिक्षा।।

इसलिये भारत का हो रहा पतन...इंडियन बने हैं इडियट।
भारत पुनः विश्वगुरु बने...'गुरु कनक' करे प्रयत्न।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 04.07.2013, मध्याह्न 3.23

(यह कविता श्रमणी सुनिधिमती के अनुरोध से बनी)

''शिष्य की आत्मकथा''

(राग : जिया बेकरार है...)

शिष्य मेरा नाम है...सीखना मेरा काम है।
लौकिक से आत्मिक तक...शिक्षा पाना काम है।।ध्रु.।।

सर्वज्ञ बनने के पहले तक...शिक्षा मैं ग्रहण करता हूँ।
छद्मस्थ/(असर्वज्ञ) मेरी शिष्यावस्था...स्नातक/(केवली, सर्वज्ञ) में बनूँ गुरु हूँ।।

गणधर मेरी श्रेष्ठावस्था...चार ज्ञान के धारी हूँ।
समवशरण में दिव्यध्वनि से...ग्रहण करता ज्ञान हूँ।। (1)

तथाहि आचार्य उपाध्याय व...साधु-साध्वी मेरा रूप है।
श्रावक-श्राविका क्षुल्लक-क्षुल्लिका...सजा-महाराजा (भी) रूप है।।

दार्शनिक-वैज्ञानिक-विद्वान्...लेखक-कवि-वाचक।
शिक्षक-प्राध्यापक-प्रोफेसर...शोधार्थी भी मेरा रूप।। (2)

तथाहि गर्भस्थ शिशु से लेकर...प्राथमिक तक के विद्यार्थी।
पशु-पक्षी भी है मेरा रूप...देव विद्याधर विद्यार्थी।।

तीर्थंकर भी पूर्व जन्म में...गुरु से ही देशना/(शिक्षा, उपदेश) पाते हैं।
प्रथम बार सम्यक्त्वी बनते...अधिगमज जिसे कहते हैं।। (3)

जिससे ज्ञान सम्यक्त्व होता...चारित्र भी होता सम्यक्।
आगे जाकर स्वयम्भू बनते...स्वयं का गुरु स्वयं होते।।

इस दृष्टि से तीर्थंकर या...सर्वज्ञ भी बनते हैं शिष्य।
योग्य शिष्य ही गुरु बनता...गुरु न बने बिना शिष्य।। (4)

शिक्षा प्राप्ति तो मेरा कर्त्तव्य...जिससे शिष्य बना हूँ।
विनम्र जिज्ञासु सत्यग्राही...अध्ययनशील बना हूँ।।

गुरुसेवी कर्त्तव्यनिष्ठ...सादा जीवन उच्च विचार।
उत्तरोत्तर विकास हेतु...करता हूँ मैं सदा आचार।। (5)

गुरु से सीखूँ ग्रन्थों से सीखूँ...सीखूँ ज्ञानी गुणी से।
हिताहित विवेक द्वारा सीखूँ...प्रकृति पशु-पक्षी से।।

भाषा गणित धर्म सीखूँ...सीखूँ तर्क न्याय भी।
आयुर्वेद व्याकरण कला...लोकाचार नीति भी।। (6)

दर्शन समीक्षा राजनीति सीखूँ...सीखूँ ब्रह्माण्ड ज्ञान भी।
सभी शिक्षा में महान् विद्या...सीखूँ आध्यात्म ज्ञान भी।।

अनेकान्त व नयज्ञान से...हिताहित के विवेक से।
व्यापक सूक्ष्म अनुभव से...आत्मशुद्धि करूँ ध्यान से।। (7)

जिससे आत्मविकास होता...केवलज्ञान प्राप्त करता।
शिक्षा से शिवपद (को) पाता...शिष्यत्व से गुरु बनता।।

यह है मेरा सही स्वरूप...अभी भारत में विकृत रूप।
जिससे देश का हुआ पतन...'कनकनन्दी' ने किया वर्णन।। (8)

हिरणमगरी, सेक्टर-11,
दिनांक 04.07.2013, रात्रि 11.10
(यह कविता श्रमणी सुनिधिमती की भावना से बनी)

विद्यार्थी की आत्मकथा/(कर्त्तव्य)

(राग : शत-शत वन्दन...)

दोहा- मैं मेरे कर्त्तव्यों का, कर रहा हूँ वर्णन।
जिससे मैं आदर्श बनूँ, विद्यार्थी गुणवान्।।

विनम्र सत्यग्राही ज्ञान पिपासु, अध्ययनशील ज्ञान जिज्ञासु।
शालीन सदाचारी कर्त्तव्यशील, हिताहित विवेकी प्रज्ञाकुशल।। (1)

समझकर मैं पढ़ता पाठ, न समझने पर करता प्रश्न।
एकाग्रता व लगनशील, अधिगम करने में सदा तत्पर।। (2)

आनन्दपूर्वक करता ज्ञान, ईर्ष्या द्वेष घृणा व रहित मान।
अश्लील अयोग्य व पढ़ता पाठ, टीवी मोबाईल से भी ये पाठ।। (3)

स्वतन्त्रता से सीखता ज्ञान, दबाव रहित प्रसन्न मन।
ट्यूशन रहित करूँ अध्ययन, फैशन-व्यसन रिक्त जीवन।। (4)

सहनशील हूँ धैर्य सहित, शान्त गम्भीर व उदार युक्त।
कलह विवाद गप्प रहित, समस्याओं से नहीं विचलित।। (5)

प्रगतिशील हूँ समता युक्त, समायोजना गुण सहित।
सरल सहज लचीला युक्त, जीवन्तता व मधुर युक्त।। (6)

श्रमशील हूँ कर्त्तव्यनिष्ठ, दैनिक कार्य करने में दक्ष।
गृह सज्जा व माता-पिता-सेवा, भाई-बहनों की करता हूँ सेवा।। (7)

गृहकार्य में सहयोगी बनता, जीविका-उपार्जन कार्य जो होता।
पशु-पक्षियों की करता हूँ सेवा, वृक्षारोपण प्रकृति सुरक्षा।। (8)

स्व-वस्त्र धोना व इस्त्री करना, गृहकार्य/(होमवर्क) भी स्वयं ही करना।
पैदल चलना खेल-कूद करना, पास के स्कूल हो तो पैदल जाना।। (9)

दूर रहता हूँ टालमटोल से, प्रमाद आलस्य ढोंग-पाखण्डों से।

धोखाधड़ी न नकल करता, बहानाबाजी से दूर ही रहता।। (10)

सुविधाभोगी नहीं बनता, भोग-विलासिता से दूर रहता।
सादा जीवन व उच्च विचार, रहूँ ब्रह्मचारी श्रमशील।। (11)

स्वावलम्बी हूँ मैं आत्मानुशासी, शोध-बोध में आत्मविश्वासी।
गुरु आज्ञा पालक सेवाशील, भावी जीवन का मैं हूँ मूल।। (12)

ये सब मेरे हैं सही कर्त्तव्य, प्राचीन हो या आधुनिक काल।
बाह्य बदलाव कुछ सम्भव, मूलगुणों में नहीं होना सम्भव।। (13)

इसी से मैं सच्चा बनता हूँ, ज्ञान चारित्र से पक्का बनता हूँ।
'गुरु कनक' का भी यह अनुभव, शिक्षा मनोज्ञानी का भी यह अनुभव।। (14)

(यह कविता आशीष जैन के लेख से भी प्रभावित है। इस विषय सम्बन्धी विशेष परिज्ञान के लिए कवि द्वारा रचित (1) सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान, (2) शिक्षा संस्कृति नारी गरिमा आदि अनेक साहित्य, लेख, कविताओं का अध्ययन करें।)

''भारत के 47% स्नातक भी नौकरी योग्य नहीं''

(47% स्नातक सामान्य ज्ञान से रहित है। इसके कारणों के अनुसंधान)

(राग : यमुना किनारे श्याम..., छोटी-छोटी गैया...)

विश्वगुरु भारत को क्या हो गया, ज्ञान-विज्ञान में पीछे हो गया।
धर्म दर्शन (व) नैतिक ज्ञान में, पिछड़ा हो गया सामान्य ज्ञान में।।

विश्वगुरु होकर भी पीछे हो गया, नौकर योग्य भी नहीं रह गया।
स्नातक होकर भी योग्य न बना, योग्य कॉलेज भी योग्य न बना।। (1)

अनुसंधान से अभी सिद्ध हो गया, पूरे भारत का रिसर्च हो गया।
सैतालीस (47%) प्रतिशत स्नातक छात्र, नौकर योग्य न होते हैं पात्र।।

सामान्यज्ञान में भी सैतालीस (47%) प्रतिशत, योग्य न होते हैं स्नातक छात्र।
भारत के तीस ख्यात कॉलेज, योग्यता में न बनाये स्थान।। (2)

पहले से ही मुझे ज्ञान है, साहित्यों में भी किया वर्णन है।
प्रवचनों में भी बता रहा हूँ, सुधार हेतु भी प्रयासरत हूँ।।

इसके कारण हैं होते अनेक, अंतरंग सह बाह्य कारक।
अंतरंग क्षयोपशम/(बुद्धि लब्धि) मुख्य कारण,
द्रव्य क्षेत्र कालादि बाह्य कारक।। (3)

महान् लक्ष्य एकाग्रता की कमी, संकीर्ण शिक्षा नहीं बहु-आयामी।
प्रयोग-अनुभव रहित शिक्षा, 'मुनीम' बनने की 'मैकाली शिक्षा'।।

शोध-बोध रहित रटन्त शिक्षा, आध्यात्मिक रहित 'भौतिक शिक्षा'।
संस्कार सदाचार रहित शिक्षा, डिग्री व नौकरी हेतु हो रही शिक्षा।। (4)

अयोग्य भोजन फैशन-व्यसन, श्रम रहित कृत्रिम जीवन।
अपसंस्कृतिमय टी.वी. दर्शन, मोबाईल बाईकमय जीवन।।

इट ड्रिंक मेरी लाईफ हो गया, सादा जीवन उच्च विचार गया।
फास्टफूड माँस तम्बाखू नशा, अश्लील गाना-बाजा अनीति शिक्षा।। (5)

कुसंगति में गप्पे लगाना, देरी से सोना देरी से जगना।
समाज व प्रकृति से दूर रहना, सेवा दान दया से रहित होना।।

विनम्र जिज्ञासु नहीं बनना, सतत अध्ययन नहीं करना।
हर क्षेत्र से शिक्षा नहीं लेना, पाठ्य-पुस्तकों में ही ज्ञान मानना।। (6)

जोड़ रूप ज्ञान को नहीं करना, कार्य-कारण को नहीं जानना।
प्रदूषणों से सहित होना, तनाव सहित जीवन होना।।

व्यायाम प्राणायाम नहीं करना, योगासन ध्यान से रहित होना।
गणित विज्ञान से रहित होना, भाषा-व्याकरण का ज्ञान न होना।। (7)

मनन-स्मरण नहीं करना, विषयों को स्वयं नहीं लिखना।
प्राथमिक ज्ञान सही न होना, प्रमाद-आलस्य सहित होना।।

आनन्ददायी शिक्षा नहीं होना, ट्यूशन का बोझ अधिक होना।
अनेक विघ्न कारक हेतु से, सुयोग्य न होते उच्च शिक्षा में।। (8)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 27.06.2013, मध्याह्न 3.12

(दैनिक भास्कर-देश में 47 फीसदी ग्रैजुएट कहीं भी नौकरी पाने लायक नहीं) नई दिल्ली-भारत की आबादी भले ही विशाल हो, लेकिन नौकरी के लिहाज से काबिल विद्यार्थियों की फौज तैयार करने में हमारा देश नाकाम रहा है। रोजगार क्षमता से जुड़े सोल्यूशंस मुहैया कराने वाली कंपनी एस्पाइरिंग माइंड्स के अध्ययन में कहा गया है कि 47% ग्रैजुएट्स किसी भी नौकरी के लायक नहीं होते हैं। तकरीबन 47% ग्रैजुएट्स अंग्रेजी में काफी कमजोर पाये गये हैं। इसी तरह 47% स्नातकों में बुनियादी ज्ञान का भी सख्त अभाव पाया गया है। एक रोचक जानकारी यह भी मिली है कि जिन ग्रैजुएट्स को रोजगार पाने लायक माना गया है, उनमें से तकरीबन 40% ने ऐसे कॉलेजों में पढ़ाई की है जिनकी गिनती 'टॉप 30 कॉलेजों' में नहीं होती है। दिनांक 25.06.2013
(इस सम्बन्धी विशेष परिज्ञान हेतु कविकृत चार-पाँच ग्रन्थों का अध्ययन करें।)

स्वाध्याय से अभ्युदय एवं मोक्ष की प्राप्ति

(राग : आत्मशक्ति...)

त्रिकरण शुद्धि सह जो स्वाध्याय है करता।
वह पंचमकाल में परम तप को है करता।। (1)

अष्ट विध भी शुद्धि होती, स्वाध्याय के लिए।
यह स्वाध्याय तप है आत्म विशुद्धि के लिए।। (2)

काल विनय उपधान बहुमान अनिह्नव।
व्यंजन अर्थ तदुभय अष्ट विध शुद्धि सह।। (3)

स्वाध्याय करने से बहुविध भी लाभ हैं होते।
तन-मन इन्द्रिय सभी एकाग्र भी होते।। (4)

जिससे क्षयोपशम भी बढ़ता व ज्ञान बढ़ता।
भोग-उपभोग के बिना आत्मानन्द भी बढ़ता।। (5)

राग-द्वेष-मोह का क्षयोपशम भी बढ़ता।
असंख्यात गुणित पाप कर्म नष्ट होता।। (6)

सातिशय पुण्य बन्धता, तन-मन स्वस्थ होता।
आध्यात्मिक बल बढ़ता ज्ञान वैराग्य बढ़ता।। (7)

यह ज्ञान वैराग्य आगे बढ़ता मोक्ष में पहुँचाता।
मोक्ष के पूर्व नर-अमर का वैभव देता।। (8)

ऐसा ज्ञान जो पाता वह धन्य हो जाता।
जो ऐसा ज्ञान देता वह महा धन्य होता।। (9)

ज्ञान दान है महादान, जो अवद्य दान होता।
ज्ञान दानी को ही 'गुरुपद' ही प्राप्त होता।। (10)

गुरु समान अन्य कोई न महा-उपकारी होता।
स्वर्ग-मोक्ष के मार्ग दाता, गुरु महान् दानी होता।। (11)

इस ज्ञान (दाता) के कारण ही भारत विश्वगुरु रहा।
इसी के बिना अभी भारत, भ्रष्ट देश बना।। (12)

अभी पुनः जागो भारत, ऐसे गुरु से ज्ञान पाओ।
'कनकनन्दी' की भावना, विश्व गुरुत्व को पाओ।। (13)

हिरणमगरी, सेक्टर-11,

दिनांक 30.06.2013, मध्याह्न 3.35

''मेरी ज्ञानार्जन की पद्धति''

(मेरे ज्ञान की उपलब्धि सम्बन्धी जिज्ञासा का समाधान)

(राग : आत्मशक्ति से ओतप्रोत..., तुम दिल की धड़कन...)

मेरी ज्ञानार्जन पद्धति का मैं कर रहा हूँ वर्णन।
जिससे लाभान्वित होंगे अन्य विद्यार्थी जन/(ज्ञानार्थी जन)।।ध्रु.।।

अनेक वर्षों से अनेक जनों के, समाधान मैं कर रहा हूँ।
अहंकार के प्रदर्शन बिना मैं, उपकार/(नम्र) भाव से कर रहा हूँ।।

बाल्यकाल से ही मेरा क्षयोपशम/(बुद्धि लब्धि, आई.क्यू.) रहा है बहुत अच्छा।
जिज्ञासु व गुणग्रहण में मैं रहा हूँ बहुत सच्चा।।

सत्यग्राही मैं रहा हूँ सदा, रहा हूँ मैं अध्ययनशील।
हर विषय को समझने का रहा हूँ लगनशील।।

समझने में जो नहीं आता है करता हूँ प्रश्न अनेक।
हर दृष्टि से समझने का करता हूँ यत्न अनेक।।

मनन चिन्तन स्मरण व करता हूँ समन्वय रूप ज्ञान।
मंथन चर्चा समीक्षा भी करता हूँ निष्पक्ष प्रमाण।।

सनम्रता से सीखता हूँ, प्रकृति मानव व ग्रन्थों से।
पशु पक्षी कीट पतंग से, आबाल वृद्ध जनों से।।

अनेक भाषाओं का मैं किया, अध्ययन व्याकरण-विज्ञान सहित।
लिखना पढ़ना बोलना सहित, उसके विभिन्न साहित्य।।

धर्म दर्शन विज्ञान व गणित, आयुर्वेद पुराण।
इतिहास न्याय राजनीति, तर्क नीति संविधान।।

सबका मैं करता समन्वय, समीक्षा पूर्वक गुण व दोष।
यथायोग्य परीक्षण सहित, अनुभव आगम विशेष।।

स्वभाषा व स्व-पद्धति से करता हूँ लेख लेखन।
गद्य पद्य मय ग्रन्थ लेखन, समीक्षा सहित विवेचन।।

स्व-गुरुओं के विनय भक्ति, करता हूँ सेवा विशेष।
आज्ञा पालन व अनुशासन, समयानुबद्ध अशेष।।

शुद्ध सात्विक पौष्टिक युक्त, सरस/(स्निग्ध) मधुर आहार।
दूध घी फल हरी सब्जी मेवा, दाल खीर नारियल।।

भ्रमण योगासन प्राणायाम, तेल मालिश व ध्यान।
रहता हूँ स्वच्छ एकान्त स्थान मैं, रहता हूँ विशेष मौन।।

राग द्वेष मोह घृणा तृष्णा, वैर-विरोध कलह।
नहीं करता हूँ भेद-भाव, रहता हूँ शान्त गम्भीर।।

ख्याति पूजा लाभ लन्द-फन्द से, रहता हूँ सर्वदा मैं दूर।
दौड़धूप व आपाधापी/(अव्यवस्था) से, रहता हूँ मैं सदा दूर।।

बाल्यकाल से ही मैं कर रहा हूँ स्वेच्छिक ज्ञान दान।
धन मान व नाम बिना, पावन भाव से प्रतिदिन।।

मंत्र जाप भी मैं करता हूँ जिससे बनूँ ज्ञानवान्।
छात्रों को मैं भी देता ये मंत्र, जब होता स्कूल में प्रवचन।।

स्व-पर-विश्व कल्याण हेतु, करता हूँ ज्ञान प्रचार।
स्व-शिष्यों के माध्यम से, होता है ज्ञान प्रचार।।

देव शास्त्र गुरुओं की आराधना, करता हूँ पावन भावन से।
जिनवाणी की आराधना, करता हूँ सतत भाव से।।

देश-विदेशों के पढ़ता हूँ साहित्य देखता हूँ वैज्ञानिक चैनल।
रहता हूँ शान्त एकान्त स्थान में विशेषतः ग्राम व जंगल।।

आनन्द विभोर होकर पढ़ाता हूँ नहीं रखता हूँ स्वार्थ भाव।

अलौकिक गणित व अनेकान्त युद्ध नहीं रखता हूँ क्षुद्र भाव।।

भाव रखता हूँ सब बने ज्ञानी तथाहि बने सुखी व शान्त।
स्व-पर विश्व कल्याणकारी बने सभी बने दयालुवन्त।।

भोले भाला सरल सहज विनम्र शिष्यों को देता हूँ ज्ञान।
विद्यार्थी साधु साध्वी व विद्वान् प्रोफेसर्स वैज्ञानिक गण।।

इनकी कृपा से पा रहा हूँ ज्ञान-विज्ञान विशेष।
विद्यार्थी 'कनक' का है परम लक्ष्य, पाने का ज्ञान अशेष।।

(यह कविता ब्र. जनक बेन (कोबा), भँवरलाल जी, भूपेन्द्र जी आदि की जिज्ञासा 'गुरुदेव आपने इतना ज्ञान कैसे प्राप्त किया?' के समाधान में रची गई।)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 28.06.2013, रात्रि 11.40

आधुनिक शोधानुसार खुशी के 5 उपाय

(राग : छोटी-छोटी गैया..., यमुना किनारे...)

खुशी रहने के उपायों को जानो, आधुनिक शोध प्रमाण मानो।
धर्म में बहुत तो वर्णन मिलता, नवीन शोध से वह सिद्ध होता।। (1)

दान देने से खुशी मिलती, अधिक देने से अधिक मिलती।
कमाने का पैमाना प्रमुख नहीं है, दान प्रवृत्ति प्रमुख सही है।। (2)

अच्छे कामों के स्मरण-लिखने से, सुखानुभूति होती है मन से।
बुरे कामों के स्मरण-लिखने से, दुःखानुभूति होती है मन से।। (3)

भावी खुशी की भावना से भी, आनन्द अनुभव होता भी।
भावी संकट की चिन्ता से भी, दुःखानुभव होता है भी।। (4)

हरियाली की संगति से भी, तनाव कम होता है भी।
आत्मविश्वास व खुशी बढ़ती, दिमाग की तरंगें यह दिखाती।। (5)

खुशी रहने का है प्रमुख कारण, राग-द्वेष रहित तटस्थ गुण।
इसीसे मानसिक शक्ति बचती, निन्यानवे (99) प्रतिशत शक्ति बचती।। (6)

समता से तनाव नहीं होता, तनाव जनित रोग न होता।
आकर्षण-विकर्षण द्वन्द्व न होते, कलह विसंवाद मोह न होते।। (7)

मित्रता से प्रसन्नता बढ़ती, अधिक मित्रों से ज्यादा बढ़ती।
परोपकार सेवा से खुशी बढ़ती, अधिक परोपकार से अधिक होती।। (8)

नये अनुभव से खुशी बढ़ती, उत्साह भाव से विशेष होती।
प्रगतिशील जीवन से खुशी बढ़ती, उदार भावना से विशेष होती।। (9)

आनन्द है आत्मा का मौलिक गुण; आध्यात्मिक भाव से बढ़े ये गुण।
'धर्म सर्व सुखाकारो' इसे कहते, 'कनकनन्दी' इसे सदा मानते।। (10)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 01.07.2013, अपराह्न 5.40

वात्सल्य मिलन का सुफल

साधु-संघों का वात्सल्य मिलन

(चाल : नगरी-नगरी..., शत-शत वन्दन..., सायोनारा..., चाँदी की दीवार..., फूल तुम्हें भेजा है...)

बड़ा सुख होता...आनन्द आता...वात्सल्य मिलन संघों का होता...
वात्सल्य/(प्रमोद) बढ़े...संगठन बढ़े...जन-गण-मन हर्षाये...(स्थायी पद)...

परिचय बढ़े...समाचार विधि से...सुख-दुःख में सहभागी बने...
परस्पर में उपग्रह होते...आदान-प्रदान होते प्रेम से...वात्सल्य बढ़े...(1)...

स्वाध्याय होते...प्रवचन होते...ज्ञान-वैराग्य खूब बढ़ते...
भेद-भाव मिटे...सहयोग बढ़े...संकीर्ण विचार दूर होते...वात्सल्य बढ़े...(2)...

प्रभावना होती...एकता बढ़ती...संगठन से शक्ति बढ़ती...

अच्छे कार्य होते...प्रभाव बढ़ता..."संघे शक्ति कलौयुगे"...वात्सल्य बढ़े...(3)...

मंगल विहार होने के बाद भी...मधुर स्मृति से प्रेरणा मिले...
अन्य जन भी प्रभावित/(प्रमुदित) होते...'कनकनन्दी' को शिक्षा मिले...
वात्सल्य बढ़े...(4)...

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 01.07.2013, प्रातः 4.15

चरण स्पर्श-पादोदक का वैज्ञानिक कारण

(राग : आत्मशक्ति...)

चरण हैं आचरण के प्रतीक, जो प्रगति के प्रतीक/(कारक) हैं।
जैसा विचार वैसा आचार, आचार चरण का प्रतीक है।। (1)

देखभालकर चलना प्रतीक, श्रद्धा ज्ञान चारित्र का है।
दोनों चरण हैं प्रतीक रूप, व्यवहार और निश्चय हैं।। (2)

चरण स्पर्श है प्रतीक रूप, आदर सत्कार बहुमान का।
गुणानुराग व गुणग्रहण का, आचरण तथा प्रगति का।। (3)

सिर होता है उत्तरी ध्रुव, सकारात्मक ऊर्जा प्रवेश का।
चरण/(पैर) होते हैं दक्षिणी ध्रुव, ऊर्जा के संचय केन्द्र का।। (4)

चरण स्पर्श से ऊर्जा मिलती, सिर पर हस्त-स्पर्श से।
ऊर्जा-संचार होती शरीर में, वृद्धि होती बुद्धि यश बल ।। (5)

पाद प्रक्षालन व गन्धोदक में, यह सब गुण होते हैं।
भारत की यह महान् परम्परा, लघुता से प्रभुता पाने की है।। (6)

यह सब गुण नहीं होते हैं, हॉय हैलो करने में।
तथापि आज इंडियन लोग, लगे हैं अन्धानुकरण में।। (7)

सदाचरण व विनय रहित, भारत बना है पिछड़ा देश।
सदाचरण व विनय सहित, भारत बने विकसित देश।। (8)

जड़ रहित वृक्ष न बढ़ता है, स्व-संस्कृति रहित भारत देश।
संस्कृति सहित भारत बढ़े, 'कनकनन्दी' का है आशीष।। (9)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 03.07.2013, प्रातः 7.30

मोही धन के लिए करता है सब अनर्थ

(राग : आत्मशक्ति....)

धन के लिए धन द्वारा धन से जीवन जीते हैं।
शिक्षा से लेकर धर्म तक मोही धन हेतु करते/(मरते) हैं।। (1)

धन ही लक्ष्य धन ही साधन, धन ही साध्य हो गया।
निमित्त-उपादान से लेकर, पुण्य-पाप भी हो गया।। (2)

शत्रु-मित्र भाई-बन्धु माई-बाप सब धन है।
लेन-देन सम्बन्ध-विरह जीना-मरना भी धन है।। (3)

सुख-दुःख हर्ष-विषाद मनन-चिन्तन भी धन है।
आह्वान-पूजन ध्यान-अध्ययन, सुगुण-दुर्गुण धन है।। (4)

धन हेतु तो उच्च मानव बन जाता है दानव।
पशु से भी नीच बनता है, छोड़ के निज स्वभाव।। (5)

पढ़ाई नौकरी व्यापार उद्योग, धन हेतु ही करते हैं।
नृत्य गाना खेल-तमाशा धन हेतु ही करते हैं।। (6)

न्याय राजनीति दान-पुण्य भी, धन हेतु ही करते हैं।
चोरी मिलावट भ्रष्टाचार हत्या, धन हेतु ही करते हैं।। (7)

विपत्तिग्रस्त लोगों से भी, चोरी-ठगी भी करते हैं।
मरणासन्न शव से भी, धन अपहरण करते हैं।। (8)

कोई चोर बनकर तो कोई व्यापारी बनकर।
कोई नौकर बनकर तो कोई साहूकार बनकर।। (9)

कोई सेवा के बहाने से तो कोई रक्षा के बहाने।
कोई न्याय के बहाने तो कोई लाभ के बहाने।। (10)

परोपजीवी व गृद्ध पक्षी सम, करते शोषण अन्य का।
'जीओ और जान ले लो' का करते काम दानव का।। (11)

इसलिए तो शिक्षा कानून धर्म तक व्यर्थ जाते/(होते)।
नीति नियम सदाचार, संविधान भी व्यर्थ होते।। (12)

जब तक मोह न घटेगा अन्य उपाय सब होंगे व्यर्थ।
निर्लोभ वृत्ति व त्याग भावना से, अन्य उपाय होंगे समर्थ।। (13)

शुचि/(इन्हीं) भावना से चक्रवर्ती, राजवैभव करते त्याग।
'कनकनन्दी' भावना भाये मानव करे लोभ का त्याग।। (14)

(यह कविता केदारनाथ के बाढ़ प्रभावित तीर्थ यात्रियों से एक बोतल पानी के लिए 100 रु. लेना, मृत यात्रियों के शरीर से अलंकार चोरी करना आदि कुकृत्य के दुःख से द्रवित होकर रची गई।)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 24.06.2013, रात्रि 2.35

आगम-मनोविज्ञान-अनुभव परक शोधपूर्ण कविता

''विवश एवं स्व-वश काम''

(मोही अज्ञानी जीव कषाय-संज्ञा के वश से करते हैं काम)

(राग : तुम दिल की धड़कन में...)

चार कषाय व चार संज्ञा से...ग्रसित संसारी जीव।
इनके वश से करते हर काम...विपरीत आत्म-स्वभाव।।ध्रु.।।

तथाहि तीव्र वायु वेग से...उड़ते हैं धूलीकण।
तथाहि मोही अज्ञानी जीव...करते अनात्म काम।।

यथा मद्यपायी मद्य के वश से...करता यथा व्यवहार।
तथाहि कषाय संज्ञा के वश से...जीव करता व्यवहार।। (1)

आहार संज्ञा के वश में होकर...खाते हैं भक्षाभक्ष।
इसी कें लिए करते पाप...नहीं होता आत्म लक्ष्य।।

भय संज्ञा के विवश होकर...करते अनेक पाप।
युद्ध हत्या व मायाचारी करते...तथाहि असत्य पाप।। (2)

मैथुन संज्ञा के वश में होकर...भोगते काम-भोग।
विवाह करते कुशील सेवते...सेवते फैशन-व्यसन।।

परिग्रह संज्ञा के वश में होकर...करते भौतिक संग्रह।
इसी हेतु चारों कषाय करते...करते पाँचों भी पाप।। (3)

क्रोध-विवश से करते कलह...करते हैं मिथ्या कथन।
निन्दा-अपमान संक्लेश करते...करते युद्ध हनन।।

मान-आधीन हो अष्टमद सेवते...नहीं होते गुणग्राही।
तुच्छ उद्दण्ड उच्छृंखल बनते...होते हैं अविनयी।। (4)

मायावशवर्ती जीव करते हैं...कुटिल धूर्त व्यवहार।
ठगी मिलावट धोखाधड़ी...करते हैं ढोंगाचार।।

लोभ के अधीन जीव करते हैं...परिग्रह का संचय।
इसी हेतु चोरी मिलावट करते...करते हैं भ्रष्टाचार।। (5)

इनके वशवर्ती जो जीव होते...करते तथा विध काम।
भले उनका कार्य क्षेत्र हो...लौकिक या धार्मिक काम।।

ये सब अनात्ममय काम हैं...नहीं है सत्पुरुषार्थ।
आत्म-उत्थान योग्य कार्य ही...होते हैं सत्पुरुषार्थ।। (6)

स्व-पर उपकारी कार्य...यथा है शुभ व शुद्ध।
धर्म व मोक्ष पुरुषार्थ युक्त...जो करे आत्मा को शुद्ध।।

रिमोट चालित टी.वी. सम...जीव हैं संज्ञा/(कषाय) के वश।
इनसे परे आत्महित काम...होते हैं आत्मा के वश।। (7)

विवश होकर अनादि से जीव...भोग रहे हैं अनन्त दुःख।
स्व-वश से जो पुरुषार्थ करते...पाते हैं अनन्त सुख।।

इसी हेतु ही 'कनकनन्दी'...कर रहा है पुरुषार्थ।
स्वात्मोपलब्धि ही परम लक्ष्य...अन्य सभी है अनर्थ।। (8)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 23.06.2013, रात्रि 12.20

''वर्चस्व हेतु होती है प्रतिस्पर्द्धा-लड़ाई''

(राग : छोटी-छोटी गैया...)

वर्चस्व की लड़ाई/(प्रतिस्पर्द्धा) चल रही है, धन-जन-मान हेतु हो रही है।
ख्याति पूजा-लाभ की हो रही है, राजनीति धर्म की हो रही है।।ध्रु.।।

धन से धर्म तक होते सम्बन्ध, प्रतिस्पर्द्धा में ये अन्तर्सम्बन्ध।
वर्चस्व व प्रतिस्पर्द्धा अन्तर्सम्बन्ध, सत्य समता शान्ति का नहीं सम्बन्ध।।

यह क्रिया अनादि से चल रही है, एकेन्द्रिय से संज्ञी तक हो रही है।
चतुर्गति में यह चल रही है, संसार भ्रमण क्रिया चल रही है।। (1)

राग-द्वेष-मोह जन्य होता वर्चस्व, वर्चस्व से तीनों का होता उत्कर्ष।
जिससे प्रतिस्पर्द्धा होती उत्पन्न, जिससे अनेक दोष होते उत्पन्न।।

कलह वाद-विवाद लेते जनम, ईर्ष्या-घृणा द्वन्द्व लेते जनम।
वैर-विरोध होते उत्पन्न, युद्ध-महायुद्ध भी पाते जनम।। (2)

अधिक सत्ता-सम्पत्ति (जो) बुद्धि सम्पन्न, वर्चस्व-प्रतिस्पर्द्धा में होते निपुण।
मत्स्यन्याय सम वे करते काम, दूसरों की क्षति से होते प्रसन्न।।

वर्चस्व-प्रतिस्पर्द्धा से जो होते निवृत्त, सत्य समता में जो होते प्रवृत्त।
उनका यथार्थ होता विकास, 'कनक' चाहता है आत्मविकास।। (3)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 21.06.2013, रात्रि

''अन्य की तुलना व प्रतिस्पर्द्धा से रहित हूँ''

(राग : माता तू दया करके..., होठों से छू लो तुम...)

दिन-रात मेरे स्वामी भावना मैं ये भाऊँ, दूसरों के निमित्त से संक्लेशित मैं न बनूँ।
संक्लेशित होकर पाप बन्ध मैं क्यों करूँ, अन्य के कारण रोग दुःख मैं क्यों भोगूँ।।ध्रु.।।

अन्य जीव होते अज्ञानी मोही व कुटिल, उनके अनुसार क्यों करूँ मैं व्यवहार।
उनके अनुसार नहीं सोचूँ नहीं बोलूँ, नहीं कार्यक्रम करूँ ग्रन्थ व गीत लिखूँ।।(1)

निर्णय न करूँ मैं नहीं करूँ राग-द्वेष, निन्दा व अपमान नहीं करूँ रोष व तोष।
स्वयं का मूल्यांकन भी नहीं करूँ अन्य से मैं, स्व-मूल्यांकन करूँ मैं आत्मिक दृष्टि से।। (2)

उल्लू के अनुसार क्या सूर्य का होता मूल्य, उपमा जुगनू की क्या होता है दिनकर।
सर्वज्ञ की तुलना क्या छद्मस्थ से होगी, क्षुद्र की तुलना से क्या मेरी महिमा होगी।। (3)

ख्याति-पूजा-लाभ तनाव युक्तों से, सत्ता-सम्पत्ति व प्रसिद्धि युक्तों से।
अनात्म कामों से संयुक्त जीवों से, तुलना प्रतिस्पर्द्धा न करूँ कभी मैं।। (4)

अतुलनीय हूँ मैं उपमातीत हूँ मैं, प्रतिस्पर्द्धा व द्वन्द्व से मुक्त हूँ मैं।
आपका रूप मेरा भावी स्वरूप हो, यह ही लक्ष्य मेरा अन्य से रिक्त हो।। (5)

मुझे ही मेरे द्वारा मुझसे ही प्राप्त हो, विभाव भावों से पूर्ण रहित हो।
सच्चिदानन्दमय मेरा स्वरूप हो, अन्य से भिन्न मेरा निज स्वरूप हो।। (6)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 25.06.2013, मध्याह्न 2.55

''सद्गृहस्थ (श्रावक) के 35 गुण''

(राग : तुम दिल की धड़कन...)

सद्गृहस्थों/(श्रावकों) के स्वरूप को जानो, पैंतीस (35) प्रकार लक्षणों को मानो।

गृहस्थ मोक्षमार्गी नैतिक मानो, इह पर हितकारी व्यक्तित्व जानो।।ध्रु.।।

'न्याय उपार्जित वित्त' सहित, 'शिष्टाचार प्रशंसक' युक्त।
'विवाह-विवेक' सहित गृहस्थ, 'पापभीरू' 'देशाचार पालक'।। (1)

'परनिन्दा रहित' 'सही गृह वास', 'सत्संगति युक्त' 'मातृ-पितृ भक्त'।
'उपद्रव रहित स्थान (में) निवास', 'निंद्य प्रवृत्ति का त्याग' विशेष।। (2)

'व्यय की मर्यादा' गुण सहित, 'वित्तानुसार वेश' सहित।
'अष्ट गुण युक्त बुद्धि' सहित, 'सुश्रुता श्रवण ग्रहण' युक्त।। (3)

'धारण तर्क अपोह' सहित, 'अर्थ विज्ञान तत्त्वज्ञान' सहित।
'प्रतिदिन धर्म श्रवण' युक्त, 'अजीर्ण न भोजी' 'सुयोग्य भुक्त युक्त'।। (4)

'अबाधित त्रिवर्गसाधन' युक्त, 'दान-दया-दत्ति' गुण सहित।
'पद अवहेलना'/(अभिनिवेश) दोष रहित, 'गुण पक्षपाती' गुण सहित।। (5)

'अयोग्य देश-काल का त्याग', 'स्व-पर बलाबल सुज्ञात'।
'ज्ञानी-गुणी-साधु पूजन' रत, 'पोष्य-पोषक'/(परिवार पोषण) गुण सहित।।(6)

'दीर्घदर्शी' 'विशेषज्ञ' 'कृतज्ञ', 'लोकप्रियता' 'सलज्जता' युक्त।
'दयालु' 'सौम्य' 'परोपकार' युक्त, 'अन्तरंग षड्वैरियों' का त्याग।। (7)

'इन्द्रिय विजयी' सद्गृहस्थ, और भी अनेक गुणं सहित।
'सप्त व्यसन' 'अष्टमद' त्याग, 'कनक' मान्य है सद्गृहस्थ।। (8)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 18.06.2013, रात्रि 12.50

''संकल्प से शक्ति केन्द्रीकरण तो विकल्प से शक्ति क्षरण''

(राग : तुम दिल की धड़कन..., रघुपति राघव...)

सत्-संकल्प से होती है, शक्ति का केन्द्रीकरण।

विकल्प संक्लेश से होता है शक्ति का क्षरण।।

सत्-संकल्प होती प्रतिज्ञा, जो होते हैं व्रत नियम।
दुर्गणों का विसर्जन व सुगुणों का सर्जन।। (1)

इसीसे विपरीत विकल्प है, न प्रतिज्ञा न व्रत नियम।
दुर्गुणों का न विसर्जन, न सुगुण सर्जन।।

आकुल व्याकुल सहित, अस्थिर व अनिर्णय विचार।
किंकर्त्तव्यविमूढ़ व नहीं, सदाशय न सदाचार।। (2)

यथा लेंस के द्वारा सूर्य-किरण होता केन्द्रित।
जिससे अग्नि उत्पन्न होती, बनती है ऊर्जस्वित।।

तथा ही संकल्प द्वारा आत्मशक्ति होती केन्द्रित।
जिससे होता जीव समर्थवान्, महान् कार्य होता सर्जित।। (3)

इसीसे विपरीत विकल्प से, आत्मशक्ति होती क्षीण।
जीव बनता असमर्थ महान् काम न होता सर्जित।।

सत्य समता महान् लक्ष्य से, संकल्प होता सर्जित।
इससे विपरीत कारण से, विकल्प होता सर्जित।। (4)

तीर्थंकर बुद्ध महान् जन, संकल्प से होते सहित।
इसीसे विपरीत क्षुद्र जन, विकल्प से होते सहित।।

सफलता मिलती संकल्प से, विफलता मिलती विकल्प से।
संकल्पित होकर 'कनकनन्दी' दूर रहता है विकल्पों से।। (5)

प्रगति आश्रम, दिनांक 16.05.2013, मध्याह्न 2.56

''ईर्ष्या एवं कृतघ्नता त्याग से होता गुणग्रहण''

(राग : सायोनारा..., तुम दिल की धड़कन...)

ईर्ष्या भाव सदा त्यजनीय...गुण ग्रहण करणीय।

कृतघ्न भाव वर्जनीय...प्रत्युपकार करणीय।।ध्रु.।। (1)

ईर्ष्यालु न करे गुण ग्रहण...गुणविहीन न पूजनीय।
गुणविहीन न महनीय...महनीय ही वन्दनीय।। (2)

अज्ञ न करे गुण ग्रहण...वह न जाने श्रेयाश्रेय।
उल्लू को न होता सूर्यज्ञान...अन्ध को न होता दृश्यज्ञान।। (3)

दम्भी होता है अज्ञ जन...अष्ट मद से होता पूर्ण।
मद से होता अन्ध सम...देख न पाता गुणगण।। (4)

कुंठाग्रस्थ होता दम्भी अज्ञ...पात्रता से होता वह शून्य।
अपात्र को न मिले ज्ञान...अज्ञानी को न मिले गुण।। (5)

गुणविहीन न होता नम्र...अनम्र को न मिले प्रेम।
जिससे वह बने दीन-हीन...उपेक्षित व दिशाहीन।। (6)

ईर्ष्या से द्वेष होता उत्पन्न...जिससे होता विष उत्पन्न।
अशान्त भाव होते उत्पन्न...अस्वस्थ होते तन और मन।। (7)

गुण स्वीकार करणीय...कृतज्ञ भाव वरणीय।
प्रत्युपकार करणीय...ईर्ष्या-घृणा त्यजनीय।। (8)

प्रमोदभाव करणीय...गुणज्ञ भाव वरणीय।
श्रेष्ठ आदर्श/(व्यक्तित्व) वरणीय...पूज्य स्थान प्राप्यनीय।। (9)

पूजा प्रार्थना या वन्दन...प्रशंसा स्तुति अभिनन्दन।
कृतज्ञ भाव गुणग्रहण...पर्यायवाची ये शब्द समान।। (10)

विकास के ये सूत्र महान्...आध्यात्मिक व मनोविज्ञान।
महान् जनों के महान् गुण...'कनक' करे सदा ग्रहण।। (11)

(यह कविता डॉ. अजय के कारण बनी।)
हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 15.06.2013, रात्रि 11.07

मानव की आत्मकथा

(दानव से भगवान् बनने तक की यात्रा)

(राग : आत्मशक्ति..., मैं हूँ तम्बाखू...)

मैं हूँ मानव सबसे निराला, सबसे निराला मेरा काम।
दानव से महामानव तक, तथाहि भगवान् बनने का काम।। (1)

दानव समान भी मेरा काम, सप्त व्यसन अष्ट मद सह।
पंच पाप चारों कषाय युत, कट्टर धर्मान्ध भी सह।। (2)

अन्याय अत्याचार शोषण, भ्रष्टाचार व आतंकवाद।
मिलावट व बलात्कार, युद्ध महायुद्ध मिथ्यावाद।। (3)

दान दया परोपकार सहित, अन्याय अत्याचार रहित।
पंचाणुव्रत पालन युक्त, सप्त व्यसन अष्टमद रहित।। (4)

यह मेरा मानवीय रूप, शोषण भ्रष्टाचार रहित।
मैत्री प्रमोद कृपा साम्य सहित, आतंकवाद क्रूरता-रिक्त।। (5)

महामानव मेरा रूप है, पंच महाव्रत समिति युक्त।
उत्तम दश धर्म सहित ज्ञान वैराग्य शुचिता युक्त।। (6)

ध्यानी ज्ञानी साधु श्रमण, स्व-पर कल्याण सहित रूप।
सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि रहित, आत्म-विशुद्ध लक्ष्य स्वरूप।। (7)

मेरा ही भगवत् स्वरूप है, समस्त राग-द्वेष रहित।
अनन्त ज्ञान दर्शन सुख व अनन्त वीर्य गुण सहित।। (8)

मैं ही शुद्ध-बुद्ध बनता हूँ, सच्चिदानन्द मेरा स्वरूप।
अक्षय अविनाशी सत्य रूप हूँ, अव्याबाध अमृत रूप।। (9)

आत्मिक गुणों के विकास से, मैं ही बनता हूँ महामानव।
भगवान् भी मैं ही बनता हूँ, विकसित होकर महामानव।। (10)

आत्मिक गुणों के पतन से, मानव से बनता हूँ दानव।
मैं ही इसके कर्त्ता-भोक्ता, अन्य निमित्त होते सम्भव।। (11)

अतएव मैं स्वयं का विकास/(उद्धार) स्वयं के द्वारा अभी करूँगा।
'कनकगुरु' के आह्वान को साकार करके मैं रहूँगा।। (12)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 02.07.2013, मध्याह्न 2.42

राष्ट्रभक्ति-स्वतन्त्रता तथा त्याग के प्रतीक : भामाशाह

(राग : आत्मशक्ति से ओतप्रोत..., शायद मेरी...)

राष्ट्रभक्ति व त्याग के प्रतीक हुए हैं भामाशाह।
राणा प्रताप के विश्वास पात्र हुए हैं भामाशाह।।

शान-मान अभिमान के प्रतीक हुए हैं भामाशाह।
स्वार्थ त्याग व अर्थदान के प्रतीक हैं भामाशाह।।

आपके अनुज ताराचन्द भी आपके अनुगामी हुए।
मातृभूमि की स्वतन्त्रता हेतु सर्वस्व न्यौछावर किये।।

भारमल के सुपुत्र आप हो, प्रताप के हो प्रधान।
अमरसिंह के आप भी प्रधान, देश के हो स्वाभिमान।।

राष्ट्रहित हेतु आपने दिया है, विपुल है धनराशि।
पच्चीस लाख रुपये तथा, बीस हजार है अशर्फि।।

पच्चीस हजार सैनिक योग्य बारह वर्ष की व्यवस्था।
इसी राशि से हुई हैं आपूर्ति देश की हुई सुरक्षा।।

अभी क्या हुआ देशवासियों को छोड़ रहे (हैं) अपनी संस्कृति।
छोड़ रहे हैं राष्ट्रभक्ति, सेवादान की प्रवृत्ति।।

बन रहे हैं राष्ट्रद्रोही, करके भ्रष्टाचार व चोरी।
बन रहे हैं स्वार्थी नकलची, ढोंगी फैशनी-व्यसनी।।

कर रहे हैं मिलावट बलात्कार, धोखाधड़ी व बेईमानी।
जिससे भारतमाता बन रही, दीन-हीन व भिखारिनी।।

अभी तो जागो! महान् सपूतों, करो हे! सत्पुरुषार्थ।
भूतगौरव व हुतगौरव को, प्राप्त हेतु कर पुरुषार्थ।।

इसी हेतु भी कनकनन्दी, आह्वान करता बारम्बार।
उठो! जागो! प्राप्त करो, तुम्हारा आत्मिक अधिकार।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 28.06.2013, अपराह्न 6.10

''श्रेणिक से मुझे प्राप्त शिक्षाएँ''

(राग : रघुपति राघव..., है अपना दिल तो...)

श्रेणिक से मुझे शिक्षा मिलती है...दुर्गुण सुगुण से शिक्षा मिलती है।
कुदृष्टि अवस्था से शिक्षा मिलती...सुदृष्टि अवस्था से शिक्षा मिलती।।

मिथ्यात्व अवस्था में जब था राजा...जैन-साधुओं को देता था सजा।
चेलना का उपदेश नहीं माना था...उपसर्ग साधु पर भी करता था।। (1)

इसीसे मुझे यह शिक्षा मिलती...मोही से माध्यस्थ की शिक्षा मिलती।
उनको उपदेश नहीं देना है...नवकोटि से मुझे दूर रहना है।।

चेलना ने उपसर्ग जब दूर किया...चेलना के साथ श्रेणिक नमन किया।
दोनों को साधु आशीर्वाद देते हैं...जिससे श्रेणिक पश्चाताप करते हैं।। (2)

जिससे नरक आयु कम हो गई...सप्तम से प्रथम की आयु हो गई।
तैंतीस (33) सागर घटकर कम हो गया...चौरासी हजार मात्र वर्ष रह गया।।

पश्चाताप करने की (मुझे) शिक्षा मिलती...दोष सुधारने की शिक्षा मिलती।
दोष न करने की शिक्षा मिलती...सावधान होने की शिक्षा मिलती।। (3)

वह जब वीर का सुभक्त बना...तीर्थंकर प्रकृति का बन्धन किया।
अनेक प्रश्न सन्मति को पूछा...सम्यग्दृष्टि भी बना वह पक्का।।

शंका समाधान की शिक्षा मिलती...आत्मविकास की शिक्षा मिलती।
पतित से पावन की शिक्षा मिलती...'कनक' को मोक्ष की भावना होती।। (4)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 26.06.2013, रात्रि 11.12

"अभावित भाऊँ भावित न भाऊँ"

(मेरा लक्ष्य साधना एवं सिद्धि)

(राग : दिन-रात मेरे स्वामी...)

दिन-रात मेरे स्वामी नित भावना मैं भाऊँ,
भावित नहीं मैं भाऊँ अभावित आत्म भाऊँ।

श्रुत परिचित अनुभूत कर्मों को न मैं भाऊँ/(ध्याऊँ),
अपरिचित शुद्ध आत्मा को नित मैं ध्याऊँ।।ध्रु.।।

काम-भोग-बन्ध कथा अनादि से मैं भाया,
सच्चिदानन्द आत्म स्वरूप को न भाया।

अतएव काम भोग बन्ध सुलभ होते,
सच्चिदानन्द आत्म लाभ दुर्लभ होते।। (1)

अनात्म भावना से अनादि से मैं दुःखी,
आत्मा की भावना से बन रहा हूँ सुखी।

सुख की प्राप्ति हेतु आत्मा को ही मैं ध्याऊँ,
दुःख की प्राप्ति हेतु अनात्मा मैं न ध्याऊँ।। (2)

परनिन्दा-चिन्ता त्याग आत्मा को मैं ध्याऊँ,
पर सम्बन्धी संक्लेश/(तनाव) त्याग के आत्म ध्याऊँ।

पर-सुधार के पहले करूँ मैं निज सुधार,
पर-उपदेश पूर्व करूँ (मैं) निज उद्धार।। (3)

बाह्य प्रभावना पूर्व करूँ मैं स्व-प्रभावना,
जड़-निर्माण रहित निज-निर्माण भावना।

धन-जन-मान की मैं नहीं करूँ कामना,
सत्य-साम्य-शान्ति की मैं सदा करूँ भावना।। (4)

अनादिकाल से मैं जो न कर पाया हूँ,
आत्मशुद्धि का काम अभी मैं कर रहा हूँ।

अनन्त जीव जो काम नहीं कर पा रहे हैं,
वे काम मेरे द्वारा अभी तो हो रहे हैं।। (5)

अतएव धन्य हूँ मैं धन्य है मेरे काम,
धन्य आपके गुण/(मार्ग) धन्य आपके धर्म।

लोक से विपरीत आपके गुण-धर्म,
'कनक' का परम लक्ष्य आपके गुण-धर्म।। (6)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 22.06.2013, रात्रि 11.40

''कर्म सापेक्ष एवं निरपेक्ष से स्व-चिन्तन''

(राग : तुम दिल की धड़कन...)

मैं हूँ शुद्ध-बुद्ध सिद्ध स्वरूप...सच्चिदानन्दमय अमूर्त रूप।
स्वकृत दोषों से बना अशुद्ध...अज्ञानी संसारी मूर्तिक रूप।।ध्रु.।।

योगों से कर्मों को (मैं) आस्रव किया...कषायों से कर्मों को बन्धन किया।
तीव्र मन्द ज्ञात अज्ञात भाव से...आस्रव बन्ध में संयुक्त किया।।

प्रदोष निह्नव मात्सर्य विघ्न से...आसादना तथा उपघात से।
ज्ञान दर्शन में जो दोष लगाया...जिससे अज्ञानी अदर्शी बना।। (1)

स्व-पर (में) दुःख शोक ताप से...आक्रन्दन वध परिवेदना से।

असातावेदनीय का आस्रव किया...जिससे विविध दुःखों को पाया।।

केवली श्रुत संघ धर्म देव का...आस्रव किया मैंने दर्शनमोह का।
कषाय जन्य तीव्र परिणामों से...आबद्ध हुआ हूँ मैं चारित्रमोह से।। (2)

बहु आरम्भ व परिग्रह से...स्वयं को बांधा मैं नरक आयु से।
अल्प आरम्भ व परिग्रह से...स्व को बांधा मैं मनुष्य आयु से।।

माया से तिर्यंच आयु को बांधा...सराग संयम से देवायु बांधा।
परनिन्दा व आत्मप्रशंसा से...स्वयं को बांधा मैं नीच गोत्र से।। (3)

दान-लाभ-भोग-उपभोग में...विघ्न किया जो वीर्य काम में।
जिससे अन्तराय कर्म को बांधा...अभी कर्मों से बनूँ निर्बन्धा।।

स्वकृत दोषों को त्याग रहा हूँ...शुद्ध स्वरूप को भज रहा हूँ।
शक्ति अनुसार ध्या रहा हूँ...'कनक' निज रूप पा रहा हूँ।। (4)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 23.06.2013, मध्याह्न 3.27

अनुपम एवं अतुलनीय है मेरा स्वरूप

(राग : रघुपति राघव...)

अनुपम है मेरा शुद्ध स्वरूप, लौकिक उपमा से रहित रूप।
अतुलनीय मेरा निज स्वरूप, संसारातीत अनन्त रूप।। (1)

सांसारिक उपलब्धि है सीमित, संख्यात-असंख्यात सीमित।
अक्षय अनन्त मेरा स्वरूप, सर्वज्ञ गम्य अनुपम रूप।। (2)

अनन्त ज्ञान व दर्शन रूप, अनन्त सुख व वीर्य स्वरूप।
अव्याबाध व सूक्ष्मत्व रूप, अगुरुलघु अवगाहन रूप।। (3)

जो त्रिकालवर्ती देव मानव, जो सुख-वैभव होना सम्भव।

उससे भी अनन्त मेरा वैभव/(सुख)/(उससे परे स्व-सुख वैभव),
कैसी तुलना होना सम्भव।। (4)

अणु की उपमा यथा ब्रह्माण्ड से, बिन्दु की उपमा यथा सिन्धु से।
यथाहि उचित नहीं होता है, तथाहि मेरा नहीं लौकिक से है।। (5)

अक्षय अनन्त ही मेरा ज्ञानगुण, जो ब्रह्माण्ड से भी है महान्।
छहों द्रव्यों के परिणाम से, अधिक होता है परिणाम।। (6)

समस्त ब्रह्माण्ड मेरे ज्ञान में, लीन होता है अंश मात्र में।
समुद्र समान है मेरा सुख, संसारी से अनन्त सुख।। (7)

इंच से माप न होता आकाश, आकाश सम ही होता आकाश।
मेरी उपमा मुझसे ही होती, सिद्ध की तुलना सिद्ध से होती।। (8)

अनुपम हूँ मैं अतुलनीय हूँ, स्वयं से जात हूँ स्वयंभू मैं हूँ।
स्व-अनुभवगम्य सदा हूँ, सच्चिदानन्द स्वरूप हूँ।। (9)

'कनकनन्दी' न मेरा नाम है, तन-मन अक्ष से परे रूप है।
अक्षय अनन्त गुणगण हूँ, परमानन्द चैतन्यमय हूँ।। (10)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 16.06.2013, रात्रि 11.04

"स्वात्म वैभव स्मरण"

(राग : दिल है छोटा सा...)

देखो! देखो! देखो! स्वात्मा को देखो! स्वात्मा के अनन्त वैभव देखो।
फेंको! फेंको! फेंको! अनात्मा फेंको! राग-द्वेष-मोह विभाव फेंको!।।ध्रु.।।

भोगो! भोगो! भोगो! स्वात्मा को भोगो! अनन्त आत्मिक सुख को भोगो!
त्यागो! त्यागो! त्यागो! अनात्मा त्यागो! अनन्त दुःखों के हेतु को त्यागो!

स्वात्मा के समान (है) न अन्य वैभव, राजा-महाराजा इन्द्र चक्री वैभव।
अतुलनीय है उपमातीत/(आत्मिक सुख), अक्षय अनन्त है मोक्ष के सुख।।(1)

आत्मा में है अनन्त गुण, अनन्त ज्ञान वीर्य विश्वास।
अस्तित्व वस्तुत्व प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व अव्याबाधत्व।।

अजर अमर हूँ मैं अमृत तत्त्व, ध्यान ध्येय ज्ञान ज्ञाता स्वरूप।
कर्त्ता कारण हूँ मैं भोक्ता स्वरूप, भेदाभेदयुक्त व अभेद रूप।। (2)

लोक व्यवहार वर्जित स्वरूप, असि-मसि-कृषि-वाणिज्य रिक्त।
न्याय राजनीति संविधान रिक्त, छोटा-बड़ा भेदभाव से रहित।।

तन-मन-अक्ष से रहित रूप, द्रव्य-भाव-नोकर्म से रहित रूप।
उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य सहित, 'कनक' चाहे आत्म सुख सतत।। (3)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 17.06.2013, रात्रि 2.55

अनुभवजन्य आत्मरस पान

(राग : पायोजी मैंने..., आत्मशक्ति से....)

पायोजी मैंने अनुभव रतन धन पायो...2

जिस रतन को चक्री न पायो...देवेन्द्र भी तरसायो।

विद्वान् कवि पाठक लेखक, उपदेशक भी न पायो।। पायोजी...

इन्द्रिय अतीत है वचन अगोचर, अनुभव स्वाद मैं पायो।। पायोजी...

आत्मविश्वास व समता निस्पृहता, धैर्य का फल मैं पायो।। पायोजी...

उदार सहिष्णुता पावन वात्सल्य, परोपकार रस मैं पीयो।। पायोजी...

सनम्र सत्यग्राही सरल सहंजता, मृदुता का सुख मैं पायो।। पायोजी...

क्षमा निर्भयता संयम स्वाध्याय, शोध-बोध-ज्योति पायो।। पायोजी...

भेदभाव शून्य सुमन सम्पूर्ण, व्यवहार शक्ति मैं पायो।। पायोजी...

सर्वज्ञ प्रणीत जिनवाणी से मैं, विश्व रहस्य को पायो।। पायोजी...

विश्व के सारभूत स्व-आत्म तत्त्व का, ज्ञान-भान मैं कियो।। पायोजी...

स्वात्म तत्त्व की प्राप्ति के हेतु, रत्नत्रय मैं पायो।। पायोजी...

उसी के लिए मैं सतत प्रयत्नशील, अहोभाग्य मेरे आयो।। पायोजी...

अतः धन्य हूँ मैं धन्य मेरा लक्ष्य, धन्य सुयोग जो पायो।। पायोजी...

'कनकनन्दी' तो इसीमें ही मग्न, जिसे धनपति न पायो।। पायोजी...

अतएव मुझे अन्य न सुहाये, ख्याति पूजा लाभ जो होय।। पायोजी...

आत्मानन्द रस पान के अतिरिक्त, अन्य रस विरस होय।। पायोजी...

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 24.06.2013, रात्रि 10.42

नमो आत्मानन्द

आनन्दं आनन्दं नमो ज्ञान-आनन्दम्। आनन्दं आनन्दं नमो आत्म-आनन्दम्।।

आनन्दं आनन्दं नमो निज-आनन्दम्। आनन्दं आनन्दं नमो शुद्ध-आनन्दम्।।

आनन्दं आनन्दं नमो श्रेष्ठ-आनन्दम्। आनन्दं आनन्दं नमो परम-आनन्दम्।।

आनन्द ही निज शुद्ध-बुद्ध स्वरूपम्। आनन्द ही मेरा/(मम) परम स्वरूपम्।।

आनन्द के लिए आनन्द के द्वारा। समस्त धर्म-कर्म आनन्द हेतुक।।

आनन्द है राग-द्वेष का वर्जनम्। आनन्द है मोह-माया विसर्जनम्।।

आनन्द है ज्ञान अर्जन शुभकर्म। आनन्द है निज आत्म का चिन्तनम्।।

आनन्द है निज आत्म का दर्शनम्। आनन्द है निज आत्मा में रमणम्।।

सच्चिदानन्द है निजात्म स्वरूपम्। 'कनकनन्दी' का स्व-शुद्ध स्वरूपम्।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 29.06.2013, मध्याह्न 2.22

''प्रभु से मेरी प्रार्थना''

(मेरा लक्ष्य व साधना)

(राग : दिन-रात मेरे स्वामी)

दिन-रात मेरे प्रभु !/(सत्य साम्य शान्ति हेतु),
नित भावना मैं भाऊँ, राग-द्वेष मोह त्याग करना सदा मैं चाहूँ।

हर जीव प्रति 'मैत्री भाव' सदा मैं चाहूँ,
मोह भाव नहीं चाहूँ 'वात्सल्य' (मैं) सदा चाहूँ।।ध्रु.।।

गुणी प्रति 'प्रमोद' नित भावना मैं चाहूँ,
'सुगुण' ग्रहण करूँ 'दुर्गुण' को न गहूँ/(चाहूँ)।

दुःखी जीव प्रति मैं 'कृपा' भाव सदा रखूँ,
दुःख दूर हेतु चाहूँ संक्लेश नहीं करूँ।। (1)

विपरीत जीव प्रति 'माध्यस्थ' भाव रखूँ,
शिक्षा ग्रहण करूँ 'विकृत' नहीं बनूँ।

मैं 'भेदज्ञानी' बनूँ 'भेदभाव' नहीं करूँ,
'संतोष' भाव धरूँ 'विकास' सदा करूँ।। (2)

'उदार भाव' धरूँ 'अनुशासित' मैं बनूँ,
'अहिंसा भाव' धरूँ 'कायर' नहीं मैं बनूँ।

'क्षमा' का भाव धरूँ भीरू कभी न बनूँ,
'मृदुता' का भाव धरूँ 'दृढ़ता' नहीं मैं त्यागूँ।। (3)

'सरल' सदा बनूँ 'विवेक' नहीं त्यागूँ,
'सत्यग्राही' मैं बनूँ 'निष्ठुरता' भी त्यागूँ।

'पवित्र' सदा बनूँ 'घृणाभाव' को मैं त्यागूँ,
'संयम' भाव धरूँ 'संकीर्णता' को त्यागूँ।। (4)

'तपस्या' सदा करूँ 'निर्दय' नहीं मैं बनूँ,
'त्याग' का भाव धरूँ 'दंभी' मैं नहीं बनूँ।

'आकिंचन्य' मैं बनूँ 'दीन-हीन' न बनूँ,
'ब्रह्मचर्य' में रहूँ 'विश्वप्रेमी' मैं बनूँ।। (5)

'आध्यात्मिक' मैं बनूँ 'धर्मान्ध' नहीं बनूँ,
'अनेकान्त' को मानूँ 'मतलबी' न मैं बनूँ।

'सत्य समता' चाहूँ 'आत्मिक शान्ति' चाहूँ,
'साधना' सदा करूँ 'परम साध्य' चाहूँ।। (6)

'प्रभावना' मैं चाहूँ 'प्रभावित' न करूँ,
'जनहित' मैं चाहूँ भीड़ से दूर रहूँ।

'प्रगतिशील' बनूँ 'नकलची' न बनूँ,
'आधुनिक' मैं बनूँ 'आध्यात्म' नहीं त्यागूँ।। (7)

'मोक्षमार्ग' में चलूँ 'ख्याति पूजा' न चाहूँ,
'आत्मसिद्धि' मैं चाहूँ 'प्रसिद्धि' नहीं चाहूँ।

आपके आदर्श को सदा मैं प्राप्त करूँ,
'कनक' सदा निज आत्मा को शुद्ध करूँ।। (8)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 22.06.2013, मध्याह्न 3.37 तथा 5.12

दूसरों के कारण मैं पापी क्यों बनूँ?

(राग : छोटी-छोटी गैया...)

अन्य के कारण राग-द्वेष क्यों (मैं) करूँ? अन्य के कारण मैं पापी क्यों बनूँ?
पापी/(अन्य) से प्रभावित क्यों मैं बनूँ? पापी से संचालित क्यों मैं बनूँ?।।ध्रु.।।

राग-द्वेष-मोह यदि करूँ पर से, पाप कर्मबन्ध करूँ स्वयं में।
पाप का फल दुःख क्यों मैं भोगूँ? अन्य के कारण मैं दुःख क्यों भोगूँ?

सर्व जीवों में 'मैत्री भाव' करूँ हूँ, गुणी से 'प्रमोद भाव' करूँ हूँ।
दुःखी जीवों में 'कृपा भाव' करूँ हूँ, पापी जीवों में 'साम्य भाव' करूँ हूँ।। (1)

उपेक्षा-अपेक्षा-प्रतीक्षा न करूँ, सबसे शिक्षा/(सहयोग) ले आगे ही बढ़ूँ।
'स्व-पर-विश्वहित' मैं सदा चाहूँ, आध्यात्मिक विकास सदा मैं चाहूँ।।

'सत्य-समता-शान्ति' सदा मैं चाहूँ, 'अविचल निर्द्वन्द्व' सदा मैं रहूँ।
'ख्याति-पूजा-लाभ' से दूर मैं रहूँ, 'पवित्र भावना' सदा मैं भाऊँ।। (2)

'अपना-पराया' भेद-भाव न करूँ, 'धनी-गरीबों' में भेद न करूँ।
'संकीर्ण-स्वार्थ' का भाव न धरूँ, 'परमार्थ का भाव' सदा मैं धरूँ।।

दूसरों का उपकार कभी न भूलूँ, दूसरों का अपकार कभी न करूँ।
शुद्धभाव हेतु शुभ मैं करूँ, निर्बन्ध हेतु मैं प्रयत्न करूँ।। (3)

आगम-अनुभव सहित चलूँ, लौकिक बन्धनों में कभी न पड़ूँ।
'उत्सर्ग-अपवाद सहित' चलूँ, 'निश्चय-व्यवहार सहित' चलूँ।।

अंतरंग तप हेतु बाह्य मैं करूँ, दिखावा आडम्बर काम न करूँ।
साध्य के अनुकूल साधना करूँ, 'हेय-उपादेय ज्ञान' मैं करूँ।। (4)

ध्यान-ध्याता-ध्येय ज्ञान मैं करूँ, उपादान-निमित्त सहित करूँ।
स्व केन्द्रित ही सभी मैं करूँ, 'स्व-उपलब्धि' ही परम करूँ।।

'आदहिदं कादव्वं' सर्वथा करूँ, 'परहित भावना' सदा मैं करूँ।
'उत्तमस्वात्मचिन्ता' सदा मैं करूँ, 'कनक' अनात्म चिन्ता न करूँ।। (5)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 21.06.2013, मध्याह्न 3.25

धूप स्नान से लाभ

(चाल : सायोनारा..., रघुपति..., यमुना किनारे...)

प्रातःकाल निद्रा त्याग किया ही करो, प्रातः भ्रमण भी किया ही करो।
धूप स्नान भी सदा किया भी करो, हैल्दी-वैल्दी वाइज बना भी करो।। (स्थायी)

धूप स्नान से बहुत लाभ होते हैं, शरीर में विटामिन डी बनता है।
हड्डी मजबूत होती मधुमेह न होता, बच्चों को रिकेट्स रोग नहीं होता।। (1)

रोग प्रतिरोधी/(इम्युनिटी) बढ़ती टी.बी. न होता, श्वॉस नली सम्बन्धी रोग न होता।
दाँतों की समस्याएँ दूर रहती, हड्डी की भंगुरता नहीं रहती।। (2)

दमा रोग चर्म रोग नहीं होते हैं, भ्रमण सम्बन्धी लाभ भी होते हैं।
दैनिकचर्या भी सुचारु होती है, प्रकृति की संगति से खुशी होती है।। (3)

शुद्ध प्राणवायु भी प्रातःकाल मिलती, दिनभर ताजगी स्फूर्ति रहती।
पक्षियों के संगीत का लाभ मिलता, 'कनक' का अनुभव ज्ञान बढ़ता/(मिलता)।।(4)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 20.06.2013, मध्याह्न 2.47

''आत्म तत्त्व के दीवाने-आचार्य कनकनन्दी''

-आर्यिका सुनीतिमती

(राग : चाँद-सितारे फूल और खुशबू...)

सारी दुनियाँ ख्याति-पूजा और सत्ता की दीवानी है।
पर आचार्य कनकनन्दी जी आत्मगुणों के दीवाने हैं।।ध्रु.।।

है विषयों में उलझे सब जन, तो कैसे निर्मल होवे मन
धन-सम्पत्ति जिनका जीवन, कैसे मिले उन्हें आत्मधन...हूँ-हूँ...हो-हो...

सारी दुनियाँ धन-सम्पत्ति मणिमुक्ता की दीवानी है।
पर आचार्य कनकनन्दी जी आत्मवैभव के दीवाने हैं।। (1)

कषाय में सब फँसे हुए हैं, तृष्णा से न तृप्त मन।
रिश्ते-नाते अपने समझे, स्वार्थ में ही खोया मन।।

सारी दुनियाँ करती कषाय लालच की दीवानी है।
पर आचार्य कनकनन्दी जी आत्मस्वभाव के दीवाने हैं।। (2)

दर्पण सम-स्वच्छ मन, जिसमें झलके हैं पावन भाव।
समझ से परे सब जन के, इनके भाव और व्यवहार।।

सारी दुनियाँ भौतिक स्वार्थ और पैसों की दीवानी है।
पर आचार्य कनकनन्दी जी आत्मस्वार्थ के दीवाने हैं।। (3)

भेदभाव करते ही नहीं, साम्य भाव धरते हर पल।
रत्नत्रय के सकल गुणों से, ओतप्रोत इनका जीवन।।

सारी दुनियाँ कूट-कपट और अनीति की दीवानी है।
पर आचार्य कनकनन्दी जी न्याय-नीति के दीवाने हैं।। (4)

गुरु हैं ये तो स्व-पर के, बनना चाहते हैं स्वयम्भू।
अष्ट कर्म नाश करके, बनना चाहे आत्मगुरु।।

मन ये मेरा गुरु गुण गाये 'सुनीति' तो दीवानी है।
और आचार्य कनकनन्दी जी आत्मतत्त्व के दीवाने हैं।। (5)

उदयपुर, सेक्टर-11, दिनांक 26.06.2013, प्रातः 7.30

"आत्म गुरु की कश्ती में-
बैठे कनकगुरु मस्ती में"

(राग : प्यार की कश्ती...)

आत्मा की मस्ती में हो...निज की बस्ती में हो
रहते पास-पास में...मोक्ष की आस-पास में विभाव से दूर...ल ल ला ऽऽऽ...।।ध्रु.।।

मोक्ष में सुख मिलेगा...वहाँ क्या ज्ञान मिलेगा।
जिसे आप ढूँढ़ रहे हो...क्या वो आनन्द मिलेगा।।

इन्द्र का सुख यहाँ है...पद चक्रेश यहाँ है।
कनक रजत यहाँ है...सारे वैभव यहाँ है।।

मैंने पूछा...सुख कहाँ, जाना वहाँ...मिले कहाँ क्यों रहते जगत् से दूर...।। (1)

ज्ञान इतना क्यों करते...ध्यान इतना क्यों करते।
संसार भोगों से क्यों...मन को रिक्त हैं रखते।।

त्यागे हैं सारे रिश्ते...दिशायें जिनके अम्बर।
शुभ भावों में रमते...शुद्ध की चाह करते।।

हमें कहो...कैसे रहें, दुर्गुणों से...दूर हम पाये सुख भरपूर...।। (2)

'सुवत्सल' ये हैं कहती...मुझको इतना सिखा दो।
'सुनिधि' को मैं पाऊँ...'सुनीति' पे ही चलकर।।

'सुवीक्ष' दृष्टि हो मेरी...'सुविज्ञ' बोधि हो मेरी।
पथ 'आध्यात्म' चलकर...मिटे भ्रमण की फेरी।।

'सोहन दादा'...पूछे तुम्हें, तुम जैसे...मिले कैसे 'कनक गुरु' के गुण...।। (3)

उदयपुर, सेक्टर-11, दिनांक 26.06.2013, संध्या 6.00

''आचार्यश्री कनकनन्दी जी का आध्यात्मिक व्यक्तित्व''

-आर्यिका सुनीतिमती

(राग : वो लड़की बहुत याद...)

मौन ध्यान में रहते...आत्म उपलब्धि पाते...
समता भाव ही करते हैं...
निज गुण को ध्याते...सारे पाप नशाते
स्वयं को ही समझातें हैं...ये गुरुवर स्वयं में रहते हैं।।ध्रु.।।

मूलाचार की चर्या से...जीवों की रक्षा करते हैं।
समयसार के सार को...आत्मसात् करते हैं।।

इनकी जीवन यात्रा में...दोषों का कोई स्थान नहीं।
पवित्र इनके हृदय में...पाप का कोई नाम नहीं।।
कितनी विशुद्धि रखते हैं...ये गुरुवर स्वयं में रहते हैं।। (1)

वीरसेन स्वामी सी शैली...इनकी शिक्षा रीति की।
अकलंक स्वामी सा स्वाभिमान...इनके जीवन जीने में।।
गणित इतिहास भूगोल का...न्याय मनोविज्ञान का।
स्वप्न शकुन कानून का...धर्म दर्शन विज्ञान का।।
कितना ज्ञान कराते हैं...ये गुरुवर स्वयं में रहते हैं...।। (2)

पहले सबको पढ़ाते हैं...बाद में परीक्षा लेते हैं।
उत्तर के ना मिलने पर...करुणा से डाँट लगाते हैं।।
डाँट इनकी जो खाता...वो तो आगे ही बढ़ता।
ज्ञान पूर्ण पा जाता...पवित्र भाव ही वरता।।
कितने अनुभव बताते हैं...ये गुरुवर स्वयं में रहते हैं।। (3)

सृजन प्रतिभा का उपयोग...गद्य-पद्यमय करते हैं।
तत्त्वज्ञान का सारा-सार...इसमें ही सब भरते हैं।।
अनेकान्त हैं जीवन में...स्याद्वाद हैं वाणी में।
भेदभाव नहीं करते हैं...सबसे प्रेम रखते हैं।।
कितना समन्वय करते हैं...ये गुरुवर स्वयं में रहते हैं।। (4)

'कुन्थुगुरु' से धर दीक्षा...नाम 'कनकनन्दी' पाया।
संघ के अध्यापन से ही...उपाध्याय सूरी पद पाया।।
सूर्य चन्दा ये तारे...पुष्प सुगन्धी हैं प्यारे।
गुणगान तेरा गाते हैं...तुमको शीश नवाते हैं।।
कितना ये हर्षाते हैं...ये गुरुवर स्वयं में रहते हैं।। (5)

समवशरण तेरा सुन्दर हो...बारह सभायें अन्दर हो।
अहो भाग्य से पद गणधर...पा जाये सब 'सुनीति' जन।।

माना की मजबूरी है...चौथे काल से दूरी है।
फिर भी भावों में इनके...मोक्ष से ना दूरी है।।
परम लक्ष्य रखते हैं...ये गुरुवर स्वयं में रहते हैं।। (6)

उदयपुर, सेक्टर-11, दिनांक 16.06.2013, प्रातः 6.30

महान् बालक गण

(राग : आओ बच्चों तुम्हें दिखाये...)

आओ बच्चों तुम्हें सुनाऊँ, सुगाथा बालक गणों की।
जिसे सुनकर तुम भी बनो, उनके समान महान् भी।। (1)

बाल्यकाल है आदर्श काल, शिक्षा संस्कार लक्ष्य के।
इसी काल में तन-मन अक्ष होते हैं निर्माण योग्य के।। (2)

आठ वर्ष व अन्तर्मुहूर्त में, तीर्थंकर बन सकते हैं।
इतने काल में साधु बनकर, आचार्य उपाध्याय बनते हैं।। (3)

इतने काल में सम्यक्त्वी बनकर, आहार दान भी दे सकते हैं।
पूजा-आराधना स्वाध्याय करके, श्रेष्ठ बालक बनते हैं।। (4)

भद्रबाहु स्वामी जिनसेन स्वामी, बालकाल में साधु बने।
शकुन्तला पुत्र वीर भरत भी, सिंह के साथ खेल खेले।। (5)

शंकराचार्य भी आठवें वर्ष में, चारों वेद का ज्ञानी बने।
बारहवें वर्ष में सर्व शास्त्र पढ़े, सोलहवें वर्ष में भाष्य लिखे।। (6)

गुरु नानक भी नवमें वर्ष में, आध्यात्मिक प्रेमी बने।
ज्ञानेश्वर भी सोलहवें वर्ष में, ज्ञानेश्वरी लेखन किये।। (7)

स्वामी दयानन्द सरस्वती भी, चौदहवें वर्ष में विरक्त हुए।
चौदहवें वर्ष में वीर शिवाजी भी, राज्य शासन प्रारम्भ किये।। (8)

विवेकानन्द भी अल्प आयु में, विदेशों/(धर्मसंसद) में भाषण दिये।
खुदीराम बोस भगतसिंह व, चन्द्रशेखर क्रान्तिवीर हुए।। (9)

चौदहवें वर्ष में सावरकर भी, क्रान्तिकारी वीर बने।
दसवें वर्ष में लेखक बनकर, आजादी हेतु कार्य किये।। (10)

सुभाषचन्द्र भी बाल्यकाल से, बुद्धिमान व वीर बने।
स्वतन्त्रता हेतु देश-विदेशों में, आजाद हिन्द फौज गढ़े।। (11)

वीर अभिमन्यु बालकाल से ही, वीर साहसी योद्धा बने।
चक्रव्यूह की भेदन विद्या भी, माता के गर्भ में ही पढ़े।। (12)

बाल्यकाल की मेरी भावना भी, फलीभूत हो रही हैं।
तुम भी बालक महान् बनो, 'कनक' की शुभकामनाएँ हैं।। (13)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 07.07.2013, रात्रि 12.40

''हिटलर की आत्मकथा-व्यथा-शिक्षा''

(राग : जीना यहाँ मरना यहाँ..., पूछा मेरा क्या..., होठों पे सच्चाई...)

हिटलर मेरा नाम है...हिंसा करना काम है।
श्रेष्ठता के बहाने...युद्ध करना काम है।।ध्रु.।।

मैं हूँ जर्मन का तानाशाह...नाजी मेरी पार्टी है।
विश्वयुद्ध द्वितीय में...थर्राया यह पृथ्वी है।।

धरती में शासन हेतु...तथा यहूदी विनाश हेतु।
विश्व युद्ध किया मैंने...जर्मनी को श्रेष्ठ बताने हेतु।। (1)

यहूदी प्रति अत्यन्त घृणा...फैलाया मैंने पृथ्वी पर।
पाँच करोड़ पचास लाख...मारा मानव धरती पर।।

गैस-चैंबर में मारा मैंने...लाखों निर्दोष यहूदी को।
भूखा-प्यासा रखा लाखों को...गोली खिलाया (उन्हीं) लोगों को।। (2)

शाकाहार खाना खाया...विवाह न किया जीवन भर।
खून बहाया निर्दोषों का...विधवा किया करोडों नर।।

खाना खाने में (भी) डरता रहा...विष मिश्रण शंका से।
सोलह युवतियों के चखने पर...खाना खाता था डर से।। (3)

डर व शंका कारणों से...शादी न की जीवन भर।
निर्दोषों को मारने हेतु...लड़ता रहा जीवन भर।।

मित्र सेना व रूस से मेरी...पराजय हुई भारी।
देश निष्कासन दण्ड द्वारा...मेरा अपमान हुआ भारी।। (4)

ईर्ष्या-घृणा (व) अहंकार से...जीवन भर रहा दुःखी।
पराजय व अपमान से...रहा मैं बहुत दुःखी।।

प्रेमिका सह इसलिये मैं...आत्महत्या करके मरा।
साइनाईड गोली सहित...पिस्तौल की गोली से मरा।। (5)

मृत्यु के बाद अभी भी सभी...घृणा करते हैं अतिभारी।
जर्मनी से रूस तक मेरा...अपमान अतिभारी।।

मुझसे शिक्षा लो मानव...करो न घृणा युद्ध हत्या।
दया सेवा परोपकार करो...जीवन में सदा सर्वदा।। (6)

जीवन भर न शान्ति मिली...मृत्यु पर शान्ति न मिली।
मानव को शिक्षा देने हेतु...'कनकनन्दी' जीवनी लिखी।। (7)

(यह कविता श्रमण सुविज्ञसागर जी की भावना से बनी।)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 06.07.2013, रात्रि 11.45

अधम धर्म के नाम पर अधर्म ही करता

(राग : छोटी-छोटी गैया...)

अधम धर्म नहीं जानता, धर्म में भी अधर्म करता।
धर्म से धन-मान चाहता, भोग-उपभोग-नाम चाहता।।

अन्य धर्मी से घृणा करता, शत्रु मानकर कष्ट भी देता।
बलि चढ़ाकर धर्म मानता, धार्मिक होने के दंभ करता।।

रीति-रिवाज को ही धर्म मानता, देखादेखी ही धर्म करता।
सत्य-तथ्य को नहीं जानता/(मानता), समता-शान्ति से रिक्त होता।।

साक्षात् धर्म नहीं जानता, प्रतीकमय धर्म करता।
पर्व-उत्सव में ही धर्म करता, धर्म स्थल में ही धर्म मानता।।

ढोंग-दिखावा खूब करता, आत्मा को पावन नहीं करता।
बाह्य में भगवान् को खोजता, आत्मा में प्रभु को नहीं देखता।।

भीड़ में ही धर्म-कर्म करता, आत्मा का ध्यान नहीं करता।
धन से धर्म का मूल्य करता, शुचि-भाव को न धर्म जानता।।

अन्ध श्रद्धा से धर्म करता, आत्मविश्वास नहीं करता।
सत्यज्ञान को नहीं करता, परमार्थ को नहीं मानता/(जानता)।।

निज-पर को दुःख भी देता, संक्लेशमय धर्म करता।
धर्म तो सत्य समतामय है, अहिंसा शान्ति शुचितामय है।।

दया-दान प्रेम-सेवा है, सरल-सहज व क्षमा है।
आत्म का ज्ञान व ध्यान है, परमात्मामय बनना है।।

सत्य व शिव सुन्दर है, 'कनकनन्दी' के अन्दर है।।

परसाद, दिनांक 01.04.2013, रात्रि 5.03

मोक्ष मार्ग के बाधादि

(राग : छोटी-छोटी गैया....)

मोक्ष प्राप्ति हेतु मुझे बहुत जाना है, अविराम गति से ही मुझे चलना है।
मध्य के बाधा-विघ्न मुझे लांघना है, आकर्षण-विकर्षण मुझे त्यागना है।।

क्रोध-मान-माया व लोभ व कामादि, मोक्ष के गमन में बाधक होते हैं।
उपसर्ग परीषह बहु विघ्न होते हैं, तन-मन को जो दुर्बल करते हैं।।

ख्याति पूजा लाभ आकर्षण होते हैं, भक्त शिष्य भीड़ तथाहि होते हैं।
इसी से विपरीत विकर्षण होते हैं, दोनों के मध्य में द्वन्द्व युद्ध होता है।।

द्रव्य क्षेत्र काल भाव के अनुसार, उत्सर्ग-अपवाद न्याय के अनुसार।
संक्लेश रहित शक्ति के अनुसार, अंतरंग गति को मैं बढ़ाऊँ निरन्तर।।

प्रतिस्पर्द्धा देखादेखी दबाव प्रलोभन, बाधा विघ्न व आकर्षण-विकर्षण।
समता शान्ति व आत्मविशुद्धि से, लांघकर 'कनक' मोक्ष माऊँ शीघ्र से।।

परसाद, दिनांक 02.04.2013, मध्याह्न 1.35

''स्वाधीनता से स्वरूपोपलब्धि''

(राग : तुम दिल की धड़कन..., है अपना दिल तो...)

अन्य को मनाया अनन्तबार...स्वयं को अभी मनाऊँ मैं।
अन्य को देखा अनन्तबार...स्वयं को अभी देखूँगा मैं।।

अन्य को चाहा अनन्तबार...स्वयं को अभी चाहूँगा मैं।
अन्य को सोचा अनन्तबार...स्वयं को सोचूँगा अभी मैं।। (1)

अन्य को कहा अनन्तबार...स्वयं को अभी कहूँगां मैं।
अन्य को भोगा अनन्तबार...स्वयं को अभी भोगूँगा मैं।।

अन्य को ध्याया अनन्तबार...स्वयं को अभी ध्याऊँगा मैं।
अन्य को पाया अनन्तबार...स्वयं को अभी पाऊँगा मैं।। (2)

अन्य की सेवा दास करता...स्वयं की सेवा करूँगा मैं।
स्वयं का उद्धार करके मैं...स्वयं का प्रभु बनूँगा मैं।।

अन्य की सफाई धोबी करता...स्वयं को शुचि करूँगा मैं।
स्वयं को पावन करने से...स्वयं को सुखी करूँगा मैं।। (3)

अन्य का भार गधा ढोता...स्वयं का कर्त्तव्य करूँगा मैं।
स्वावलम्बन से साधना करके...स्वतंत्रता को पाऊँगा मैं।।

मेरे ही द्वारा (ही) मुझमें ही...मुझे ही प्राप्त करूँगा मैं।
मैं ही मैं रह जाऊँगा...'कनक' ज्ञानानन्द बनूँगा मैं।। (4)

हिरणंमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 07.07.2013, रात्रि 11.07

मानव के अंगों का सदुपयोग एवं दुरुपयोग

(राग : आत्मशक्ति..., रघुपति राघव...)

मानव तन मिला उत्तम है, करलो काम महान् है।
नहीं तो होगा अनर्थ काम, जिससे होगा पतन है।।

सिर है सबसे उत्तम अंग, जिसमें बड़ा दिमाग है।
पाँचों इन्द्रियों के निवास स्थान, करना सदुपयोग है।।

आँखों से प्रभु का दर्शन करना, करना स्वाध्याय ग्रंथों का।
जीवों की रक्षा करना देखकर, नहीं देखना हैं बुरी नजर।।

कानों की शोभा शास्त्र श्रवण, नहीं सुनना कुकथा है।
कानों में अलंकार लगाना, नहीं कानों का उपयोग है।।

हित-मित-प्रिय बोलना सदा, सदुपयोग है जिह्वा का।
कठोर अश्लील मिथ्या कहना, दुरुपयोग है जिह्वा का।।

स्वाद की लालसा से अभक्ष्य खाना, अण्डा-मांस मछली भी।
बीड़ी-सिगरेट तम्बाखू सेवन, मद्य गुटखा भांग भी।।

स्पर्श इन्द्रिय से देह की रक्षा, करना सदुपयोग है।
कामभोग व अश्लील फैशन, करना दुरुपयोग है।।

नासिका द्वारा श्वास लेना, इसका सदुपयोग है।
प्राणिज गन्ध सेवन करना, इसका दुरुपयोग है।।

सबसे बड़ा दिमाग पृथ्वी में, मानव का ही होता है।
हिताहित विचार करना, इसका सदुपयोग है।।

गलत सोचना गलत निर्णय, दिमाग खराब करना।
तनाव करना दिमाग फेरना, दुरुपयोग दिमाग का।।

सेवा करना व दान देना, सदुपयोग है हाथों का।
परोपकार व अच्छा काम, महान् काम है हाथों का।।

गलत काम व मारपीट, चोरी डकैत मिलावट।
अपहरण व हत्या शोषण, दुरुपयोग है हाथों का।।

न्याय उपार्जित भोजन करना, शुद्ध शाकाहार सात्विक।
जीवन रक्षा का साधना हेतु, सदुपयोग है पेट का।।

अन्याय अर्जित भोजन करना, अभक्ष्य भक्षण करना।
शरीर बल से कुकृत्य करना, दुरुपयोग है पेट का।।

धर्म कार्य व अच्छे कार्य हेतु, स्वास्थ्य सम्पादन निमित्त।
सदुपयोग से विकास होता, दुरुपयोग से पतन।।

हिताहित विवेक करने हेतु, 'कनक' किया कथन।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 07.07.2013, मध्याह्न 3.45

कब ये मानव महान् होगा?

(कवि की दृष्टि में महामानव)

(राग : झिलमिल सितारों का...)

कब ये मानव महान् होगा...राग-द्वेष-मोह त्याग करेगा।
उदार उन्नत भाव धरेगा...ईर्ष्या-तृष्णा काम-त्याग करेगा।।ध्रु.।।

संकीर्ण कट्टर धर्म छोड़ेगा...पावन सहिष्णु धर्म पालेगा।
सत्य अहिंसा का भाव धरेगा...अन्य धर्मों से घृणा न करेगा।।

भेदभाव भी नहीं करेगा...युद्ध आतंकवाद नहीं करेगा।
तथाहि सत्ता-सम्पत्ति हेतु...ऐसा काम न कभी करेगा।।

सरल-सहज से महान् होगा...सत्ता-सम्पत्ति न पैमाना होगा।
दया-दान से श्रेष्ठ बनेगा...सेवा करके स्वामी बनेगा।।

लघु बनकर प्रभु बनेगा...अहंकार को क्षुद्र मानेगा।
हर जीव से मैत्री करेगा...गुणी से प्रमोद भाव धरेगा।।

परमार्थ हेतु स्वार्थ त्यागेगा...स्व-पर हित हेतु काम करेगा।
अनर्थ कार्यों को त्याग करेगा...सदुपयोगी सदा बनेगा।।

अहं त्यागकर सोऽहं बनेगा...आत्मा का पतन नहीं करेगा।
आदर्श पहले स्वयं बनेगा...आचार से उपदेश करेगा।।

अन्य को सुख दे सुखी बनेगा...अन्य के दुःखों को दूर करेगा।
विश्वकल्याण का भाव धरेगा...शक्ति अनुसार काम करेगा।।

अहं-दीनभाव त्याग करेगा...स्वाभिमानी सोऽहंभावी बनेगा।
श्रेष्ठ बनकर श्रेय पायेगा...महानता से गौरव पायेगा।।

सर्वोदय से ज्येष्ठ बनेगा...आत्मशुद्धि से धर्मी बनेगा।
स्वयं का परिचय स्वयं बनेगा...धन-जन बल काम न लेगा
/(परिचय न धन-जन बनेगा)।।

आत्मशक्ति से शक्तिशाली बनेगा...सिद्ध बनकर प्रसिद्ध होगा।
आत्मसुख से सम्पन्न होगा...'कनक' का भाव सफल होगा।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक 08.07.2013, रात्रि 12.17
('बुद्ध के आँगन में आतंक' से द्रवित होकर यह कविता बनी)

भारत सरकार भी भारत के नाम के बारे में नहीं जानती है!

-आचार्यश्री कनकनन्दी

परम पूज्य महान् इतिहासविज्ञ वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ द्वारा दैनिक स्वाध्याय सभा में उदयपुर से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र 'प्रातःकाल' के कॉलम "Right to Information" में छपी जानकारी जिसका शीर्षक है ''सरकार को नहीं पता-भारत के क्यों इतने नाम'' पढ़कर आचार्यश्री ने उपस्थित श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि यदि प्रधानमंत्री कार्यालय अथवा गृह मंत्रालय जो कि भारत राष्ट्र की संप्रभुता का प्रतीक है, उसे ही यदि अपने राष्ट्र भारत का सम्यक् इतिहास बोध यानी भारत के विविध नाम क्यों-कैसे-कबसे आदि विषयों की सामान्य जानकारी भी नहीं है तो हम सामान्य नागरिक प्रजाजनों से क्या अपेक्षा कर सकते हैं कि उन्हें अपने राष्ट्र की प्राचीन गौरवशाली परम्परा-इतिहास आदि का बोध कैसे होगा अर्थात् वर्तमान भारत के पिछड़ेपन का एक बहुत बड़ा कारण है। भारतीयों को अपने देश की प्राचीन

ज्ञान-विज्ञान-कला-संस्कृति व इतिहास का सम्यक् बोध न होना जिसके कारण आज भारत एक दीन-हीन-भ्रष्ट-हिंसक-परमुखापेक्षी राष्ट्र बना हुआ है।

उपरोक्त विषयों का ज्ञान व जानकारी समग्र व व्यापक रूप से करनी है तो आचार्यश्री लिखित कुछ कृतियाँ सरकार से लेकर सामान्य जनों के लिए उपयोगी व सम्यक् दिशाबोध कराने में सहायक होगी। ये कृतियाँ है-1. ''विश्व इतिहास'' 2. ''भारत की अंतरंग खोज'' 3. ''आर्य कौन कहाँ के व कब से'' 4. ''ऋषभ पुत्र भरत से भारत'' 5. ''युग निर्माता ऋषभदेव'' आदि शोधपूर्ण साहित्यिक कृतियों का अध्ययन कर अपनी जिज्ञासा व समस्या का समाधान करने में यह पुस्तकें सहायक होगी। अतः आरटीआई से भी विनम्र निवेदन है कि वे आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव से प्रत्यक्ष दर्शन लाभ प्राप्त कर अपनी समस्या का समाधान प्राप्त कर सकते हैं जिसके लिए आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त संस्थान से सम्पर्क कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र-
धर्म-दर्शन सेवा संस्थान
सचिव-डॉ. नारायणलाल जी कछारा
55, रवीन्द्र नगर, उदयपुर (राज.)
मोबाईल-921460622

आध्यात्मिक एवं सेवा का संगम सम्बन्धी संगोष्ठी

फिलोसफी एण्ड साइंस स्टडी सेन्टर, विज्ञान समिति, उदयपुर तथा आचार्यश्री कनकनन्दी जी द्वारा आशीर्वाद प्राप्त धर्म-दर्शन सेवा संस्थान के वैज्ञानिक प्रोफेसर्स शिष्यों.कार्यकर्त्ताओं के द्वारा एवं आचार्यश्री ससंघ सान्निध्य एवं आशीर्वाद से आयोजित आध्यात्मिक एवं सेवा सम्बन्धी संगोष्ठी हिरणमगरी,

सेक्टर-11 में स्थित आदिनाथ भवन के सभागार में सम्पन्न हुई। सभा में प्रास्तावित डॉ. नारायणलाल जी कछारा ने प्रस्तुत करते हुए आगन्तुक व्याख्याताओं का परिचय कराया।

उदयपुर के पूर्व डीन डॉ. ओमकार सिंह राठौर ने आगम-निगम ग्रंथों में आध्यात्म व विज्ञान पर अपने विचार रखते हुए कहा कि जैन धर्म की खोज अनूठी वैज्ञानिक है, यह धर्म फारवर्ड व साइन्टिफिक है। हल्दीघाटी से पधारे माँगीलाल जी मादरेचा ने उपस्थित सर्व समुदायजनों को हल्दीघाटी में आयोजित चातुर्मास में आने हेतु आमंत्रण दिया। सिस्टर डेमियन जो कि आशाधाम की फाउण्डर हैं, ने अपने संस्थान में चल रहे सेवा कार्यों की जानकारी दी। यह संस्थान सेवा तीर्थ का स्वरूप प्राप्त करता जा रहा है। इस संस्थान के लिए संघस्थ ब्रह्मचारी सोहनलाल जी देवड़ा ने 11,000/- रु. का चेक प्रदान किया। एनीमल एड अनलिमिटेड के फाउण्डर मिस्टर जिम ने मूक पशुओं की सेवा का वृत्तांत प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् आचार्यश्री ने जिम से प्रश्न किया कि अमेरिका व भारत की संस्कृति में क्या समानता और असमानता है व आपको पशुओं से इतना प्यार क्यों है? तदनन्तर गुरुदेव ने कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किये। मुम्बई से पधारे समाजसेवी जैनमित्र शैलेन्द्र घीया जिन्होंने आशाधाम के लिए वृहत् सहयोग भी प्रदान किया है। आपने कहा कि भारतीय ज्ञान-विज्ञान व सेवा के माध्यम से हम अमेरिका को अपना बना सकते हैं। क्रिश्चियन जैनों का संयुक्त प्रकल्प बनाने हेतु अपना मानस दर्शाया। कछारा जी ने उदयपुर में एक शोध केन्द्र प्रस्तावित होने की सूचना प्रदान की।

गुरुदेव ने सभी सेवा-सुरक्षा-जीवदया मानव सेवा करने वाले उदार जनों को स्वरचित साहित्य व शुभकामनाओं सह शुभाशीर्वाद प्रदान किया। अंत में

सभी के प्रति कृतज्ञता का भाव कृतज्ञोस्मि-उच्चारित किया गया। आदिनाथ दिगम्बर जैन चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा इस कार्यक्रम की अच्छी व्यवस्था की गई। तदर्थ शुभाकांक्षा-

प्रस्तुति-मुनि सुविज्ञसागर, संघस्थ
आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव

आचार्यश्री के वैज्ञानिक शिष्यों द्वारा विदेश से आये शोध छात्रों को मोटिवेशन

परम पूज्य आध्यात्मिक संत प्रवर वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के सुयोग्य वैज्ञानिक शिष्य द्वारा श्री डॉ. नारायणलाल कछारा व डॉ. पारसमल अग्रवाल द्वारा भारत की राजधानी दिल्ली में अमेरिका आदि देशों से धर्म-दर्शन-विज्ञान का प्रबोधन प्राप्त करने पधारे शोध विद्यार्थियों को 90 मिनट के चार व्याख्यानों के माध्यम से डॉ. कछारा ने मैटर-पुद्गल आदि विषयों पर प्रकाश डाला एवं डॉ. अग्रवाल के 4 व्याख्यान 1. कर्म थ्योरी 2. आस्रव-बंध-संवर-निर्जरा तत्त्व 3. आत्मा (अरिहन्त, सिद्ध, तीर्थंकर, जिन, गुणस्थान आदि) 4. समयसार की 12 गाथांओं आदि विषयों से छात्रों को बोध कराया। डॉ. अग्रवाल ने बताया कि अमेरिकन छात्रों के प्रश्न बहुत ही अद्भुत जिज्ञासापूर्ण रहे, जिसका समाधान डॉ. अग्रवाल ने सुयोग्य पद्धति से प्रस्तुत किया। आपने अपना अनुभव बताया कि अमेरिकन लोगों में विनम्रता-जिज्ञासा-आध्यात्मिक रुचि-ईमानदारी-प्रामाणिकता आदि श्रेष्ठ गुणों से मैं बहुत अभिभूत हुआ हूँ।

अमेरिका की ओक्लाओमा यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर रह चुके डॉ. अग्रवाल ने बताया कि वहाँ मात्र 8 लाईन की साहित्य चोरी के लिए एक लेखक को कड़े दण्ड व अनुशासनात्मक कार्यवाही का सामना करना पड़ा, जो कि हम भारतीयों

के लिए शिक्षाप्रद प्रसंग है। उपस्थित छात्रों ने भी कार्यशाला में आयोजित भोजनादि में विशेष आनन्द प्राप्त किया यानी सूर्यास्त पूर्व ही सभी का भोजन होता था। उपरोक्त सभी संस्मरण डॉ. अग्रवाल ने आचार्यश्री के स्वाध्याय के दौरान बताये, स्वाध्याय समाप्ति के अनन्तर वर्धमान सागर हाल में आयोजित आरोग्य शिविर को सम्बोधित करते हुए आचार्यश्री ने उपस्थित डॉक्टर व उपचाररत जनों को सेवा व प्रायोगिक अहिंसा का महत्व समझाते हुए सबको स्वरचित काव्यात्मक फोल्डर शुभाशीर्वाद सह प्रदान किये, जिसे प्राप्त कर सभी हर्षित हुए।

डॉ. कछारा ने सूचना दी कि भारत व अमेरिका ने मिलकर "International Society for Jain Study" नामक संस्था बनाई है जिसका उद्देश्य विदेशियों में सामान्य शैक्षणिक से लेकर विश्वविद्यालयीन छात्रों को जैन धर्म का परिचय व ज्ञान हों सकें। कछारा जी ने अपना थ्योरीकल व प्रैक्टिकल अनुभव बंताते हुए कहा कि सभी स्तर के प्रतिभागी आये थे जो कुछ Ph.D. कर रहे है एवं कुछ कर चुके हैं।

अनुमोदना सहमुनि सुविज्ञसागर, संघस्थ

भौतिक विज्ञानियों के चेतन विज्ञान की ओर बढ़ते कदम

परम पूज्य ब्रह्माण्डीय ज्ञान-विज्ञान शोधक आध्यात्मिक दृष्टि सम्पन्न वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव जो कि उदयपुर नगर के हिरणमगरी, सेक्टर-11 स्थित आदिनाथ भवन में विराजित हैं, दैनिक ज्ञान-विज्ञान-स्वाध्याय के प्रातःकालीन सत्र में गुरुदेव के वैज्ञानिक शिष्य डॉ. नारायणलाल कच्छारा ने आचार्य श्रीसंघ की उपस्थिति में Biocentric Universe (From Greek : Bioc, "life", and KEVTPON, Kentron, "Center") की रिपोर्ट का

आलेख प्रस्तुत किया जो कि Robert Lanza, American doctor of medicine की है। आप लिखते हैं कि ब्रह्माण्ड की समस्त भौतिक गतिविधियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण जीवन की चेतनता है। It asserts that current theories of the physical world do not work, and can never be made to work, until they fully account for life and consciousness.

उपस्थित श्रोताओं को आचार्यश्री ने सम्बोधित करते हुए कहा कि यह एक बहुत अच्छी वैज्ञानिक शुरुआत है, अपनी अब तक की एकांगी भौतिक उपलब्धियों से हटकर वैज्ञानिक चेतना के शोध-बोध में लग रहे हैं, यह एक आध्यात्मिक क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त करेगा जिससे आध्यात्म व विज्ञान का समन्वयपूर्ण युग प्रारम्भ होगा जो विश्व शान्ति के लिए अत्यन्त श्लाघनीय, अनुमोदनीय व स्वागत योग्य प्रयास है। इस अवसर पर आचार्यश्री ने ''द्रव्य संग्रह'' ग्रन्थ की प्रारम्भ की 3 गाथाएँ जो कि चेतन जीव की सिद्धि के लिए है। उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त बोधप्रद-अभिप्रेरक महत्वपूर्ण आधुनिक विज्ञान से भी आगे का विषय प्रतिपादन इन गाथाओं की गुरुदेव रचित टीका ''विश्व द्रव्य विज्ञान'' के माध्यम से आचार्यश्री अपने संघस्थ साधु-साध्वी, वैज्ञानिक आदि शिष्यों को सुबोध शैली से अध्यापन करा रहे हैं। इस सभा में वैज्ञानिक डॉ. पारसमल जी अग्रवाल व पूर्व डीन व शोध-निर्देशक प्रो. श्यामलाल जी गोदावत ने भी अपने बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किये।

उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सह-

श्रमण मुनि सुविज्ञसागर,
संघस्थ आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव

जैन एकता व चेतना विज्ञान का मंगलाचरण

मेवाड़ की ऐतिहासिक नगरी उदयपुर में विराजित प्रगतिशील चेतना की साकार मूर्ति विश्वकल्याणकारी संत प्रवर आचार्य देव श्री कनकनन्दी जी गुरुवर ससंघ की समन्वयकारी वैश्विक शान्ति की भावना को निरन्तर अनुकूल व प्रोत्साहनकारी सम्बल प्राप्त होता जा रहा है जिसके अंतर्गत आज बहुत ही शुभ शकुन-सूचनाएँ प्राप्त हुईं, प्रातःकालीन स्वाध्याय में आचार्यश्री के वैज्ञानिक शिष्य डॉ. नारायणलाल जी कच्छारा ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि अमेरिकन डॉक्टर ऑफ मेडिसिन ''रॉबर्ट लाञ्झा'' के बायोसेंट्रिक यूनिवर्स के अनुसार चेतना (Conciousness) विज्ञान जिससे अब तक के भौतिक विज्ञानी अनभिज्ञ व वञ्चित थे, उन्होंने अब चेतना विज्ञान के शोध-बोध की ओर अपने कदम बढ़ाकर, एक नवीन आध्यात्मिक क्रान्ति का सूत्रपात कर दिया है।

माध्याह्निक सभा में बालोतरा से उदयपुर पधारे श्वेताम्बर तेरापंथ (आ. महाप्रज्ञ के शिष्य) साधुवृन्द मुनि पृथ्वीराज जी (गुरुदेव कनकनन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिष्य डॉ. सोहनराज जी तातेड़ के गृहस्थ भ्राता) मुनि रवीन्द्र कुमार जी, मुनि शान्तिप्रिय जी व राष्ट्रसंत गणेश मुनिजी के शिष्य मुनिश्री जिनेन्द्रजी (स्थानकवासी) ससंघ पधारे। सभी साधु-वृन्दों ने अपने-अपने सुविचार धर्म-दर्शन-विज्ञान व जैन एकता के सम्बन्ध में प्रस्तुत किये।

पश्चात् आचार्यश्री ने अपने अत्यन्त आत्मीय अनुमोदन से उपस्थित साधुवृन्दों के प्रति प्रमोद भाव प्रगट करते हुए कहा-

दो मिले चार खिले बीस रहे कर जोर।
सज्जन से सज्जन मिले सात करोड़ पुलकित होय।।

आपके विचारों को सुनकर में प्रसन्न व अभिभूत हूँ व आपकी मंगलकामना मेरे लिए शान्तिप्रद है एवं जैन एकता के इतिहास का मंगलाचरण आज की इस परिषद् के माध्यम से प्रारम्भ हुआ। उपस्थित श्रावकों को सम्बोधित करते हुए कहा-सब जैनों को संगठित होना है। मध्याह्न ''जीता'' संगठन के कार्यकर्त्ता व प्रसिद्ध डॉ. अवतार जैन महाराष्ट्र से अपने सहयोगियों सह पधारे व आगामी हल्दीघाटी के चातुर्मास में पधारकर श्रीसंघ के प्रति अपना सहयोग कर्त्तव्य करने की भावना व्यक्त की।

दूसरे दिन (02.07.2013) को श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक के उपाध्याय नरेन्द्र विजय, मुनि जिनेन्द्र विजय भी पधारे तथा वात्सल्य मिलन, प्रवचन हुए और आचार्य कनकनन्दी ने स्वरचित साहित्य उन्हें प्रदान किया।

मंगलकामना सह-
श्रमण मुनि सुविज्ञसागर, संघस्थ
आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुवर

हल्दीघाटी के म्यूजियम का अवलोकन करते हुए
आचार्य कनकनन्दी ससंघ तथा संस्थापक मोहनलाल श्रीमाली आदि

ज्ञानदानी

हिरणमगरी, सेक्टर-11, उदयपुर तथा मुनि सेवा समिति के ज्ञानदानी तथा अन्य ज्ञानदानी

1. भँवरलाल जी मादावत, सेक्टर-11
2. नाथूलाल जी खलुड़िया, सेक्टर-4
3. देवेन्द्र कुमार जी जावरिया, सेक्टर-11
4. भूपेन्द्र कुमार जी भोगावत, सेक्टर-11
5. इन्द्रमल जी टीमरुवा, सेक्टर-11
6. श्रीमती चञ्चल देवी ध.प. श्री लक्ष्मीलाल जी सिंघवी, सेक्टर-11
7. नरेन्द्र कुमार जी अखावत, सेक्टर-11
8. महावीर जी गाँधी व पुत्री डॉ. सीमा गाँधी, सेक्टर-11
9. श्रीमती सुलोचना, सेक्टर-11
10. नरेन्द्रपाल जी कोटडिया, सेक्टर-11
10. सञ्जय जी संगावत, सेक्टर-11

(गुरुभक्त दान श्री का सम्मान)

गुरुभक्त ''दान श्री'' मणिभद्र जैन का सम्मान करते हुए भँवरलाल जी मुण्डलिया (आदिनाथ मन्दिर ट्रस्ट से. 11, के अध्यक्ष, 2013)

(जिनाभिषेक)

जिनाभिषेक का एक दृश्य (आदिनाथ मन्दिर, हिरण मगरी, से. 11, उदयपुर, (राज.)

ग्रन्थ विमोचन

आचार्य कनकनन्दी द्वारा रचित ग्रन्थों का विमोचन का एक दृश्य। (अंहिसा भवन मुनि सुशील कुमार जी के आश्रम, दिल्ली)

(आचार्य कनकनन्दी के शिष्य आ. महाश्रमण के पास)

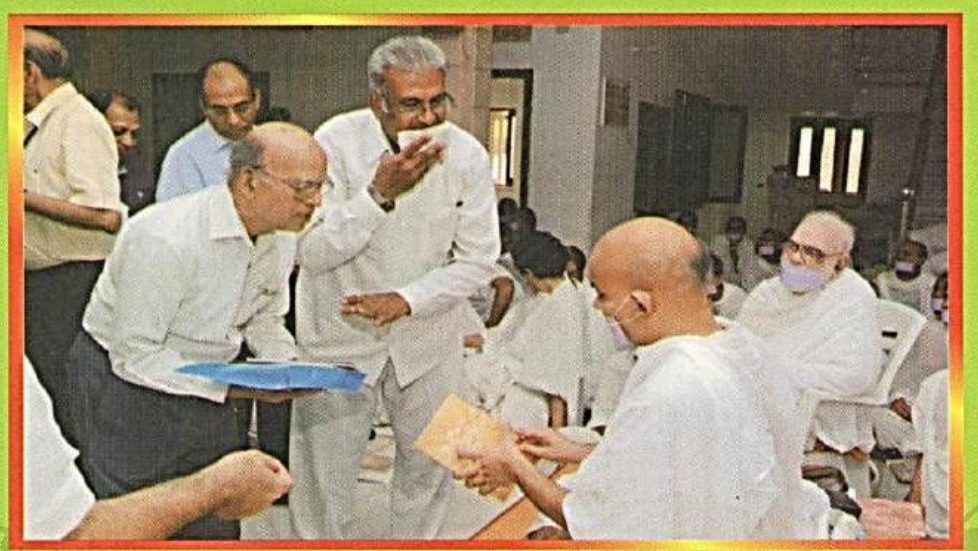

Prof. (Dr.) Sohan Raj with Dr. Narayanlal Kachhara for opening his autobiography by Acharyashri Mahashrman during conference form 22-24 October 2012 at Jasol (Rajasthan.)